₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

जून 2025

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

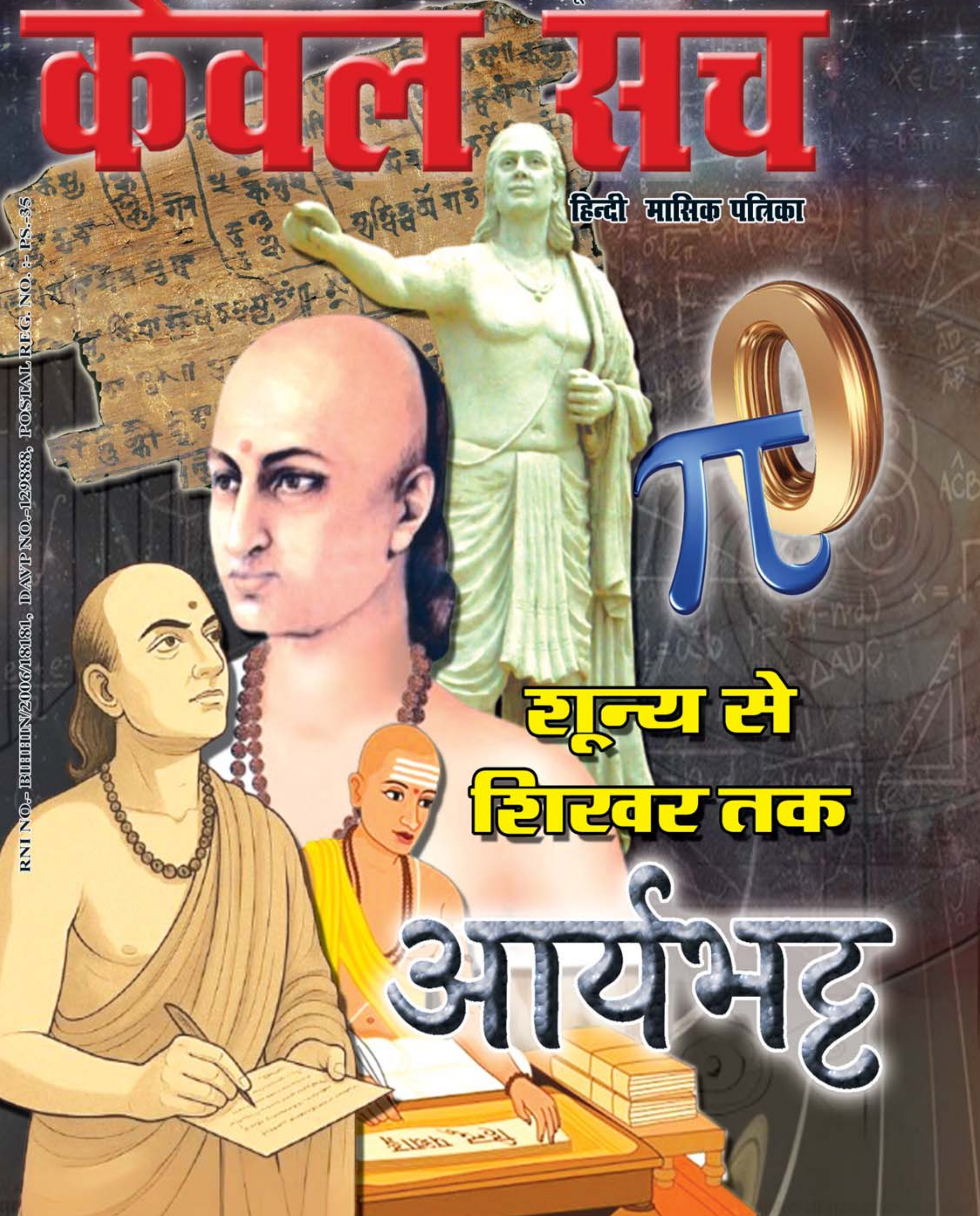

शून्य से शिखर तक

आर्यभट्ट

RNI NO.- BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PS.-35

कार्यालय नगर परिषद्, खगौल

Website :- https://nagarseva.bihar.gov.in/khagaul/citizenhome.html
E-mail :- nagarparishadkhagaul@gmail.com

नीतीश कुमार
माननीय मुख्यमंत्री, बिहार

स्वच्छ खगौल
सुन्दर खगौल

जीवेश मिश्रा
मंत्री, नगर विकास एवं
आवास विभाग, बिहार सरकार

केवल सच राष्ट्रीय पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष पर पत्रिका प्रबंधन, पाठक एवं खगौल की समस्त जनता को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

-: निवेदक :-

सुजीत कुमार

अध्यक्ष
कार्यालय नगर परिषद्
खगौल, पटना (बिहार)

1914 से विश्वास का प्रतीक
बिहार राज्य सहकारी बैंक लि०
रमेश चंद्र चौबे
चेयरमैन
बिहार राज्य सहकारी बैंक लि.
निम्नलिखित प्रकार के ऋण योजना
(1) Personal Loan (व्यक्तिगत ऋण)
(2) Consumer Loan (उपभोक्ता ऋण)
(3) Vehicle Loan (वाहन ऋण)
(4) Housing Loan (गृह ऋण)
(5) Overdraft Loan (ओवर ड्राफ्ट ऋण)
(6) Cash Credit (कैश क्रेडिट)
(7) Education Loan (शिक्षा ऋण)
(8) Gold Loan (गोल्ड ऋण)
(8) Loan Against LD/FD/RD/NSC/KVP
सावधि जमा/आवर्ती जमा/एन.एस.सी./किसान विकास पत्र
शाखा में निम्नलिखित सुविधाएँ उपलब्ध हैं :-
बचत खाता Saving Bank Account
आवर्ती जमा योजना Recurring Deposit Scheme
चालू खाता Current Account
दैनिक जमा योजना Daily Deposit Scheme
सावधि जमा योजना Fixed Deposit Scheme
बाल बचत योजना Baal Bachat Scheme
लक्ष्मी जमा योजना Laxmi Deposit Scheme
धन लक्ष्मी योजना Dhan Laxmi Scheme
अन्य आकर्षक सुविधाएँ :-
लॉकर (Locker) की सुविधा
Mobile Banking की सुविधा
QR Code की सुविधा
SMS के माध्यम से Transaction की जानकारी की सुविधा।
RTGS/NEFT की सुविधा
ATM की सुविधा
हमारी शाखाएँ :- बाँकीपुर, नया सचिवालय, न्यू मार्केट, मौर्यालोक, कंकड़बाग, नाला रोड, मुसल्लहपुर हाट, मोतिहारी, बीहट, दरभंगा, छपरा, सहरसा, मधेपुरा

बालमुकुन्द सुपर स्टील
सुपर स्टील अपनाएं, सुपर मकान बनाएं
Fe 600
सुप्रीम मज़बूती की गारंटी
ISI 1786
CONTACT FOR DEALERSHIP: 8709475535
TOLL FREE 1800 121 212121

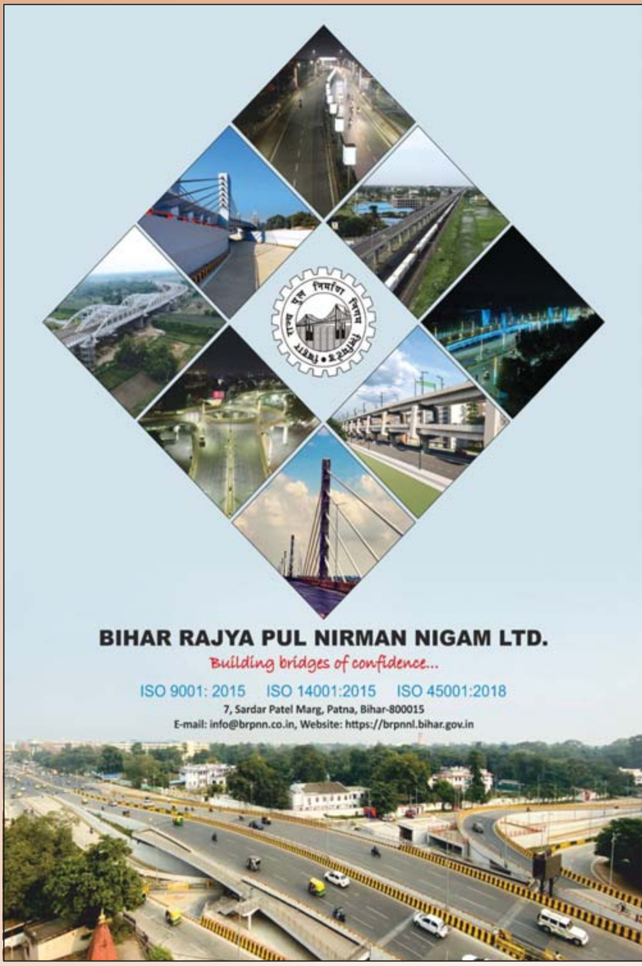
BIHAR RAJYA PUL NIRMAN NIGAM LTD.
Building bridges of confidence...
ISO 9001: 2015 ISO 14001:2015 ISO 45001:2018
7, Sardar Patel Marg, Patna, Bihar-800015
E-mail: info@brpnn.co.in, Website: https://brpnnl.bihar.gov.in

S.U. COLLEGE, HILSA (NALANDA)
(A Constituent Unit of Patliputra University, Patna)
(श्रीचंद उदासीन महाविद्यालय, हिलसा, नालंदा)
Emai: sucollegehilsa@gmail.com
Website: www.sucollegehilsa.ac.in
COURSES:-
U.G. (Regular)
B.A.
B.SC.
B.COM.
U.G. (Vocational)
B.C.A.
B.B.A.
B.Sc.-Biotechnology
B.L.I.S.
P.G. (Regular)
M.A.
M.SC.
N.S.S.
N.C.C.
FACILITY:-
Wi-Fi Campus
Computer Lab
ICT Lab
Smart Classroom
Science Lab
Auditorium
Gymnasium
CCTV Camera
Canteen
Parking
Playground
Central Library
E-Library
Library reading room
Career Councelling and Placement cell
Hostal
Website
प्रो. गजेन्द्र प्रसाद गदूकर
प्राचार्य

स्वामी सहजानन्द सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र
शकुराबाद, जहानाबाद
NCVT से मान्यता प्राप्त सहजानन्द शिक्षण चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा संचालित
-: हमारी विशेषताएँ :-
समृद्ध भवन में उच्च कोटि के वर्कशॉप की व्यवस्था एवं सुयोग्य प्रशिक्षको के द्वारा गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण की व्यवस्था।
मो०:- 9431263954
प्राचार्य
इलेक्ट्रीक एवं भी.टी.पी. में नामांकन प्रारंभ

Aff. No. : 330783
School No. : 50721
BRILLIANT PUBLIC HIGH SCHOOL
Affiliated To C.B.S.E. New Delhi
(RESIDENTIAL)
ESTD. - 2010
Upto XIIth
Add. : KANABIGHA, BELAGANJ, GAYA 804403
Mob. : 9661804180, 7739573027, 9955039840
E-mail : brilliantpublichighschool@gmail.com | www. brilliantpublichighschool.com

'केवल सच' हिंदी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
पत्रकारिता के क्षेत्र में सत्य, निष्पक्षता और जनहित की भावना को निरंतर प्रबल करने के लिए आपकी लेखनी और प्रयास सराहनीय है। आने वाले वर्षों में आपकी पत्रिका नई ऊंचाइयों को छुए और समाज को दिशा देने का कार्य करती रहे, यही मंगलकामना है।
-: निवेदक :-
सरिता देवी
उप मुख्य पार्षद
नगर पंचायत, एकंगरसराय, नालंदा
आवास :- छोटकी धावा एकंगरसराय नालंदा
मो० :- 7542801908

METHODIST HOSPITAL
"केवल सच" हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।
प्रताप सागर,
बक्सर-802101 (बिहार)
निवेदक :- डॉ0 आर.के. सिंह

"केवल सच" हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।
निवेदक :- विजय कुमार मिश्रा
बीडीओ, फुलवारीशरीफ (पटना)

R.K.P. VIYDYALAYA
AFFILIATED TO CBSE NEW DELHI UPTO 10+2
SAILENT FEATURES
Eco Friendly Environment.
E-Learning & Smart Classes.
Bus Facility with Affordable Fees.
Whole Campus under CCTV Surveillance.
Qualified Well trained & Caring Teacher's.
HOSTEL FACILITY
ADMISSION OPEN FOR 2025-26
Add.: Babhana Kataiya (Near Sai Mandir) Jehanabad.
Cont @ 843400102, 8294683698 Web.: www.rkpvjehanabad.in

शाही Swad Ka...
शाही Andaz...!
Sudha ICE-CREAM
GoldCone
Belgian Chocolate
Kesar Pista
सुधा सदा शुद्धता का
पटना डेयरी प्रोजेक्ट
हेल्पलाईन नं. :- 06204381026
फोन : 0612-2253316
E-mail : vpmu.mkt@gmail.com, vpmunin@gmail.com | Ph : 0612-2252553, 2252542
COMFED

0.....से शिखर

दार्शनिक मेगास्थनीज ने भारत देश के अवलौकित इतिहास को रेखांकित किया है और मगध साम्राज्य के बिहार के विजय गाथा को प्रमुखता से प्रकाशित किया है। आजादी के पूर्व और सभी युगों में बिहार की पहचान दुनिया के कोने-कोने में रही है। सत्ययुग, त्रेता, द्वापर के साथ कलियुग में भी कई धर्म के देवताओं ने भी बिहार पावन भूमि का चयन अपने जन्म के लिए किया है। आर्यभट्ट् का शून्य देने वाला बिहार, विश्व को लोकतंत्र भी दिया है। चाणक्य की राजनीति ने विश्व को सबसे मजबूत शासन प्रणाली दी है। भारत देश की विजयगाथा पर चर्चा करना दिए को दीपक दिखाने जैसा है। पिछले 75 वर्ष का इतिहास उठाकर सोचने पर भी देश जिस तेजी से आगे बढ़ रहा है और विश्व के विकसित देशों का विभिन्न क्षेत्रों में अपना लोहा मनवा रहा है। देश लगभग हजारों वर्ष की गुलामी के बाद भी आजादी के बाद अपनी पौराणिक व्यवस्था को दुरूस्त करने में शिखर तक पहुंचा है। बात ज्ञान की हो या विज्ञान की, योग की हो या मोक्ष की, धर्म की हो अध्यात्तम की भारत शून्य से शिखर पर पहुंचा है। शून्य का आविष्कार गणित में क्रांति ला दी है क्योंकि इसके आने से संख्याओं को लिखने और गणना करने की एक नई और सटीक प्रणाली बनी जिसकी वजह से गणना का कार्य सुगम हो गया। शून्य का उपयोग अब गणित, विज्ञान, और प्रौद्योगिकी सहित शायद ही कोई क्षेत्र होगा जहां गणना का कार्य में न किया जा रहा हो। इस शून्य (zero) का आविष्कार आर्यभट्ट ने किया और भारतीय लोगों का अभी भी मानना है कि शून्य की खोज भारतीय गणितज्ञ आर्यभट्ट ने की थी। उसके बाद ही यह दुनिया में प्रचलित हुई परन्तु अमेरिका के एक गणितज्ञ कहना है कि जीरो का खोज भारत में नहीं हुआ था बल्कि अमेरिकी गणितज्ञ आमिर एक्जेल ने सबसे पुराना शून्य कंबोडिया में खोजा है। भारतीय गणितज्ञों को पूर्णांक संस्करण, हिंदू-अरबी अंक प्रणाली विकसित करने का श्रेय दिया जाता है। कुसुमपुरा के आर्यभट्ट ने 5वीं शताब्दी में स्थान-मूल्य संकेतन विकसित किया और एक शताब्दी बाद ब्रह्मगुप्त ने शून्य के लिए प्रतीक पेश किया। शून्य का कितना महत्व है यह किसी छात्र या राजनेता से पूछने पर रूपष्ट तौर पर पता चल जायेगा कि शून्य उसके जीवन में क्या मायने रखता है। शून्य किसी के आगे लग जाये तो और पीछे लग जाये तो उसकी गरिमा का आंकलन कर सकते है। संचारक्रांति के युग में भी शून्य का अपना वजूद है और सेना के पास शून्य का अपना प्रभाव। बिहार प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है और आज उसकी छवि विश्व के पटल पर बनी है और बौद्ध एवं जैन धर्म की जननी की वजह से यहां पर्यटकों के साथ-साथ विकास की गति भी गति पकड़ चुकी है। आर्यभट् के नाम पर प्रदेश की सरकार ने विश्व विद्यालय बनाकर उनकी कृति को जिवंत किया है। 38 जिला वाला बिहार प्रदेश के सभी जिलों में बिहार की तरक्की देखने को मिल जायेगा। गुलामी की जंजीर में बंधा भारत आज विश्व के पटल पर विकसित देशों से मुकाबला कर रहा है। भारत देश ने विश्व को वह सबकुछ दिया है लेकिन कभी अपने नाम की ब्रांडिंग नहीं की जिसकी वजह से कई अविष्कार भारतीय द्वारा होने के बाद भी अंग्रेजों ने उसको अपना नाम करवा लिया है। शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र में भी वही हाल रहा है लेकिन शून्य ये शिखर तक की यात्रा तय करने वाले भारतीय आज विश्व के विभिन्न देशों में अपनी योग्यता, दक्षता, कर्मठता और त्याग-तपस्या के दम पर अपना लोहा मनवा रहे हैं। गुलामी में जीने वाले भारतीय कई राष्ट्र के प्रधान के पद पर काबिज हो चुके हैं, यही प्रमाण है शून्य से शिखर तक पहुंचने की। जातिवाद एवं धर्मवाद की राजनीति में फंसा भारत सेना पर भी सवाल उठाने लगा है लेकिन देश की सेना ने पुलवामा और पहलगांव की घटना के बाद सर्जिकल स्ट्राइक करके शून्य से शिखर तक कैसे राष्ट्र की सेवा की जा सकती है उसका उदाहरण पेश किया है। देश ने विश्व का शून्य दिया तथा अपनी गौरवमयी उपस्थिति से शिखर पर पहुंचने का हुनर भी दिया है।

'' विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की जननी बिहार ने विश्व को ज्ञान - विज्ञान, त्याग - तपस्या, योग - प्रेम, श्रम - बलिदान सहित धर्म - अध्यात्तम सब दिया है। शासन एवं राजनीति के पुरोधा भी इसी पावन धरा पर जन्मे और अपनी कृति से गौरवशाली इतिहास दिया है। शून्य के जनक आर्यभटट् भी इसी बिहार के लाल हैं। आजादी के बाद और राजनीति से प्रभावित बिहार भले ही आज रोजगार के मामले में सबसे पिछड़ा राज्य है लेकिन 1947 की आजादी के पूर्व के गौरवशाली इतिहास का लोहा भारत देश ही नहीं विश्व मानता है। मारीशस देश के शीर्ष पर बिहार का कब्जा है और यह शिक्षा, श्रम और त्याग की वजह से संभव हुआ है। विप्र कुल में जन्में आर्यभटट् एवं चाणक्य की कृति के साथ विभिन्न कुल में जन्में महापुरूषों ने अपनी योग्यता को सिद्ध किया है। हम सिर्फ मजदूर ही नहीं आईएएस की फैक्ट्री हैं, सब जानते हैं। चंद राजनेताओं की चतुराई और सत्ता का अहंकार पहचान नहीं है बिहार का, बल्कि शून्य से शिखर तक कैसे पहुंचा जाता है, उसका जीता-जागता प्रमाण है बिहार। 0 से शिखर तक पहुंचाने वाले बिहारी राजनीतिक संक्रमण की वजह से अपने ही भारत देश में आलोचना का शिकार है। धर्म, मोक्ष, योग, अध्यात्तम और ज्ञान के लिए बिहार आदि काल से अनंत काल तक पहचान रखेगा।

ब्रजेश मिश्र, संपादक
8340360961, 9431073769

मई 2025

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

हमारा पता है :- **द्वारा:- ब्रजेश मिश्र**

पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28
कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
फोन:- 9431073769/ 8340360961/ 9955077308

हमारा ई-मेल kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

एक पर एक

ब्रजेश जी,

शशि रंजन सिंह एवं राजीव कुमार शुक्ला 2025 मई अंक में एलआईसी का हाउसिंग में करोड़ों का खेल होटल के नाम पर चल रहा है और सरकार के खजाने को खाली किया जा रहा है। गौर करने वाली बात है की पटना लिक एचएफएल ने अवैध घोषित होटल रेंट पर दिया है करोड़ों का लोन पूरी खबर पढ़ने पर भ्रष्टाचार का बड़ा नमूना लगता है। वहीं दूसरी खबर ''नहीं मानते हैं बिहार सरकार का आदेश पीएमसीएच के अधीक्षक आई एस ठाकुर'' भी बेजोड़ एवं सरकार की नींद उड़ाने वाली है।

✦ मनोरंजन सिन्हा, पाया नं.-36, राजा बाजार

सेना और सत्ता

ब्रजेश जी,

मैं केवल सच का नियमित पाठक हूं और इसके हर खबर को बड़े मन भाव से पढ़ता हूं क्योंकि इसके सरल भाषा मुझे बेहद पसंद है मैं 2025 अंक में संजय सक्सेना की खबर सेवा के साथ खड़ा है भारत सत्ता के लिए लड़ता है पाकिस्तान आलेख में पूरी बुनियादी चीजों को प्रमुखता के साथ लिखा गया है। ऑपरेशन सिंदूर इस आलेख का जीत जागता प्रमाण है। आपसी सहमति के बाद भी पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आता।

✦ प्रभुदयाल सक्सेना, गाँधी नगर, नई दिल्ली

विधानसभा चुनाव 2025

मिश्रा जी,

सबको ज्ञात है नवंबर महीने में 2025 में होने वाले विधानसभा चुनाव के नतीजे सबके सामने होंगे और नई सरकार के गठन होगा लेकिन इसके पहले विधानसभा चुनाव में कौन सा गठबंधन कितना कारगर साबित होता है कहना बड़ा मुश्किल है अमित कुमार की खबर मैं 2025 अंक में इस बात का बहुत ही सटीक ढंग से समीक्षात्मक खबर को रखा है क्या करेंगे राहुल तेजस्वी और नीतीश कुमार शीर्षक से या आलेख ए क्षेत्रीय दलों को भी सरकार बनाने में क्या भूमिका होगी उत्तर पूरे विस्तार से लिखा गया है लेख पठनीय और संग्रहणीय है

✦ कैलाश पाठक, जी बी रोड, गया, बिहार

ऑपरेशन सिन्दूर

मिश्रा जी,

आपका संपादकीय बेजोड़ एवं ज्वलंत मुद्दों पर आधारित रहता है इसकी वजह से इसके आलेख के पाठकों की संख्या अत्यधिक है। मैं 2025 अंक में आपका संपादकीय ''सेना का ऑपरेशन सिंदूर'' बहुत ही मार्मिक एवं सटीक समीक्षा के साथ लिखा गया है आखिर ऑपरेशन सिंदूर हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच युद्ध के साथ-साथ भारत के पौराणिक परंपरा पर आधारित एक ऑपरेशन है। धर्म पूछ कर आतंकवादियों ने कई मांग की सिंदूर उजाड़ दी, उसी के बदले में आतंकवादियों पर किए गए भारतीय सेना के द्वारा हमला जिसका नाम ''ऑपरेशन सिंदूर पड़ा'' भारत अब चुप रहने वाला है देश नहीं है। सटीक खबर।

✦ कौशलेन्द्र सिंह, टावर चौक मुंगेर, बिहार

झारखंड

संपादक जी,

झारखंड प्रदेश की राजनीतिक एवं पुलिस की खबरों को गुड्डी साव एवं ओम प्रकाश प्रत्येक महीने केवल सच पत्रिका में लिखते हैं। मई 2025 अंक में भी दोनों ने अच्छी-अच्छी खबरों से आम जनता को अवगत कराया है। दोनों की खबरें तथ्य एवं सत्य पर आधारित होती है और सकारात्मक खबरों को इन दोनों पत्रकार बहुत प्राथमिकता से पत्रिका में स्थान दिलाने में कामयाब हैं। सरकार और प्रशासन के बीच के सामंजस्य के साथ भ्रष्टाचार एवं योजनाओं पर गिद्ध दृष्टि रखने वाले सामचार पर भी ठोस खबर पाठक के बीच लाना चाहिए। जनता सच जानना चाहती है।

✦ अभिषेक राय, 104, हाउसिंग कॉलोनी, राँची

किशनगंज और नवादा

संपादक जी,

अप्रैल 2025 अंक में प्रकाशित यूपी की खबर में अजय कुमार की खबर ''**तीन साल में यूपी से खत्म हो जाएगी गरीबी-योगी**'' में गंभीर बातों को सही ढ़ंग से लिखा है तो दूसरी खबर संजय सक्सेना की ''**वक्फ संशोधन बिल**'' में मुसलमानों की नाराजगी के विषय को काफी बुनियादी तरीके से लिखा है कि राजनीति का कितना नुकसान सपा एवं भाजपा को होगा का सही समीक्षा किया है। तीसरी खबर संजय सक्सेना की खबर ''विवाद के समय बीजेपी अपने लोगों को छोड़ देती है'' भी चिंतशील है। ऐसी खबरों को प्रथमिकता से प्रकाशित करें।

✦ रौशन सिंह, बलिया बस स्टैण्ड, उत्तरपद्रेश

अन्दर के पन्नों में

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, DAVP No.- 129888
समृद्ध भारत खुशहाल भारत

केवल सच

निर्भीकता हमारी पहचान
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः- 20	अंकः- 229	माहः- जून 2025	मूल्यः- 20/- रू

फाउंडर

श्रद्धेय गोपाल मिश्र

श्रद्धेय सुषमा मिश्र

संपादक

ब्रजेश मिश्र

9431073769 8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

अरूण कुमार बंका (एडमिन) 7782053204
सुरजीत तिवारी 9431222619
निलेन्दु कुमार झा 9431810505, 8210878854
सच्चिदानन्द मिश्र 9934899917
रामानंद राय 9905250798
डॉ० शशि कुमार 9507773579

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र 9430888060, 8873004350
अमोद कुमार 9431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद 9308815605, 9122003000
triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल 9430000482, 9798874154
मनीष कुमार कमलिया 9934964551, 8809888819

उप-संपादक

प्रसुन्न पुष्कर 9430826922, 7004808186
ब्रजेश सहाय 7488696914
ललन कुमार 7979909054, 9334813587
पंकज कुमार सिंह 9693850669, 9430605967

राजनीतिक संपादक

सुमित रंजन पाण्डेय 7992210078
संतोष कुमार यादव 8210487516,

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू' 9905244479, 7979075212
राजीव कुमार शुक्ला 9430049782, 7488290565
काशीनाथ गिरी 9905048751, 9431644829
अविनाश कुमार 7992258137, 9430985773
कुमार अनिकेत 9431914317

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह 8210772610, 9431253179
मिथिलेश कुमार 9934021022, 9431410833
नवेन्दु कुमार मिश्र 9570029800, 9199732994
ऋषिकेश पाण्डेय 7488141563, 7323850870

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र 9608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा 9386901616, 7762089203

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि 9308454485
रवि कुमार पाण्डेय 9507712014

चीफ क्राइम ब्यूरो

सैयद मो० अकील 9905101976, 8521711976
आनन्द प्रकाश 9508451204, 8409462970

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

कार्यालय संवाददाता

सोनू यादव 8002647553, 9060359115

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार 9905203164

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०) :- श्रीधर पाण्डेय 9470709185
(म०) :- गौरव कुमार 9472400626
(ग्रा०) :- मुकेश कुमार 7004761573
बाढ़ :-
भोजपुर :- गुड्डू कुमार सिंह 8789291547
बक्सर :- बिन्ध्याचल सिंह 8935909034
कैमूर :-
रोहतास :- अशोक कुमार सिंह 7739706506
:-
गया (श०) :- सुमित कुमार मिश्र 7667482916
(ग्रा०) :-
औरंगाबाद :-
जहानाबाद :- नवीन कुमार रौशन 9934039939
अरवल :- संतोष कुमार मिश्रा 9934248543
नालन्दा :-
:-
नवादा :- अमित कुमार 9162664468
:-
मुंगेर :-
लखीसराय :-
शेखपुरा :-
बेगूसराय :-
:-
खगड़िया :-
समस्तीपुर :-
जमुई :- अजय कुमार 09430030594
वैशाली :-
:-
छपरा :-
सिवान :-
:-
गोपालगंज :-
:-
मुजफ्फरपुर :- .
:-
सीतामढ़ी :-
शिवहर :-
बेतिया :- रवि रंजन मिश्रा 9801447649
बगहा :-
मोतिहारी :- संजीव रंजन तिवारी 9430915909
दरभंगा :-
:-
मधुबनी :-
:- प्रशांत कुमार गुप्ता 6299028442
सहरसा :-
मधेपुरा :-
सुपौल :-
किशनगंज :-
:-
अररिया :- अब्दुल कय्यूम 9934276870
पूर्णिया :-
कटिहार :-
भागलपुर, :-
(ग्रा०) :- रवि पाण्डेय 7033040570
नवगछिया :-

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर,
नई दिल्ली-110052
संजय कुमार सिन्हा, स्टेट हेड
मो०- 9868700991, 9431073769

उत्तरप्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
.................................., **स्टेट हेड**

सम्पर्क करें
9308815605

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
अजीत कुमार दुबे, स्टेट हेड
मो०- 9433567880, 9308815605

मध्य प्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
अभिषेक कुमार पाठक, स्टेट हेड
मो०- 8109932505,

झारखंड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव,
द्वितीय तल, फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
मो०- 7903856569, 6203723995

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
.................................., **स्टेट हेड**
सम्पर्क करें
8340360961

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या.- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ e-mail:- kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए- 17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☞ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☞ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☞ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☞ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ **सभी पद अवैतनिक हैं।**

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- Punjab National Bank
IFSC Code :- PUNB0060020
PAN No. :- AAJFK0065A

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- State Bank of India
IFSC Code :- SBIN0003564
PAN No. :- AAJFK0065A

प्रधान संपादक

....

....

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो

....

झारखण्ड सहायक संपादक

अभिजीत दीप	7004274675, 9430192929
ब्रजेश मिश्र	7654122344, 7979769647
अनंत मोहन यादव	9546624444, 7909076894

उप संपादक

अजय कुमार 6203723995, 8409103023

....

संयुक्त संपादक

....

विशेष प्रतिनिधि

भारती मिश्रा 8210023343, 8863893672

....

....

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची	:-	अभिषेक मिश्र	7903856569
	:-	ओम प्रकाश	9708005900
साहेबगंज	:-		
खूँटी	:-		
जमशेदपुर	:-	तारकेश्वर प्रसाद गुप्ता	9304824724
हजारीबाग	:-		
जामताड़ा	:-		
दुमका	:-		
देवघर	:-		
धनबाद	:-		
बोकारो	:-		
रामगढ़	:-		
चाईबासा	:-		
कोडरमा	:-		
गिरीडीह	:-		
चतरा	:-	धीरज कुमार	9939149331
लातेहार	:-		
गोड्डा	:-		
गुमला	:-		
पलामू	:-		
गढ़वा	:-		
पाकुड़	:-		
सरायकेला	:-		
सिमडेगा	:-		
लोहरदगा	:-		

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स'

एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,
लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक **''मगध इंटरनेशनल स्कूल''** टेकारी

'' केवल सच '' पत्रिका **एवं '' केवल सच टाइम्स ''**

9060148110

sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

व्यवसायी

पटना, बिहार

7360955555

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो

पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	**धर्मेन्द्र सिंह**	9430230000, 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

विशेष प्रतिनिधि

महेश चौधरी	9572600789, 9939419319
आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
शालनी झा	9031374771, 7992437667
बेंकटेश कुमार	8521308428, 9572796847
राजीव नयन	9973120511, 9430255401
दीपनारायण सिंह	9934292882,
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417
कुमार राजू	9310173983,
रजनीश कांत झा	9430962922, 7488204140

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000, 9431096964
मुकेश कुमार	9835054762, 9304377779
जय प्रसाद	9386899670,
कृष्णा प्रसाद	9608084774, 9835829947

झारखंड राज्य प्रमंडल ब्यूरो

राँची	गुड्डी साव	6299470142
हजारीबाग		
पलामू		
दुमका		
चाईबासा		

Acharya Devvrat
Governor, Gujarat
Gandhinagar-382021

सत्यमेव जयते

आचार्य देवव्रत
राज्यपाल, गुजरात
गांधीनगर-३८२०२१

1 9 MAY 2025

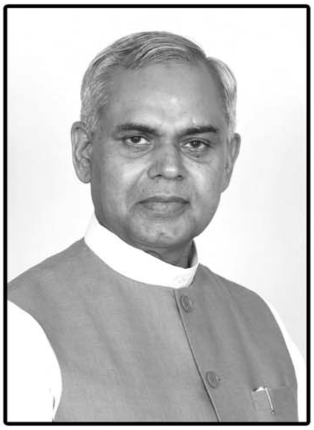

संदेश

शून्य का आविष्कार केवल गणना की शुरुआत नहीं थी, वह भारतीय ज्ञान-विज्ञान की एक अद्वितीय छलांग थी, जिसने समूची मानव सभ्यता को नई दिशा दी। बिहार की पुण्यभूमि पर जन्मे महान गणितज्ञ आर्यभट्ट भारतीय बौद्धिक परंपरा के प्रतीक हैं।

'केवल सच' पत्रिका द्वारा प्रकाशित 'शून्य से शिखर' विशेषांक इस अमूल्य धरोहर को सम्मानित करने का एक सराहनीय प्रयास है। इस विशेषांक के माध्यम से युवा पीढ़ी न केवल आर्यभट्ट के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रेरणा प्राप्त करेगी, बल्कि बिहार की बौद्धिक गरिमा और सांस्कृतिक उत्कर्ष से भी परिचित होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक राष्ट्रनिर्माण में संलग्न कर्मयोगियों के लिए एक प्रेरणा-स्त्रोत सिद्ध होगा और 'आर्यभट्ट केवल सच सम्मान-2025' जैसे प्रयास प्रतिभाओं को पहचानने और प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

इस प्रशंसनीय पहल के लिए मैं 'केवल सच' परिवार को हृदय से शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं और इस अभिनव प्रयास की सफलता हेतु मंगलकामनाएं करता हूं।

(आचार्य देवव्रत)

डॉ. हरि बाबू कंभमपति
Dr. Hari Babu Kambhampati

राजभवन
भुवनेश्वर - 751 008
RAJ BHAVAN
BHUBANESWAR - 751 008

सत्यमेव जयते

राज्यपाल, ओडिसा
GOVERNOR OF ODISHA

16 मई 2025

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि दिनांक 22 जून 2025 को **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **'शून्य से शिखर तक'** विशेषांक का प्रकाशन होने जा रही है।

किसी भी संस्थान का सैद्धांतिक विचारों, लक्षों और उद्देशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पत्रिका अहम भूमिका अदा करती है। पत्रिका जनमानस को उजागर कराती है। पाठकों में देश प्रेम, राष्ट्र प्रेम और जाति प्रेम की भाव पनपाती है। **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पत्रिका अपने समाज में भावात्मक संबंध को मजबूत करने का सुखद प्रयास कर रहा है, जो एक सराहनीय कार्य है।

'शून्य से शिखर तक' विशेषांक के लेखकों, संपादकों, पाठकों तथा **'केवल सच'** के सभी सदस्यों को मैं शुभकामनाएँ देते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(हरि बाबु कंभमपति)

Phone : 91-674-2536111/2536581, E-mail : govodisha@nic.in, Website : www.rajbhavanodisha.gov.in

हरिभाऊ बागडे
राज्यपाल, राजस्थान

सत्यमेव जयते

Haribhau Bagde
Governor, Rajasthan

दिनांक : 22 मई, 2025

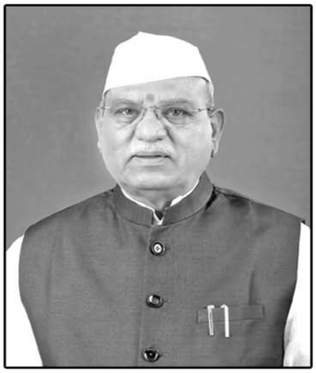

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है हिंदी मासिक पत्रिका 'केवल सच' का 'शून्य से शिखर तक' विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान–विज्ञान के अलोक में आपका यह विशेषांक महती सामग्री लिए प्रकाशित होगा, ऐसा विश्वास है। भारत ज्ञान–विज्ञान में समृद्ध राष्ट्र रहा है। इस ज्ञान का प्रभावी प्रसार सूक्ष्म दृष्टि से हो–तभी उसकी सार्थकता है।

मेरी प्रकाश्य अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

(हरिभाऊ बागडे)

राज भवन, सिविल लाइन्स, जयपुर–302006
Raj Bhawan, Civil Lines, Jaipur-302006
दूरभाष : 0141–2228716–19, 2228611–12, 2228722

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री

झारखण्ड सरकार
सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF JHARKHAND

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि **''केवल सच''** पत्रिका अपने 20 गौरवपूर्ण वर्षों की यात्रा पूर्ण कर **''शून्य से शिखर तक विशेषांक''** प्रकाशित कर रही है। यह केवल एक पत्रिका की उपलब्धि नहीं बल्कि निष्पक्ष, निर्भीक और सच्ची पत्रकारिता की विजयगाथा है।

इन दो दशकों में **''केवल सच''** ने जनसमस्याओं को मुखर रूप से उठाया है, समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज बना है और लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में अपनी सशक्त भूमिका निभाई है। यह पत्रिका न केवल समाचार देती है बल्कि समाज को जागरूक और प्रेरित भी करती है।

मैं पत्रिका की पूरी टीम को इस उपलब्धि के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आने वाले वर्षों में भी यह पत्रिका सत्य, निष्ठा और जनहित की राह पर इसी प्रकार आगे बढ़ती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित!

(हेमन्त सोरेन)

कांके रोड, रांची - 834 008 (झारखंड)
दूरभाष : 0651-2280886, 2280996, 2400233 फैक्स: 2280717, 2400232
ई-मेल : chiefminister.jharkhand19@gmail.com

अवधेश नारायण सिंह
सभापति
बिहार विधान परिषद्

Awadhesh Narain Singh
Chairman
Bihar Legislative Council

सत्यमेव जयते

Lt.No./पत्रांक ....

Dt./दिनांक 26/05/2025

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका **"केवल सच"** अपने स्थापना वर्ष के अवसर पर हरेक साल देश के लब्धप्रतिष्ठित प्रेरणास्त्रोत गणमान्य व्यक्तियों की विशिष्ट उपलब्धियों से युवा पीढ़ी को परिचित कराने के उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित करता है। इसी कड़ी में दिनांक 22 जून, 2025 को पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में पूरी दुनिया को शुन्य का ज्ञान देने वाले बिहार की पावन धरती पर जन्मे महान खगोलशास्त्री आर्यभट्ट के काल से लेकर आजतक बिहार की विकास यात्रा पर आधारित विशेषांक **"शून्य के शिखर तक"** का प्रकाशन होने जा रहा है तथा इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **"आर्यभट्ट केवल सच सम्मान-2025"** से सम्मानित किए जाने की भी योजना है।

खगोलशास्त्र, ज्योतिष और गणित के क्षेत्र में विश्वपटल पर आर्यभट्ट की कृति अद्वितीय है। वे एक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। मात्र 25 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने **'आर्यभट्टीय'** नामक महत्वपूर्ण ज्योतिष ग्रंथ की रचना कर विश्व को दशमलव प्रणाली तथा अनेक खगोल विषयक सिद्धांतों की क्रांतिकारी अवधारणाएं प्रस्तुत की ।

मैं, केवल सच पत्रिका परिवार को उनके 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर हार्दिक बधाई देता हूं तथा इस अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की सफलता की कामना के साथ-साथ **"शून्य के शिखर तक"** विशेषांक हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

26/5/25

(अवधेश नारायण सिंह)

3, देशरत्न मार्ग, पटना-800 001
3, Deshratan Marg, Patna-800 001

Tel. : 0612-2215819, 2215245 (O)
Fax : 2215683, 2215617, Mob.: 9431018630

नन्द किशोर यादव
अध्यक्ष
बिहार विधान सभा

सत्यमेव जयते

Nand Kishore Yadav
Speaker
Bihar Legislative Assembly

पत्रांक :

दिनांक : 09/06/2025

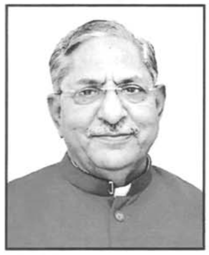

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि ''केवल सच'' हिंदी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर ''शून्य से शिखर तक'' विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है । साथ ही इस विशेष अवसर पर उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को ''आर्यभट्ट केवल सच सम्मान- 2025'' से भी सम्मानित किया जायेगा ।

हजारों साल से इस दुनिया का विकास इस पृथ्वी पर रहने वाले प्रतिभाशाली मस्तिष्क के सकारात्मक विचार से हो रहा है और यही सकारात्मक विचार हमारे संकल्प को संघर्ष के रास्ते सफलता के मार्ग पर ले जाती है । ज्ञान की पावन भूमि बिहार से जुड़े महान ज्योतिषविद् एवं गणितज्ञ आर्यभट्ट ऐसे ही एक अनुकरणीय उदाहरण हैं । इनके द्वारा किये गये ''शून्य के आविष्कार'' एवं ''खगौलिय सिद्धांत के विकास'' ने जहाँ एक ओर उन्नत गणितीय दृष्टिकोण के माध्यम से विकास का मार्ग खोला वही दूसरी ओर सभ्यता की दशा और दिशा तय करने में मददगार साबित हुआ । वैज्ञानिक विचार तथा रूचि मानवजाति के विकास एवं प्रगति की रीढ़ है । सकारात्मक रूप से चेतनशील मस्तिष्क ही स्थितियों की पड़ताल कर समाधान तलाश कर सकता है और यथार्थ में यही ''शून्य से शिखर तक'' की अवधारणा का केन्द्र बिन्दु है ।

इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं सम्पादक और प्रकाशन से जुड़े सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई तथा इस विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनायें देता हूँ ।

(नन्द किशोर यादव)

Address : 2, Neta Ji Marg (Strand Road), Patna-800 001
Phone No. : 0612-2217856, 2217082 (O), 0612-2215715 (R), Fax No. : 0612-2217373
E-mail : yadav_nandkishore@yahoo.co.in

सम्राट चौधरी
उप मुख्यमंत्री
बिहार

बिहार सरकार

Samrat Choudhary
Deputy Chief Minister
Bihar

पत्रांक : ....

दिनांक : 18/06/25

शुभकामना संदेश

"**केवल सच**" राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पुस्तिका द्वारा प्रतिवर्ष किसी महापुरूष की जीवनी, उपलब्धि एवं उनके उल्लेखनीय योगदान पर आधारित विषयों पर कार्यक्रम आयोजित किया जाना निश्चित रूप में हृदय में आनन्द का अनुभव करता है।

"**केवल सच**" द्वारा किये जा रहे इस प्रकार के आयोजन से वर्तमान पीढ़ी को अपने अतीत एवं सभी प्रकार के अनछुए पहलुओं से अवगत होने का अवसर मिलता है तथा उससे सीख लेकर वे अपने भविष्य को सवांरते एवं गढ़ते हैं।

उद्‌भट्ट विद्वान आर्यभट्ट पर आधारित "**केवल सच**" द्वारा प्रकाशित किये जा रहे "**शून्य से शिखर तक**" विशेषांक के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

(सम्राट चौधरी)

Office : Finance Department, Main Secretariat, Bihar, Patna - 800015
Mob. : 9431114448, Telephone No. : 0612-2217894 (O), 2217639 (Fax), 2217922 (R)
Email ID : dycmbiharsamrat@gmail.com
Residence - 11 M Strand Road, Patna - 800015

विजय कुमार सिन्हा
उप मुख्यमंत्री
बिहार

बिहार सरकार

Vijay Kumar Sinha
Deputy Chief Minister
Bihar

पत्रांक : ...120..........   दिनांक : ..13-06-2025

।। शुभकामना संदेश।।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि केवल सच हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर दिनांक 22 जून 2025 को ''शून्य से शिखर विशेषांक'' का प्रकाशन किया जा रहा है तथा उक्त अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट करने वाले कर्मयोगियो को ''आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025'' से सम्मानित किया जायेगा जो अत्यंत ही सराहनीय कार्य है।

केवल सच पत्रिका के आयोजक मंडल समय–समय पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से युवा पीढ़ी में राष्ट्रीयता का भाव जगाते हुए भारत के गौरवशाली व्यक्तित्व एवं इतिहास को याद कराकर एवं उनमें नई ऊर्जा का संचार भरकर पत्रकारिता जगत के स्वस्थ परम्परा का सम्यक् निर्वहन कर रही है।

मैं प्रकाश्य स्मारिका के लोकोपयोगी प्रकाशन एवं कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु आयोजक मंडल एवं प्रकाशन मंडल को हृदय से बधाई देता हूँ।

(विजय कुमार सिन्हा)

कार्यालय : विकास भवन, न्यू सचिवालय, बेली रोड, पटना–800015 Vikas Bhawan, New Secretariat, Bailey Road, Patna- 800015
कृषि भवन, मीठापुर, पटना–800001 Krishi Bhawan, Mithapur, Patna-800001
दूरभाष : 0612–2231212 (विकास भवन) 0612–2217102 (कृषि भवन)
ई–मेल : agri.ministerbihar@gmail.com

अशोक चौधरी
मंत्री
ग्रामीण कार्य विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

☎ : 0612-2547189 (का.)
0612-2217234 (आ.)
✆ : + 91 9386594300
आवास : 2, पोलो रोड, पटना

पत्रांक : 137/अ.पी.

दिनांक : 29/05/25

शुभकामना संदेश

''केवल सच'' पत्रिका द्वारां आयोजित ''शून्य से शिखर तक'' विशेषांक का विमोचन एवं ''आईएफए केवल सच सम्मान–2025'' का आयोजन अत्यंत सराहनीय प्रयास है। यह मंच उन व्यक्तित्वों को सम्मानित करने का एक माध्यम है, जिन्होंने अपने संघर्ष, समर्पण और सेवा भाव से समाज में अनुकरणीय योगदान दिया है।

बिहार की धरती सदा से ही प्रतिभाओं की जननी रही है। योग, ज्ञान और आत्मचिंतन की इस भूमि ने समय.समय पर देश और समाज को दिशा देने वाले विचारक, नेतृत्वकर्ता और प्रेरणास्त्रोत दिए हैं। ऐसे प्रयास हमें न केवल अपने गौरवशाली अतीत की याद दिलाते हैं, बल्कि वर्तमान में सकारात्मकता और प्रेरणा का संचार भी करते हैं।

मैं इस अवसर पर ''केवल सच'' परिवार को इस आयोजन के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही सम्मानित होने वाले सभी विभूतियों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए साधुवाद देता हूँ।

यह कार्यक्रम बिहार और देश को गौरवान्वित करने वाली एक प्रेरणादायक पहल बने, यही मेरी शुभेच्छा है।

जय हिंद! जय बिहार!

(अशोक चौधरी)
29/5/25

कार्यालय : पंचम तल, विश्वेश्वरैया भवन, नेहरू पथ (बेली रोड), पटना-800015
rwdminister@gmail.com | @Ashokchoudhary

बिजेन्द्र प्रसाद यादव
मंत्री
ऊर्जा, योजना एवं विकास विभाग
बिहार

बिहार सरकार

कार्यालय : ऊर्जा भवन, नेहरू मार्ग, पटना–1
कार्यलय : पुराना सचिवालय, पटना–15 (यो० एवं वि विभाग)
आवास : 1, नेताजी मार्ग, पटना–15
दूरभाष सं. : 0612–2506224 (ऊर्जा)
0612–2506225 (फैक्स)
0612–2217564 (यो० एवं वि० विभाग)
0612–2205454 (आवास)

पत्रांक :

दिनांक : 4-6-2025

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि ''केवल सच'' हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर दिनांक–22 जून 2025 को ''शुन्य से शिखर तक'' विशेषांक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा हैं। शून्य की महत्ता से पूरी दूनिया परिचित है। शून्य के बिना दूनिया के किसी विषय के बारे में कल्पना भी मुश्किल है। शून्य के बारे में हम सभी भारतीय को गौरव प्राप्त है कि शून्य का अविष्कार बिहार के सपूत ''आर्यभट्ट'' जी द्वारा किया गया था। ''शुन्य से शिखर तक'' के महत्व पर कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रबुद्धगणों द्वारा बहूमूल्य बिचारों का आदान प्रदान होगा जिससे आमजनों को वैचारिक लाभ मिलेगा। विचारों एवं उद्देश्यों को आम जनों तक पहुँचाने में पत्रिका का अहम भूमिका होती है।

कार्यक्रम की सफलता एवं ''शुन्य से शिखर तक'' नामक विशेषांक पत्रिका की सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

(बिजेन्द्र प्रसाद यादव)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र,
संपादक–सह–प्रबंधकर्ता,
केवल सच, पूर्वी अशोक नगर
रोड़ न0–14, म0 सं0–14/28
कंकड़बाग, पटना।

महेश्वर हजारी
मंत्री
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग,
बिहार, पटना।
सम्पर्क-9473193337
आ०-08, स्ट्रैण्ड रोड, पटना

Maheshwar Hazari
Minister
Information & Public Relations Department
Government of Bihar, Patna
Mobile : 9473193337
Telephone : 0612-2215710 (R)
H-8, Strand Road, Patna-800015
Email : minister@prdbihar.gov.in

पत्रांक : 206 **दिनांक :** 06/06/2025

शुभकामना संदेश

दिनांक 22.06.2025 को ''केवल सच'' हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वीं स्थापना वर्ष के अवसर पर विशिष्ट कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को ''आर्यभट्ट केवल सच सम्मान–2025'' से सम्मानित करने के साथ इस अवसर पर पत्रिका की तरफ से ''शून्य से शिखर तक'' विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस अवसर पर उक्त विशेषांक के प्रकाशन से जुड़े सभी विद्वतजनों, केवल सच पत्रिका समूह एवं सभी बिहारवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक सभी पाठकों एवं बिहारवासियों के लिए संग्रहनीय होगा।

शुभकामनाओं के साथ।

06/06/2025

(महेश्वर हजारी)

सेवा में,

ब्रजेश मिश्र,
संपादक–सह–प्रबंधकर्त्ता,
पूर्वी अशोक नगर, रोड़–14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)
मो0–9431073769,8340360961

मो० जमा खान
मंत्री
अल्पसंख्यक कल्याण विभाग
बिहार सरकार।
محمد زماں خان
وزیر
محکمہ اقلیتی فلاح و بہبود
حکومت بہار

बिहार सरकार

Md. Zama Khan
Minister
Minority Welfare Dept.
Govt. of Bihar
दूरभाष : (का.) 0612–2210478 (फैक्स)
मोबाईल : 9470662786

पत्रांक : 322/M

दिनांक : 14/5/25

प्रिय ब्रजेश जी,

अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता की बात है कि ''**केवल सच**'' नामक, हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा बिहार राज्य के विकास को दृष्टिगत रखते हुए अपने स्थापना के 20वें वर्ष के सुअवसर पर ''**शून्य से शिखर विशेषांक**'' का प्रकाशन किया जा रहा है, जो अत्यंत ही सराहनीय एवं सार्थक कदम है। साथ ही इस अवसर पर विभिन्न सेवा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को सम्मानित भी किया जाएगा। विश्वास है कि इसके माध्यम से समस्त बिहार की प्राचीन गौरवशाली संस्कृति के अनछुए पहलुओं को सजोने तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृतिक समरसता के संवर्द्धन में इसकी उपादेयता महत्वपूर्ण साबित होगी।

एक बार पुनः इस आयोजन में शामिल सभी कार्यक्रमों के सफल आयोजन के साथ ही प्रकाशित होने वाली विशेषांक के लिए अपनी हार्दिक शुभकामना प्रकट करता हूँ।

आपका

(मो० जमा खान)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र
संपादक सह प्रबंधकर्त्ता,
पूर्वी अशोक नगर,
रोड नं०–14 मकान संख्या–14/28
कंकड़बाग, पटना–800020 (बिहार)
मोबाईल संख्या–9431073769, 8340360961

आवास : 16/6, बेली रोड, पटना, ई–मेल : min-welfare-bih@nic.in

नितिन नवीन
मंत्री
पथ निर्माण विभाग
बिहार, पटना

बिहार सरकार

Nitin Nabin
Minister
Road Construction Department
Bihar, Patna

पत्रांक 627 दिनांक 30/05/25

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी मासिक पत्रिका **'केवल सच'** दिनांक 22 जून, 2025 को अपने 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर ''**शून्य से शिखर विशेषांक**'' का प्रकाशन करने जा रही है। इस अवसर पर विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को ''**आर्यभट् केवल सच सम्मान-2025**'' से सम्मानित किया जायेगा।

'केवल सच' मासिक पत्रिका ने विगत 20 वर्षो से निष्पक्ष एवं निर्भिक रूप से समाचारों, लेखों एवं जानकारियों का प्रकाशन कर आम जनता के बीच अपनी एक अलग पहचान बनाई है। इसके द्वारा शून्य की खोज करने वाले आर्यभट के जीवन पर विशेषांक का प्रकाशन एवं सम्मान समारोह का आयोजन प्रशंसनीय कार्य है।

मैं 'केवल सच' मासिक पत्रिका ''**शून्य से शिखर विशेषांक**'' के सफल एवं लोकोपयोगी प्रकाशन की मंगलकामना करता हूँ।

(नितिन नवीन)

कार्यालय : विश्वेश्वरैया भवन, बेली रोड, पटना-800015 Office- Vishweshwaraiya Bhawan, Bailey Road, Patna-800015
दूरभाष : 0612-2547115 (का0), फैक्स : 2547942 (का0). Phone : 0612-2547115 (O), Fax: 2547942 (O)

नीतीश मिश्रा
Nitish Mishra

मंत्री
उद्योग विभाग
बिहार सरकार
Minister
Department. of Industries
Govt. of Bihar

पत्रांक/Ref. No.: 500 म॰ंं॰ पटना/Patna, दिनांक/Date: 16.05.2025

शुभकामना संदेश

नीतीश मिश्रा
मंत्री,
उद्योग विभाग, बिहार सरकार

यह प्रसन्नता की बात है कि **'केवल सच'** पत्रिका परिवार द्वारा हिन्दी मासिक पत्रिका–'केवल सच' के **20वें स्थापना दिवस** के अवसर पर **'शून्य से शिखर विशेषांक'** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर संस्था द्वारा विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले चयनित कर्मयोगियों को **'आर्यभट्ट केवल सच सम्मान, 2025'** से विभूषित किया जाना प्रशंसनीय पहल है।

आगामी विशेषांक में प्राचीन भारत के **महान ज्योतिषविद् एवं गणितज्ञ आर्यभट्ट** के संबंध में विशेष आलेखों के संग्रहण से इस मासिक पत्रिका का वैशिष्ट्य प्रतिबिंबित होगा। गणित एवं खगौल शास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों के प्रतिपादन के साथ–साथ **'आर्यभट्टीय'** नामक ग्रंथ के प्रणेता विश्व के प्रसिद्ध महापुरूषों में से एक आर्यभट्ट के संदर्भ में उनके विचारों एवं विश्व को दिए गए उनके योगदान से पाठकों को परिचित कराने का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

मैं केवल सच परिवार को इस प्रयास के लिए **हार्दिक शुभकामनाएँ** देता हूँ तथा **'शून्य से शिखर विशेषांक'** के सफल प्रकाशन की **कामना** करता हूँ।

Nitish Mishra
(नीतीश मिश्रा)

Office/कार्यालय-3rd Floor, Vikas Bhawan, New Secretariat, Patna:- तृतीय तल, विकास भवन, नया सचिवालय, पटना-800015
Web : https://state.bihar.gov.in/industries टेली./Tel.: 0612-2215431 टेली.फै./Telefax.: 0612-2215430 Email : minister.ind-bih@gov.in

डॉ० प्रेम कुमार
मंत्री
सहकारिता विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालयः
कमरा नं.-257, द्वितीय तल,
विकास भवन, नया सचिवालय
पटना-800 015
दूरभाष : 0612-2235301
फैक्स : 0612-2235300
ई-मेल : min.coop-bih@nic.in
आवासीय कार्यालय : 3, सर्कुलर रोड, पटना
दूरभाष : 0612-2235311
मोबाईल : 9473400422
Email-drpremkrbjp1955@gmail.com

पत्रांक : 678

दिनांक : 16/05/2025

शुभकामना संदेश

यह अपार हर्ष का विषय है कि "केवल सच" राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के बीसवें स्थापना दिवस पर ''शून्य से शिखर विशेषांक" का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके विमोचन के लिए देश के कई प्रबुद्धों एवं गणमान्यों को आमंत्रित कर एक विचार मंच का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर विभिन्न सेवाओं में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों का "आर्यभट केवल सच सम्मान 2025" से सम्मानित किया जा रहा है। इन आयोजनों से राष्ट्र की युवा पीढ़ी को "केवल सच" के द्वारा एक सकारात्मक संदेश दिया जा रहा है। ऐसे प्रभावी प्रयासों के एक सशक्त राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण किया जा रहा है।

"केवल सच" मासिक पत्रिका को उनके सकारात्मक प्रयासों के लिए मैं पूरी टीम को अपना हार्दिक शुभकामना प्रदान करता हूँ।

धन्यावाद।

प्रेम कुमार

(डॉ० प्रेम कुमार)

रेणु देवी
मंत्री
पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग
बिहार, पटना

बिहार सरकार

कार्यालय : विकास भवन, न्यू सचिवालय
पटना – 800 015
फोन/फैक्स नं० : 0612–2230496
ईमेल – ahd.minister@gmail.com

पत्रांक ....   दिनांक 14/06/25

संदेश

यह जानकार अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि ''केवल सच'' हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा दिनांक–22.06.2025 को अपने 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर 'शून्य से शिखर तक' विशेषांक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को ''आर्यभट्ट केवल सच सम्मान–2025'' से सम्मानित किया जाएगा, यह एक सराहनीय कदम है। इस तरह के प्रयास प्रतिभाओं को परखने एवं प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक राष्ट्रनिर्माण में लगे कर्मयोगियों के लिये एक प्रेरणा–स्त्रोत सिद्ध होगा।

गणना की शुरूआत 0 (शून्य) से होती है और शून्य के बगैर अंको की महत्ता भी शून्य के बराबर है। हम बिहार वासियों एवं भारतवासियों के लिए यह गौरव की बात है कि शून्य के आविष्कारक इस बिहार की पावन भूमि में जन्में श्रद्धेय आर्यभट्ट है। इस विशेषांक के माध्यम से हमारी युवा पीठी न केवल महान गणितज्ञ आर्यभट्ट के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रेरणा प्राप्त करेगी बल्कि बिहार की बौद्धिक गरिमा और सांस्कृतिक परम्परा से भी परिचित होगी।

मैं इस प्रशंसनीय पहल के लिए ''केवल सच परिवार को हृदय से बधाई देती हूँ एवं इस आयोजन की सफलता की कामना करती हूँ साथ ही प्रकाशित होने वाली विशेषांक के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

रेणु देवी
(रेणु देवी)

आवास संख्या–4, स्ट्रैंड रोड, पटना – 800 015

श्रवण कुमार
شرون کمار

मंत्री
ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

पत्रांक.....................

दिनांक 21/05/25

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त ही प्रसन्नता की बात है कि केवल सच, राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के संपादक–सह–प्रबंधकर्ता श्री ब्रजेश मिश्र जी के अध्यक्षता में **''केवल सच'' के 20वें स्थापना वर्ष** के अवसर पर **''शून्य से शिखर तक'' ''आर्यभट् केवल सच सम्मान समारोह–2025''** का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक विशेषांक/स्मारिका के प्रकाशन किया जा रहा है ।

श्रद्धेय आर्यभट् प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिषविद् एवं एक महान गणितज्ञ थे । श्रद्धेय आर्यभट् शून्य के जन्मदाता हैं । **श्रद्धेय आर्यभट के नाम पर बिहार के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी** के द्वारा एक विश्वविद्यालय का स्थापना किया गया है ताकि आने वाली पीढ़ी श्रद्धेय आर्यभट जी के जीवन एवं उनके द्वारा किये गये शोध कार्य से परिचित हो सके एवं बिहार के छात्र–छात्राओं को प्रेरणा मिल सके ।

लोकतंत्र की जननी गौरवशाली बिहार अपनी विलक्षण प्रतिभा से पूरी दुनिया में अपनी अमिट पहचान रखती है । बिहार ज्ञान, योग और त्याग की धरती के साथ–साथ देव भूमि के रूप में यह विश्वस्तरीय शोध की मातृभूमि रही है एवं यहाँ से कई धर्मो का उदय हुआ है जो विश्व स्तर पर छायी हुई है।

मैं उक्त **''आर्यभट् केवल सच सम्मान समारोह–2025''** के सफल आयोजन की मंगल कामना करता हूँ तथा **केवल सच के 20वें स्थापना वर्ष** के अवसर पर प्रकाशित होने वाले **विशेषांक/स्मारिका** के सफल प्रकाशन की सुमंगल कामना करता हूँ ।

(श्रवण कुमार)

कार्यालय - मुख्य सचिवालय, पटना–800015, आवास : 12ए, बेली रोड, पटना–800015
दूरभाष/फैक्स : 0612-2205331 (का॰), 2215472 (आ॰), मोबाईल : 9471006315
ई-मेल : sharwankumarmla@ gmail.com

सुमित कुमार सिंह
मंत्री
विज्ञान, प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय :
प्रथम तल, टेक्नोलॉजी भवन,
नेहरू पथ (बेली रोड), पटना–800015
: 9431017018 (मो०)
: 0612-2547154 (का०)
: 0612-2547054 (फैक्स)
: 0612-2215026 (आ०)

पत्रांक : 275 (आ०)

दिनांक 25-05-2025

शुभकामना संदेश

'केवल सच' हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा रवीन्द्र भवन, पटना में 22 जून 2025 को ''आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025'' का आयोजन निर्धारित है।

20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर ''शून्य से शिखर तक'' पर एक विशेषांक का प्रकाशन किया जाएगा। शून्य से शिखर तक की यात्रा एक शक्तिशाली प्रतीक है जो प्रारंभिक अभाव या निम्न स्थिति से उठकर सफलता, उपलब्धि या उच्च स्थान प्राप्त करने की प्रक्रिया को दर्शाता है। साथ ही 'आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025' के आयोजन का भी कार्यक्रम है। इस अवसर पर संगठन द्वारा आवाम एवं राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों के सम्मान हेतु प्रतिभाशाली लोगों का चयन कर विभिन्न सेवा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को सम्मानित किया जायेगा।

उक्त अवसर पर **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पत्रिका के संपादक, लेखकों एवं पाठकों को मैं अपनी हार्दिक बधाई एवं शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

(सुमित कुमार सिंह)

हरि सहनी
मंत्री
पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग
बिहार, पटना ।

बिहार सरकार

Hari Sahani
Minister
BC & EBC Welfare Dept.
Bihar, Patna

पत्रांक 436/का० दिनांक 26/05/2025

शुभकामना—संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हिन्दी मासिक पत्रिका 'केवल सच' के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **'शून्य से शिखर विशेषांक'** का प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें सन्देह नहीं है कि 'केवल सच' आज के समय में निर्भीक पत्रकारिता का पर्याय बन गया है। इसीलिए आने वाले दिनों में यह पत्रिका न केवल शून्य से शिखर तक की यात्रा तय करेगी, बल्कि यह पत्रिका स्वयं वृहद् आकाश बन जायेगी।

आज भारत अपने यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में प्रगति के पथ पर द्रुत गति से चल पड़ा है। उनके नेतृत्व में आम जन को इस बात का भरोसा हो गया है कि **'मोदी है, तो मुमकिन है'**। दूसरी तरफ, बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य में सुशासन की जो गाथा लिखी गयी है, उसके लिए उन्हें सदा याद किया जाएगा।

मैं विश्वास करता हूँ कि 'केवल सच' पत्रिका सकारात्मक पत्रकारिता के धर्म का निर्वाह करते हुए सरकार की योजनाओं से भी आम जनता को परिचित कराएगी। पुनः पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ अपनी आत्मीय शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

हरि सहनी
23-05-25
(हरि सहनी)

कार्यालयः– मुख्य सचिवालय, पटना–800 001 Office, Main Secretariat, Patna-800 001
कार्यालयः– 0612–2215375 (का०) **ई–मेल** bcebcwel@gmail.com

जयंत राज
मंत्री
भवन निर्माण विभाग,
बिहार, पटना

बिहार सरकार

कार्यालय पता: विश्वेश्वरैया भवन,
बेली रोड, पटना
दूरभाष : 0612-2547640
मोबाईल नं० : 7631743322

पत्रांक : 341 (का०)

दिनांक : 19/05/2025

शुभकामना संदेश

केवल सच हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **''शून्य से शिखर तक''** पर एक विशेषांक का प्रकाशन किया जाएगा। शून्य से शिखर तक की यात्रा एक शक्तिशाली प्रतीक है जो प्रारंभिक अभाव या निम्न स्थिति से उठकर सफलता, उपलब्धि या उच्च स्थान प्राप्त करने की प्रक्रिया को दर्शाता है। यह वाक्यांश अक्सर दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत, चुनौतियों का सामना करने और अंततः विजय प्राप्त करने की कहानी को व्यंक्त करता है।

केवल सच के 20वें स्थापना वर्ष पर प्रकाशित होने वाली पत्रिका से लोगों का ज्ञान बर्द्धक होगा। इस महती आयोजन की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

Jayant Raj
(जयंत राज)

आवासीय पता : 5 पोलो रोड, पटना / दूरभाष : 0612-2951633

जिवेश कुमार
मंत्री
नगर विकास एवं आवास विभाग
बिहार, पटना।

बिहार सरकार

JIBESH KUMAR
Minister
Urban Development & Housing Department
Bihar, Patna.

पत्रांक ....

दिनांक 28/05/2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ***"केवल सच"*** हिन्दी मासिका पत्रिका का 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर ***'शून्य से शिखर तक'*** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को ***"आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025"*** से सम्मानित किया जायेगा, जो उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों के मनोबल को बढ़ाने का कार्य करेगा। साथ–ही इस प्रकाशन के माध्यम से ***"आर्यभट्"*** के बारे में देश–प्रदेश के सभी नागरिकों को जानकारी प्राप्त होगी।

अतः ***"केवल सच"*** हिन्दी मासिका पत्रिका का 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर प्रकाशित होनेवाली पत्रिका ***''शून्य से शिखर तक'*** की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामना एवं आयोजनकर्त्ताओं को मेरी ओर से मंगलकामना।

(जिवेश कुमार)

कार्यालय- विकास भवन, न्यू सचिवालय, बेली रोड, पटना-800015, Office- Vikash Bhawan, New Secretariat, Bailey Road, Patna-800015.
दूरभाष- 0612-2217124, Email- minister.udhd@gmail.com

केदार प्रसाद गुप्ता
मंत्री
पंचायती राज विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

Kedar Prasad Gupta
Minister
Department of Panchayati Raj
Government of Bihar

पत्रांक : 566

दिनांक : 23/05/2025

शुभकामना संदेश

''**केवल सच**'' पत्रिका निष्पक्ष रूप से विषयवस्तु को आमजनों के समक्ष जिस प्रकार से प्रकाशित कर रही है, वह निश्चय ही प्रशंसनीय एवं प्रेरक है।

व्यक्तिगत तौर पर यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि दिनांक 22 जून, 2025 को **''शून्य से शिखर तक विशेषांक''** का प्रकाशन होने जा रहा है।

इस अवसर पर अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **''आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025''** से सम्मानित किये जाने का भी कार्यक्रम प्रस्तावित है।

''केवल सच'' पत्रिका के 20वाँ स्थापना वर्ष के अवसर पर ''शून्य से शिखर तक **''आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025''** का आयोजन किया जा रहा है। आर्यभट् प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिषविद् एवं एक महान गणितज्ञ थे। आर्यभट् शून्य के जन्मदाता हैं। ''शून्य से शिखर तक'' विशेषांक के विमोचन पर संपादक मण्डल एवं पत्रिका के सभी प्रतिनिधियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करता हूँ।

(केदार प्रसाद गुप्ता)

Residence Patna - 14/20, 20 Set, Duplex Banglow, Gardanibagh, Patna - 800001
Muzaffarpur - Gobarsahi, Muzaffarpur - 843113
Office : Panchayati Raj Department, Vikas Bhawan, Bailey Road, Patna - 800015
Telephone No. : 0612-2215088 (O) **Mob.** : 9334218308, 9835748684 | **Email** : ministerprdbihar@gmail.com

कृष्ण कुमार मंटू
Krishna Kumar Mantu

बिहार सरकार

मंत्री
सूचना प्रावैधिकी विभाग,
बिहार सरकार, पटना
Minister
Information Technology Department,
Govt. of Bihar

पत्रांक : 114 (m.T.)

दिनांक 22/05/2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि 22 जून 2025 को **"केवल सच"** हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **"शून्य से शिखर विशेषांक"** का प्रकाशन कर रही है। इस अवसर पर विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **"आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025"** से सम्मानित भी किया जायेगा जो एक सराहनीय कदम है। यह हर्ष की बात है कि प्रतिवर्ष बिहार, झारखण्ड और दिल्ली में आपके संगठन द्वारा किसी महापुरूष के ऊपर यह कार्यक्रम आयोजित करता है और उनके योगदान से युवा पीढ़ी को परिचित कराता है। इस गौरवशाली अवसर पर हमारे तरफ से केवल सच के पूरे टिम को बहुत–बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामना।

(कृष्ण कुमार मंटू)

कार्यालय : 2nd Floor, Technology Bhawan, Vishwesaraiya Bhawan, Nehru Path, Patna-800015, Ph. : 0612-2547072, Email-it.minister@bihar.gov.in
आवास : डी–1, डी–2, न्यू पुनाईचक, पटना, बिहार, दूरभाष : 0612-2283233, मोबाइल : 9471204121

कृष्णनंदन पासवान
मंत्री
गन्ना उद्योग विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय : रूम नं. 70, विकास भवन, न्यू सचिवालय, पटना-15
दूरभाष : 0612-2215834, फैक्स : 0612-2233120
ई-मेल : sugarcane.minister@gmail.com
मोबाईल : 94318 00725, 77397 11016
आवास : 16/20, 20 सेट, डूप्लेक्स बंगला, गर्दनीबाग, पटना

पत्रांक : 301/एम० दिनांक : 09/06/2025

श्री ब्रजेश मिश्र जी,

आपके पत्र के माध्यम से मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि ***केवल सच,*** राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **''शून्य से शिखर तक'' विशेषांक** का प्रकाशन कर रही है, जिसमें विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को ''आर्यभट्ट केवल सच सम्मान–2025'' से सम्मानित किया जा रहा है। इस पुनित अवसर पर **''शून्य से शिखर तक'' विशेषांक** का विमोचन होगा।

मैं इस शुभअवसर पर श्री ब्रजेश मिश्र, संपादक सह प्रबंधकर्त्ता, सदस्य–प्रेस सलाहकार समिति, बिहार विधान परिषद्, पटना, ***केवल सच,*** राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के इस पुनित अवसर पर 22 जून 2025, स्थान–रविन्द्र भवन, पटना में **''शून्य से शिखर तक'' विशेषांक** के विमोचन पर हार्दिक शुभकामना देता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

9/6/25

(कृष्णनंदन पासवान)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र,
संपादक सह प्रबंधकर्त्ता,
सदस्य–प्रेस सलाहकार समिति,
बिहार विधान परिषद्, पटना,

मदन सहनी
मंत्री
समाज कल्याण विभाग
बिहार, पटना

बिहार सरकार

Madan Sahni
Minister
Social Welfare Department
Bihar, Patna

पत्रांक...271 (का०)   दिनांक...20-05-2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि 22 जुन 2025 को **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पात्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर शून्य के अविष्ककारक बिहार की पावन भूमि में जन्में श्रद्धेय आर्यभट् जी की याद में **'शून्य से शिखर विशेषांक'** का प्रकाशन किया जा रहा है तथा उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **''आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025''** से सम्मानित किया जायेगा।

शून्य का अविष्कार केवल गणना की शुरूआत नहीं थी, यह भारतीय ज्ञान–विज्ञान की एक अद्वितीय पहचान थी, जिसने समूची मानव सभ्यता को नई दिशा दी। आर्यभट् भारतीय बौद्धिक परंपरा के प्रतीक है। बिहार के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी ने आदरणीय आर्यभट् जी के नाम से कई शिक्षण संस्थान बनाकर उनके योगदान को अमर कर दिया। हमलोगों के लिए यह गौरव की बात है कि शून्य के अविष्कारक बिहार के है।

मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक समस्त बिहार की प्राचीन गौरवशाली संस्कृति के अनछुए पहलुओं को संजोने तथा वर्तमान परिपेक्ष्य में सांस्कृतिक समरसता के संवर्द्धन में इसकी उपादेयता महत्वर्पूण साबित होगी।

इस प्रशंसनीय पहल के लिए मैं 'केवल सच' परिवार को हृदय से शुभकामना देता हूँ तथा इस प्रयास की सफलता हेतु मंगलकामना करता हूँ।

20.5.2025
(मदन सहनी)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र,
संपादक–सह–प्रबंधकर्त्ता,
केवल सच,
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका।

कार्यालय : मुख्य सचिवालय, पटना-800015, आवास-7 पोलो रोड, पटना
दूरभाष/फैक्स : 0612-2215045, 2215048 • E-mail : ministrysamajkalyan.bihar@gmail.com

रत्नेश सादा
मंत्री
मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

RATNESH SADA
Minister
Prohibition, Excise & Registration Department
Govt. of Bihar

पत्रांक : ....

दिनांक : 05-06-2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जान कर काफी प्रसन्नता हुई कि 22 जून, 2025 को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका **''केवल सच''** के स्थापना दिवस के अवसर पर प्रत्येक साल की भाँति देश के प्रेरणास्रोत गणमान्य व्यक्तियों की विशिष्ट उपलब्धियों से युवा पीढ़ी को परिचित कराने के उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर ''केवल सच'' के द्वारा **''शून्य से शिखर विशेषांक''** का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

मैं **''केवल सच''** हिन्दी मासिक पत्रिका के संपादक, लेखकों एवं पाठकों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की सफलता की कामना के साथ–साथ **''शून्य से शिखर विशेषांक''** हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ........

रत्नेश (सादा)
(रत्नेश सादा)
5/6/25

कार्यालय : कमरा सं०— 141 एवं 142, प्रथम तल, विकास भवन, नया सचिवालय, पटना।
आवास : 1/20, गर्दनीबाग, पटना, दूरभाष सं०—0612—2237940 (आ०), 0612—2231303 (का०)
ईमेल—exciseminister786@gmail.com

संजय सरावगी
मंत्री
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

Sanjay Saraogi
Minister
Revenue & Land Reforms Department
Govt. of Bihar
Office :- Main Secretariate, Patna-15
Phone :- 0612-2217355 (O)
Mob. :- 9431219050
Email :- revenueminister.bihar@gmail.com

पत्रांक : 1564 दिनांक : 16-06-25

—: शुभकामना संदेश :—

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि **''केवल सच''** हिन्दी मासिक पत्रिका **दिनांक—22 जून, 2025** को अपने 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **''आर्यभट् केवल सच सम्मान—2025''** से सम्मानित करने जा रही है। साथ ही इस पुनीत अवसर पर **''शून्य से शिखर विशेषांक''** का भी प्रकाशन कर रही है। जो नई—पीढ़ी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं उक्त कार्यक्रम एवं विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु मंगलकामना करता हूँ।

(संजय सरावगी)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र
संपादक—सह—प्रबंधकर्त्ता
केवल सच।

संतोष कुमार सिंह
मंत्री
श्रम संसाधन विभाग
बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

–: निवास :–
आवास संख्या–11, न्यु एम०एल०सी०
आर० ब्लॉक, पटना
मोबाईल : 9934011562, 7070091214
का० फैक्स : 0612-2528450
ई–मेल : labourminister.bihar@gmail.com

पत्रांक : ....

दिनांक : 20.05.25

शुभकामना संदेश

लोकतंत्र की जननी गौरवशाली बिहार अपनी समृद्ध इतिहास एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि **''केवल सच''** पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष पर बिहार के संदर्भ में **''शून्य से शिखर विशेषांक''** का विमोचन और साथ ही साथ विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **'आर्यभट्ट केवल सच सम्मान योजना–2025'** से सम्मानित किया जाना है।

मैं **''केवल सच''** पत्रिका परिवार को **''शून्य से शिखर विशेषांक''** के विमोचन तथा **''आर्यभट्ट केवल सच सम्मान''** समारोह की सफलता के लिए अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

Santosh Kumar

(संतोष कुमार सिंह)

सुनील कुमार
मंत्री
शिक्षा विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय : कमरा सं०-43,
विकास भवन, पटना-15
दूरभाष सं० : 0612-2204904 (का०)
फैक्स : 0612-2215836
आवास : 26/A, हार्डिंग रोड, पटना
0612-2215771 (आवास)

पत्रांक : M-370 दिनांक : 21/05/25

शुभकामना–संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि ***'केवल सच'*** पत्रिका द्वारा ***'शून्य से शिखर तक'*** विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह विशेषांक न केवल समाज में जागरूकता का संचार करेगा बल्कि युवाओं को प्रेरणा और दिशा भी प्रदान करेगा।

'केवल सच' ने अपने सशक्त लेखन और सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों को उजागर कर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से ***'आरंभ 'केवल सच'*** सम्मान–2025' के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने वाले युवाओं और कर्मयोगियों को सम्मानित करना एक सराहनीय पहल है।

इस अवसर पर, मैं 'केवल सच' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह आयोजन न केवल बिहार बल्कि पूरे देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

21/5/2025

(सुनील कुमार)

सुरेन्द्र मेहता
मंत्री
खेल विभाग
बिहार सरकार
दूरभाष संख्या - 0612 - 2217967

बिहार सरकार

SURENDRA MEHTA
Minister
Department of Sports
Govt. of Bihar
Email ID - minister.sports-bih@gov.in
Tel. - 0612 - 2217967

पत्रांक 120

दिनांक 29/05/2025

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि आपके द्वारा आयोजित दिनांक **22 जून 2025** को ''**केवल सच**'' हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **''शून्स से शिखर विशेषांक''** का प्रकाशन कर रही है। इस अवसर पर विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को '' **आर्यभट् केवल सच सम्मान–2025**'' से सम्मानित भी करने का कार्य कर रही है। जो बेहत ही शाराहनीय है।

अतः इस आयोजन के आयोजनकर्त्ता एवं '' **केवल सच**''हिन्दी मासिक पत्रिका को मैं अपना ''**शुभकामना संदेश**'' अर्पित करता हूँ।

(सुरेन्द्र मेहता)
मंत्री
खेल विभाग, बिहार पटना।

कार्यालय : विकास भवन, कमरा सं० 46, बेली रोड, पटना– 800015
आवास : 05/20 – मंत्री इन्क्लेव, गर्दनीबाग, पटना– 800002, मो0– 7061438851

विजय कुमार मंडल
मंत्री
आपदा प्रबंधन विभाग,
बिहार, पटना

बिहार सरकार

VIJAY KUMAR MANDAL
MINISTER
DISASTER MANAGEMENT DEPARTMENT

दूरभाष : (0612) 2217705
: (0612) 2217704
मोबाईल : 8825343367
कार्यालय : कमरा नं.-125 A
पुरानी सचिवालय, पटना-800 015
ई-मेल : ministerdmd@gmail.com

पत्रांक : 220/का०

दिनांक : 17.06.2025

शुभकामना संदेश

'केवल सच' पत्रिका द्वारा प्रकाशित **'शून्य से शिखर तक'** विशेषांक इस अमूल्य धरोहर को सम्मानित करने का. एक सराहनीय प्रयास है, इस विशेषांक के माध्यम से युवा पीढ़ी न केवल आर्यभट्ट के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रेरणा प्राप्त करेगी, बल्कि बिहार की बौद्धिक, गरिमा और सांस्कृतिक उत्कर्ष से भी परिचित होगी।

किसी भी संस्थान का सैद्धांतिक विचारों और लक्ष्यों को जन--जन तक पहुँचाने के लिए पत्रिका अहम भूमिका अदा करती है। पत्रिका जनमानस को उजागर कराती है। पाठकों में देशप्रेम की भावना में बढ़ोतरी करती है। **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पत्रिका अपने समाज में भावनात्मक संबंध को मजबूत करने का सुखद प्रयास कर रहा है, जो एक सराहनीय कार्य है।

इस प्रशंसनीय पहल के लिए **'केवल सच'** पत्रिका की पूरी टीम को इस उपलब्धि के लिए मैं बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आने वाले वर्षों में भी यह पत्रिका सत्य, निष्ठा और जनहित की राह पर इसी प्रकार आगे बढ़ती रहे।

भवदीय

विजय कुमार मंडल

(विजय कुमार मंडल)

चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह
विधायक, राँची
सह
सभापति
विधायक निधि अनुश्रवण समिति
झारखण्ड विधान सभा

सत्यमेव जयते

आवास
डिप्टीपाड़ा, कचहरी चौक, राँची
पिन–834001
मो० : 9431170001
दूरभाष+फैक्स : 0651–2360147
ई–मेल : cpsingh.ranchi@gmail.com

पत्रांक : 206 दिनांक : 14-06-2025

:: संदेश ::

अत्यंत ही हर्ष की बात है कि **"केवल सच"** पत्रिका अपनी 20 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पूर्ण कर चुकी है एवं इस अवसर पर **"शून्य से शिखर तक विशेषांक"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

दिनांक–22 जून, 2025 को पत्रिका की 20वां वर्षगांठ के विशेष अवसर पर रविन्द्र भवन, पटना में विशेषांक का विमोचन, सम्मान समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा।

"केवल सच" पत्रिका न केवल समाचार देती है बल्कि समाज को जागरूक एवं प्रेरित भी करती है।

मैं अपनी ओंर से केवल सच मीडिया परिवार के द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सफलता की कामना करता हूँ एवं विशेषांक के प्रकाशन से जुड़े समस्त सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह विशेषांक अपने प्रकाशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल साबित होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

14/6/2025
(चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह)

विवेक ठाकुर
संसद सदस्य (लोक सभा)
नवादा (बिहार)
VIVEK THAKUR
Member of Parliament (Lok Sabha)
Nawada (Bihar)

सत्यमेव जयते

Member :
- Parliamentary Standing Committee on Petroleum & Natural Gas
- Parliamentary Standing Committee on Rural Development & Panchayati Raj
- Consultative Committee for the Ministry of Power

दिनांकः 17 मई, 2025

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट, कंकड़बाग, पटना द्वारा दिनांक 22 जून, 2025 को **"केवल सच"** हिन्दी मासिक पत्रिका के 20वें स्थपना दिवस के अवसर पर **"शून्य से शिखर विशेषांक"** का प्रकाशन करने जा रही हैं। इस शुभ–अवसर पर समाज में विभिन्न उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **"आर्यभट्ट केवल सच सम्मान–2025"** से भी सम्मानित किया जाएगा।

मैं ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम सफलता की कामना करता हँ और आशा करता हूँ कि आपके सानिध्य में कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। इस शुभ–अवसर पर मैं आपके साथ–साथ ट्रस्ट के सभी सदस्यों को भी हार्दिक शुभकामना प्रेषित करता हूँ।।

विवेक ठाकुर

(विवेक ठाकुर)

श्री ब्रजेश मिश्र जी
संपादक सह प्रबंधकर्ता,
श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट,
पूर्वी अशोक नगर, रोड नं0–14,
मकान सं0–14 / 28, कंकड़बाग,
पटना–800020 (बिहार)

Delhi Address : C-1/19, Humayun Road, New Delhi-110003
Telephone : 011-24602656, 24602657 E-mail : vivek.thakur@sansad.nic.in
Permanent Address : Uma Complex, Fraser Road, Patna-800001 (Bihar)

डॉ. राज भूषण चौधरी
Dr. Raj Bhushan Choudhary

सत्यमेव जयते

जल शक्ति राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE FOR JAL SHAKTI
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

संदेश

यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट "केवल सच" हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा अपने 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर "शून्य से शिखर विशेषांक" का प्रकाशन कर रहा है। यह विशेषांक बिहार के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास की उस यात्रा को उजागर करता है जिसने प्रदेश को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

इस अवसर पर "आर्यभट केवल सच सम्मान-2025" के माध्यम से समाज के उन कर्मयोगियों को सम्मानित करना, जिन्होंने अपने सेवा कार्यों से समाज में उल्लेखनीय परिवर्तन लाए हैं, निश्चित ही प्रेरक है। यह आयोजन न केवल युवा पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति और महापुरुषों के योगदान से जोड़ता है, बल्कि उन्हें देश निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने हेतु प्रेरित भी करता है। वैदिक विचार समाज और राष्ट्र को सदैव नई दिशा व दशा के साथ-साथ शैक्षिक, धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना प्रदान करता रहेगा।

मैं श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट परिवार को इस रचनात्मक प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह विशेषांक युवाओं में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगा तथा बिहार को देश-विदेश में गौरवपूर्ण पहचान दिलाने वाले प्रयासों को और मजबूती प्रदान करेगा।

(डॉ. राज भूषण चौधरी)

215, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110 001, 215, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23708419, 23718759, **फैक्स :** 011-23354496, Tel. : (011) 23708419, 23718759, Fax : 011-23354496
ई-मेल/E-mail : mos-mowr@nic.in

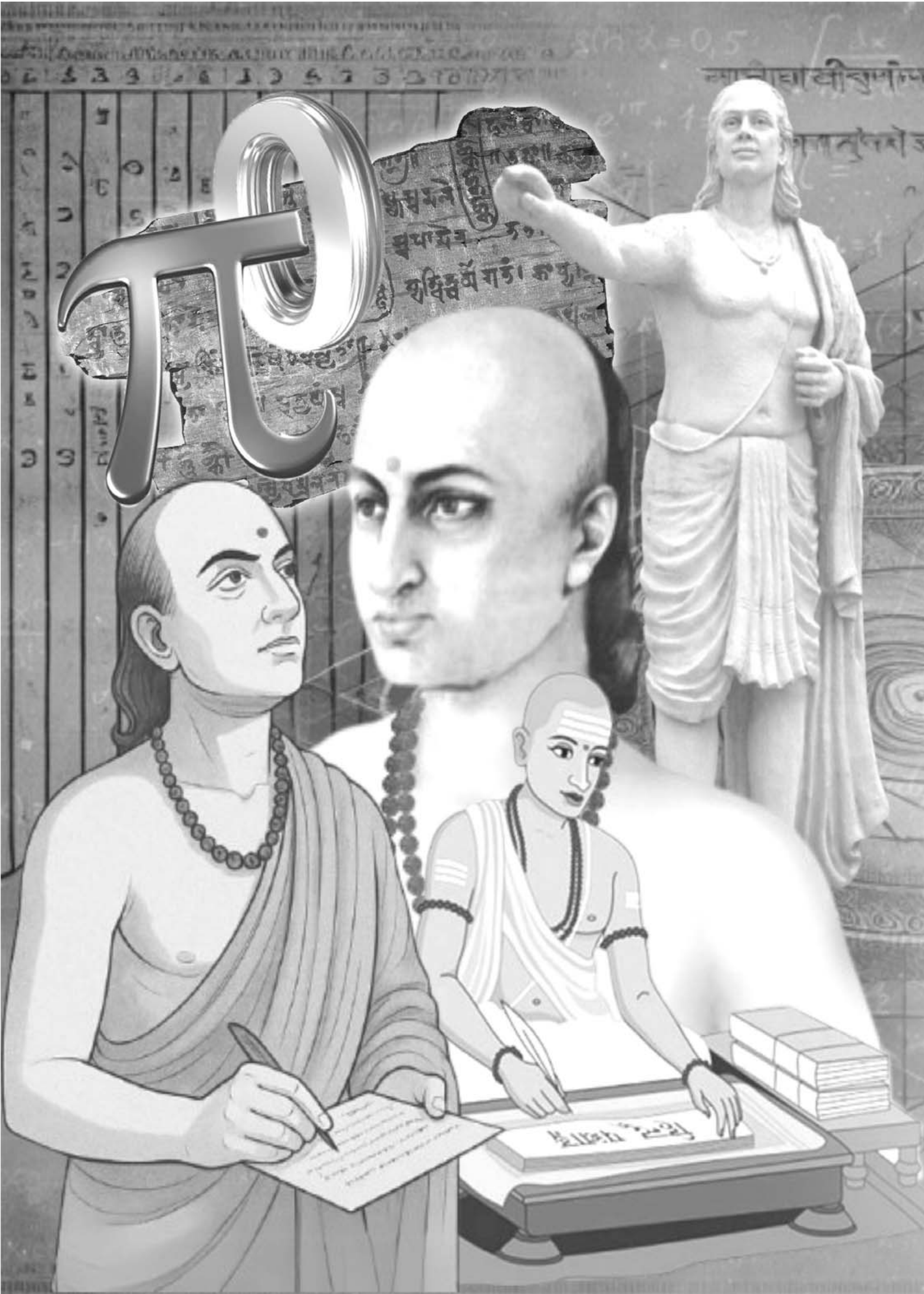

शून्य से शिखर तक

आर्यभट्ट

यह हैरान और आश्चर्यचकित करने वाली बात ही तो है कि जहां आज के उन्नत साधनों के बिना कोई खोज या कार्य कर पाना असंभव लगता है, वैसे में लगभग डेढ़ हजार वर्ष पहले ज्योतिषशास्त्र की खोज की जा चुकी थी और इसका श्रेय महान गणितज्ञ, शून्य आविष्कारक व खगोलशास्त्री आर्यभट्ट को जाता है। आर्यभट्ट भारतीय गणित और भारतीय खगोल विज्ञान के शास्त्रीय युग के पहले प्रमुख गणितज्ञ-खगोलविद थे, जिन्हें भारतीय गणित के पिता के रूप में भी जाना जाता है। आर्यभट्ट का नाम आर्यभट्ट, द एल्डर या आर्यभट्ट प्रथम था। वे एक भारतीय खगोलशास्त्री और पहले भारतीय गणितज्ञ थे। सन् 476 ईस्वी में आर्यभट्ट का जन्म कुसुमपुर (पटना) में हुआ था। उनके पिता का नाम विश्वदेव था। यह सम्राट विक्रमादित्य द्वितीय के समय वे हुए थे। आर्यभट्ट ने सौरमंडल का एक भूकेन्द्रित मॉडल बताया, जिसमें सूर्य और चंद्रमा दोनों ही चक्रों द्वारा चलते हैं और पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं। खगोलविज्ञान के क्षेत्र में पहली बार यह घोषित किया गया कि पृथ्वी स्वयं अपनी धुरी पर घूमती है। आर्यभट्ट ने सही ढंग से जोर देकर कहा कि पृथ्वी प्रतिदिन अपनी धुरी पर घूमती है और तारों की स्पष्ट गति पृथ्वी के घूमने के कारण होने वाली सापेक्ष गति है, जो उस समय प्रचलित दृष्टिकोण के विपरीत है कि आकाश घूमता है। गौरतलब है कि आर्यभट्ट का काम सिर्फ विज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें गणित भी शामिल है। आर्यभट्ट ने शून्य और दशमलव प्रणाली का उपयोग करके गणित को और अधिक सरल और प्रभावी बनाया। आर्यभट्ट की ही बदौलत प्राचीन भारत में वैज्ञानिक चिन्तन की सैद्धांतिक परम्परा स्थापित हो पाया। आर्यभट्ट ने विज्ञान और गणित में महत्वपूर्ण योगदान दिया और पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने, शून्य के पाई ( ) स्थान मान प्रणाली का अनुमान, त्रिकोणमिति और कई अन्य सिद्धांतों का निष्कर्ष निकाला। आर्यभट्ट की खगोलीय गणना पद्धतियाँ बहुत प्रभावशाली थीं। त्रिकोणमितीय तालिकाओं के साथ-साथ, उनका इस्लामी दुनिया में व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा और कई अरबी खगोलीय तालिकाओं (जीजेस) की गणना करने के लिए उनका उपयोग किया गया। सनद् रहे कि इनके शिष्य प्रसिद्ध खगोलविद वराह मिहिर थे। आर्यभट्ट ने प्राचीन व ऐतिहासिक नालंदा विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर मात्र 23 वर्ष की आयु में 'आर्यभट्टीय' नामक एक ग्रंथ लिखा था। उनके इस ग्रंथ की प्रसिद्धी और स्वीकृति के चलते राजा बुद्धगुप्त ने उनको नालंदा विश्वविद्यालय का प्रमुख बना दिया था। आर्यभट्ट की सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं क्रांतिकारी कृतित्व 'आर्यभटीय' है। कई कृतियों की खोज करने वाले आर्यभट्ट के फॉर्मूले से नासा और इसरो जैसे अंतरिक्ष संस्थान अपने रिसर्च में प्रयोग कर रहे हैं। उनकी महानतम खोज पूरी दुनियां के लिए अविष्मरणीय भेंट है। उनकी खोज से मिली प्रसिद्धि को आज दुनियां उन्हें याद करती है। ज्ञात हो कि 550 ईस्वी में पाटलिपुत्र में आर्यभट्ट की मृत्यु हुई थी। बहरहाल, मानव जीवन में आर्यभट्ट के महानतम खोज पर केवल सच राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका द्वारा विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है जिसे पत्रिका के संयुक्त संपादक अमित कुमार के साथ सहायक संपादक मिथिलेश कुमार ने संपादित किया है। प्रस्तुत है गणित के पितामह महान आर्यभट्ट को समर्पित 'शून्य से शिखर तक' के विशेष व पठनीय आलेख संग्रह के प्रमुख व विस्तारित अंशः-

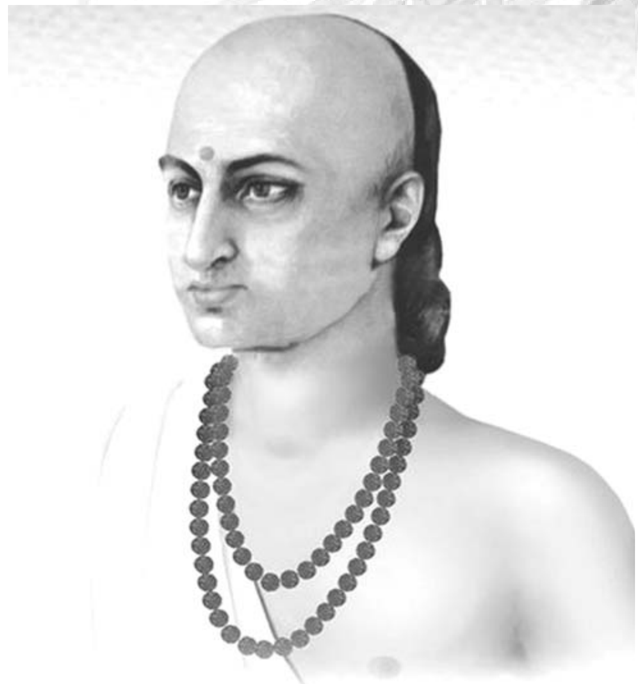

कई साल पहले एक रोमन नागरिक सड़क पर चल रहा था, तभी उसकी मुलाकात एक दोस्त से हुई। गुड मॉर्निंग मारियस। कहो, मैं कल रात खेल से चूक गया। अंतिम स्कोर क्या था? ठीक है, कैसियस, यह एक कम स्कोरिंग खेल था। स्कोर पैट्रिशियन IV प्लेबियन। मुझे नहीं पता। हमारे पास कुछ भी नहीं है! वह कहानी काल्पनिक हो सकती है, लेकिन तथ्य यह है कि रोमन अंक प्रणाली में शून्य का कोई प्रतीक नहीं था। संख्याएँ पहली बार तब अस्तित्व में आईं जब लोगों ने उनका उपयोग गिनती के लिए करना शुरू किया। वाक्यांश 'गिनती संख्या' 1, 2, 3, आदि को संदर्भित करता है। जब हम गिनते हैं तो हम एक से शुरू करते हैं, शून्य से नहीं। गिनती के लिए शून्य की जरूरत नहीं थी। आज स्थिति बहुत अलग है। जीरो हमारे नंबर सिस्टम का हिस्सा है और हम इसका इस्तेमाल करने में बहुत सहज हैं। वास्तव में, हम जिस प्रणाली का उपयोग संख्याओं को लिखने के लिए करते हैं, जिसे स्थितीय संकेतन या स्थान-मान संकेतन कहा जाता है, केवल शून्य के कारण ही संभव है। जीरो या शून्य एक बहुत ही दिलचस्प नंबर है इसका अपना कोई मूल्य नहीं होता परन्तु जब यह किसी और संख्या के आगे या पीछे लिखा जाता है तब यह उस संख्या के अर्थ को बदल कर रख देता है। किसी अंक से पहले लिखने से इसकी कोई पहचान नहीं, लेकिन अगर अंक के पीछे लग जाए तो उसे एक बड़ी संख्या में बदल देता है; उसे दस, पांच सौ, सात हजार आदि में बदल देता है। पहले संख्याएं सिर्फ ९ तक थीं, परन्तु शून्य के आविष्कार ने आगे की संख्याओं के निर्माण में मदद की। जैसे 101, 200, 3005 इत्यादि। यह कहना गलत नहीं होगा कि शून्य के आविष्कार से ही बड़ी संख्याएं बनी और गणित के क्षेत्र में क्रांति आई।

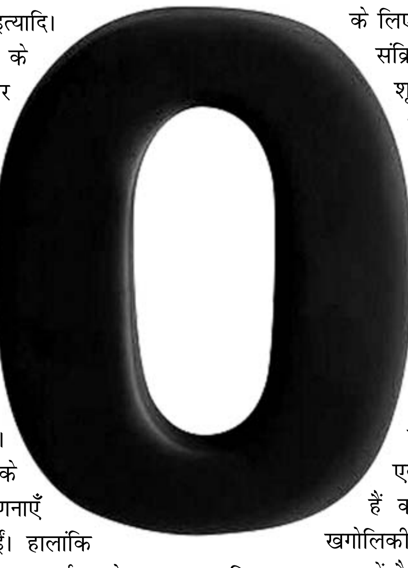

जब यह कहा जाता है कि 'आर्यभट्ट' ने शून्य का आविष्कार किया तो इसका तात्पर्य प्राचीन भारतीय गणितज्ञ आर्यभट्ट के शून्य की अवधारणा और स्थान-मूल्य अंक प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान से है। आर्यभट्ट के काम ने दशमलव संख्या प्रणाली में शून्य को प्लेसहोल्डर के रूप में इस्तेमाल करने की औपचारिकता को बढ़ावा दिया। इससे संख्याओं को अधिक कुशल तरीके से प्रस्तुत करना संभव हुआ, जिससे गणनाएँ आसान और अधिक व्यवस्थित हो गईं। हालांकि आर्यभट्ट ने शून्य का आविष्कार अंक बनाने के अर्थ में नहीं किया था, लेकिन उनके लेखन ने गणित में शून्य की समझ और उपयोग में योगदान दिया। जैसा कि हम जानते हैं कि अंक '0' बाद में विकसित किया गया था, लेकिन 'कुछ नहीं' का प्रतिनिधित्व करने वाली संख्या की अवधारणा अंकगणित और बीजगणित के लिए महत्वपूर्ण थी। आर्यभट्ट के कार्य, विशेष रूप से उनके ग्रंथ 'आर्यभटीय' ने भविष्य के गणितज्ञों के लिए आधार तैयार किया। गणना के लिए उनके तरीके और खगोल विज्ञान में उनकी अंतर्दृष्टि ने गणितीय संक्रियाओं में शून्य के महत्व को भी दर्शाया। संक्षेप में, आर्यभट्ट ने शून्य की अवधारणा के प्रारंभिक विकास और प्रयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो आज के गणित के लिए मौलिक बन गयी।

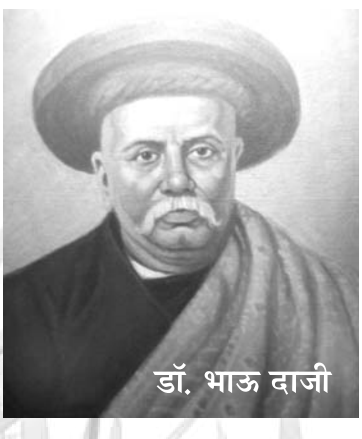

डॉ. भाऊ दाजी

गौरतलब है कि आर्यभट्ट भारतीय गणित और भारतीय खगोल विज्ञान के शास्त्रीय युग के पहले प्रमुख गणितज्ञ-खगोलविद थे, जिन्हें भारतीय गणित के पिता के रूप में भी जाना जाता है। आर्यभट्ट का नाम आर्यभट्ट, द एल्डर या आर्यभट्ट प्रथम था। वे एक भारतीय खगोलशास्त्री और पहले भारतीय गणितज्ञ थे, जिनके काम और इतिहास को आज भी आधुनिक विद्वान याद करते हैं और स्वीकार करते हैं। आर्यभट्ट प्राचीन भारत के सर्वाधिक प्रतिभा संपन्न गणितज्ञ-ज्योतिषी थे। वर्तमान में पश्चिमी विद्वान भी यह स्वीकार करते हैं कि आर्यभट्ट प्राचीन विश्व के एक महान वैज्ञानिक थे। यद्यपि हम आर्यभट्ट का महत्व इसलिए देते हैं क्योंकि सम्भवतः वे ईसा की पांचवी-छठी सदी के नवीनतम खगोलिकी आन्दोलन के पुरोधा थे और आर्यभट्ट की ही बदौलत प्राचीन भारत में वैज्ञानिक चिन्तन की सैद्धांतिक परम्परा स्थापित हो पाई। कभी-कभी हम आर्यभट को 'आर्यभट्ट' नाम से भी संबोधित करते हैं। परन्तु उनका सही नाम आर्यभट था। सर्वप्रथम भारतीय चिकित्सक एवं पुरातात्विक विद्वान डॉ. भाऊ दाजी ने यह स्पष्ट किया था कि उनका वास्तविक नाम आर्यभट है, ना कि आर्यभट्ट। आर्यभट को आर्यभट्ट लिखने के पीछे कुछ विद्वानों का तर्क है कि आर्यभट ब्राह्मण थे, अतः भट्ट शब्द का उपयोग किया जाना चाहिए। परंतु कुछ विद्वान 'भट' शब्द का अभिप्राय भूलवश 'भाट' समझतें हैं, मगर भट शब्द का वास्तविक अभिप्राय 'योद्धा' से है। वास्तविकता में आर्यभट्ट की ही बदौलत प्राचीन भारत में वैज्ञानिक चिन्तन की सैद्धांतिक परम्परा स्थापित हो पाई। आर्यभट ने एक योद्धा की ही भांति धर्मशास्त्रों और प्राचीन लोकविचारों तथा परम्पराओं से धैर्यपूर्वक मुकाबला किया। गौरतलब है कि उनकें ग्रंथ आर्यभटीय के टीकाकारों तथा अन्य पूर्ववर्ती ज्योतिषियों ने उन्हें 'आर्यभट' नाम से ही संबोधित किया है। वही आर्यभट्ट ने विज्ञान और

☞ आर्यभट्ट ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'आर्यभटिया' (गणित की पुस्तक) को कविता के रूप में लिखा।

☞ 'आर्यभटिया' में अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति के 33 नियम भी दिए गए हैं।

☞ लगभग एक हजार साल पहले ही आर्यभट्ट ने यह खोज कर ली थी कि पृथ्वी गोल है और उसकी परिधि अनुमानतः 24835 मील है।

☞ आर्यभट्ट ने अपने सूत्रों से यह सिद्ध किया कि एक वर्ष में 366 दिन नहीं वरन 365.2951 दिन होते हैं।

☞ आर्यभट्ट ने यह भी बताया कि पृथ्वी की परिधि 39,968 किमी है। आधुनिक वैज्ञानिक गणना के अनुसार यह 40,072 किमी है।

☞ आर्यभट्ट डायोफैंटाइन समीकरणों को हल करने वाले पहले गणितज्ञ और वैज्ञानिक थे।

☞ आर्यभट्ट की खगोल विज्ञान प्रणाली को औदयाक प्रणाली कहा जाता था।

☞ राजा बुद्धगुप्त ने आर्यभट्ट को नालंदा विश्वविद्यालय का प्रमुख बनाया था।

गणित में महत्वपूर्ण योगदान दिया और पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने, शून्य के पाई ( ) स्थान मान प्रणाली का अनुमान, त्रिकोणमिति और कई अन्य सिद्धांतों का निष्कर्ष निकाला। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में से एक है आर्यभटीय, जो संस्कृत भाषा में लिखी गई एक महान कृति है और पांचवीं शताब्दी से भारतीय गणितज्ञ आर्यभट्ट की एकमात्र ज्ञात जीवित कृति है। उनके कार्यों में आर्य-सिद्धांत, खगोलीय गणनाओं पर एक खोया हुआ ग्रंथ, वराहमिहिर, भास्कर और ब्रह्मगुप्त शामिल हैं। आर्यभट्ट द्वारा की गई खोजें प्रभावशाली थीं। आर्यभट्ट ने एक महान गणितज्ञ के रूप में दुनिया भर में पहचान हासिल की। आर्यभट्ट प्राचीन समय के सबसे महान खगोलशास्त्रीयों और गणितज्ञों में से एक थे। विज्ञान और गणित के क्षेत्र में उनके कार्य आज भी वैज्ञानिकों को प्रेरणा देते हैं।

बताते चले कि आर्यभट्ट का जन्म ईस्वी सन् 476 में कुसुमपुर (पटना) में हुआ था। उनके पिता का नाम विश्वदेव था। यह सम्राट विक्रमादित्य द्वितीय के समय हुआ थे। इनके शिष्य प्रसिद्ध खगोलविद वराह मिहिर थे। आर्यभट्ट ने नालंदा विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर मात्र 23 वर्ष की आयु में 'आर्यभट्टीय' नामक एक ग्रंथ लिखा था। उनके इस ग्रंथ की प्रसिद्धी और स्वीकृति के चलते राजा बुद्धगुप्त ने उनको नालंदा विश्वविद्यालय का प्रमुख बना दिया था। आर्यभट्ट के बाद लगभग 875 ईस्वी में आर्यभट द्वितीय हुए जिन्होंने ज्योतिष पर 'महासिद्धांत' नामक ग्रंथ लिखा था। आर्यभट्ट द्वितीय गणित और ज्योतिष दोनों विषयों के आचार्य थे। इन्हें 'लघु आर्यभट्ट' भी कहा जाता था। आर्यभट्ट ने अपनी शिक्षा कुसुमपुरा में ही प्राप्त की थी। आर्यभट्ट ने अपने ग्रन्थ 'आर्यभटिया' में अपना जन्मस्थान कुसुमपुर और जन्मकाल शक संवत् 398 (476) लिखा है। इस जानकारी से उनके जन्म का साल तो निर्विवादित है परन्तु वास्तविक जन्मस्थान के बारे में विवाद है। कुछ स्रोतों के अनुसार आर्यभट्ट का जन्म महाराष्ट्र के अश्मक प्रदेश में हुआ था और ये बात भी तय है की अपने जीवन के किसी काल में वे उच्च शिक्षा के लिए कुसुमपुरा गए थे और कुछ समय वहां रहे भी थे। हिन्दू और बौद्ध परम्पराओं के साथ-साथ सातवीं शताब्दी के भारतीय गणितज्ञ भाष्कर ने कुसुमपुरा की पहचान पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) के रूप में की है। यहाँ पर अध्ययन का एक महान केन्द्र, नालन्दा विश्वविद्यालय स्थापित था और संभव है कि आर्यभट्ट इससे जुड़े रहे हों। ऐसा संभव है कि गुप्त साम्राज्य के अन्तिम दिनों में आर्यभट्ट वहां रहा करते थे। गुप्तकाल को भारत के स्वर्णिम युग के रूप में जाना जाता है। शास्त्रीय युग की बात करें तो आर्यभट्ट एकमात्र गणितज्ञ और खगोलशास्त्री हैं जिन्हें आज भी जाना जाता है।

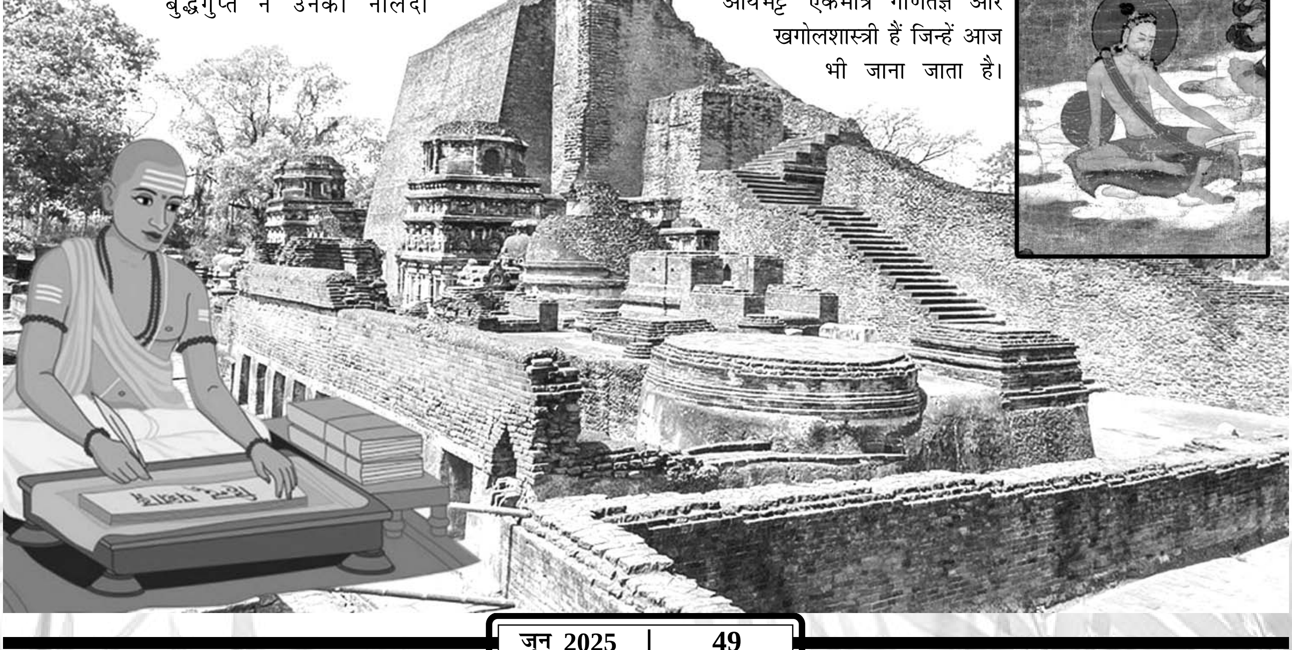

उनका काम सिर्फ विज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें गणित भी शामिल है। उनके द्वारा लिखी गई किताबों के अनुसार, हम मान सकते हैं कि उन्होंने पाटलिपुत्र में पढ़ाई की थी। कुसुमपुरा को हिंदू और बौद्ध दोनों परंपराओं द्वारा पाटलिपुत्र, आधुनिक पटना के रूप में पहचाना जाता है। पुराने शास्त्रों के अनुसार, आर्यभट्ट कुसुमपुरा संस्था (कुलपा) के प्रमुख थे। आर्यभट्ट की वजह से, नालंदा विश्वविद्यालय उस समय पाटलिपुत्र में बना रहा और एक खगोलीय प्रहरीदुर्ग था। वह नालंदा विश्वविद्यालय के प्रमुख भी थे। प्राचीन भारत के असंख्य पोथियों में उनके रचयिता तथा रचनाकाल के बारे में स्पष्ट जानकारी नही प्राप्त होती है। मगर महत्वपूर्ण बात यह है कि आर्यभट ने अपने समय के संबंध में सुस्पष्ट जानकारी दी है। आर्यभट्ट ने अपने क्रांतिकारी कृतित्व 'आर्यभटीय' में यह जानकारी दी है कि उन्होनें इस ग्रंथ की रचना 23 वर्ष की आयु में कुसुमपुर में की थी। आर्यभटीय के एक श्लोक में वे बताते हैं कि ''कलियुग के 3600 वर्ष बीत चुकें हैं और अब मेरी आयु 23 वर्ष है।'' वही भारतीय ज्योतिषीय काल गणना के अनुसार कलियुग का आरंभ 3101 ईसा पूर्व में हुआ था। कलन से विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला कि आर्यभटीय की रचनाकाल 499 ई. है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आर्यभट्ट का जन्म 476 ई. में हुआ होगा। अपने जन्मकाल की सुस्पष्ट सूचना देने वाले आर्यभट प्राचीन भारत के संभवत: पहले वैज्ञानिक थे। हमें आर्यभट्ट के माता-पिता, भाई-बहन, गुरु इत्यादि के बारे में कोई जानकारी नही प्राप्त है। यहाँ तक कि उनके जन्म स्थान के बारे में भी विद्वानों में आपसी मतभेद है। पहले विद्वानों का यह मत था कि आर्यभट्ट का जन्म या तो पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) में हुआ था या कुसुमपुर (पुष्पपुर) में। कुछेक विद्वानों के मतानुसार पाटलिपुत्र ही कुसुमपुर था। ऐतिहासिक स्रोतों से ज्ञात होता है कि पाटलिपुत्र के निकट आर्यभट की वेधशाला था। आर्यभटीय के टीकाकार नीलकंठ सोमयाजी के अनुसार आर्यभट्ट का जन्म आश्मक जनपद में हुआ था। नीलकंठ और भास्कर प्रथम के अनुसार आर्यभट आश्मक जनपद (वर्तमान में महाराष्ट्र) से पाटलिपुत्र आए थे। आश्मक जनपद से होने के कारण उन्हें 'आश्मकाचार्य' और उनकें ग्रंथों को 'आश्मकतंत्र' के नाम से भी जाना जाता है।

ज्ञात हो कि आर्यभट्ट ने दशमलव प्रणाली का आविष्कार किया और शून्य को स्थानधारक के रूप में प्रयोग किया। वह पहले 10 दशमलव स्थानों के नाम बताते हैं और दशमलव का उपयोग करके वर्ग और घनमूल प्राप्त करने के लिए एल्गोरिदम देते हैं। आर्यभट्ट ने शून्य और दशमलव प्रणाली का उपयोग करके गणित को और अधिक सरल और प्रभावी बनाया। गणित में एक शब्द है जिसे दशमलव स्थान मान प्रणाली कहा जाता है जिसे स्थितिगत संकेतन भी कहा जाता है। इसका मतलब है कि किसी संख्या का मूल्य अंक की स्थिति से निर्धारित होता है यानी किसी संख्या का मूल्य वास्तव में अंक और कारक के गुणनफल के बराबर होता है जो अंक की स्थिति से निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए, तीन समान अंक 999 लें। यहाँ दिलचस्प बात यह है कि शब्दों में संख्या को नौ सौ निन्यानबे के रूप में लिखा गया है। यहाँ सैकड़ों दहाई और इकाइयों का निर्धारण अंकों की स्थिति से किया जा रहा है, यानी पहले स्थान पर अंक इकाइयों को दर्शाता है, दूसरे स्थान पर दहाई को दर्शाता है और तीसरे स्थान पर सैकड़ों को दर्शाता है। इसी तरह चौथे स्थान पर कोई भी अंक हजारों को दर्शाता है। स्थान मूल्य प्रणाली की यह अवधारणा, हालांकि पहली बार 'बक्शाली पांडुलिपि' में इस्तेमाल की गई थी। यह आर्यभट्ट के काम में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। लेकिन शून्य के प्रतीक का इस्तेमाल आर्यभट्ट ने नहीं किया था। शून्य का 'अंक' के रूप में इस्तेमाल पहली बार भारत में गुप्त काल के दौरान हुआ था। जॉर्ज इफरा, एक फ्रांसीसी गणितज्ञ ने कहा कि शून्य की अवधारणा और समझ को 'अंक' के रूप में सबसे पहले आर्यभट्ट ने अपने स्थान मूल्य प्रणाली में दिया था, क्योंकि अंकों की गणना प्रणाली स्थान मूल्य प्रणाली या शून्य के बिना संभव नहीं है। इसके अलावा आर्यभट्ट द्वारा वर्ग और घनमूल पर की गई गणना तब तक नहीं की जा सकती जब तक कि संख्याओं को स्थान मूल्य प्रणाली या शून्य के अनुसार व्यवस्थित न किया जाए। शून्य की यह अवधारणा भारतीय गणित की सबसे अच्छी और महान उपलब्धियों में से एक मानी जाती है। शून्य को अंक के रूप में उपयोग करने के नियम सर्वप्रथम ब्रह्मस्फुट सिद्धांत में ब्रम्हगुप्त द्वारा प्रस्तुत किये गये थे, जबकि कुछ मामलों में उनके नियम आधुनिक नियमों से भिन्न हैं, जैसे कि शून्य को शून्य से विभाजित करने पर परिणाम शून्य प्राप्त होता है।

भारत में शून्य का सिद्धांत पूरी तरह से पांचवीं शताब्दी में विकसित हुआ था। माना जाता है कि पांचवीं शताब्दी में ही शून्य की खोज भारत में हुई थी। भारत में मिली बख्शाली पांडुलिपि में शून्य को डॉट की तरह इस्तेमाल किया गया था। ये डॉट संख्या के रूप में नहीं थे बल्कि इन्हें स्थान निर्धारक के रूप में इस्तेमाल किया गया था। पहले इन दस्तावेजों से व्यापारियों को गणना करने में मदद मिलती थी।

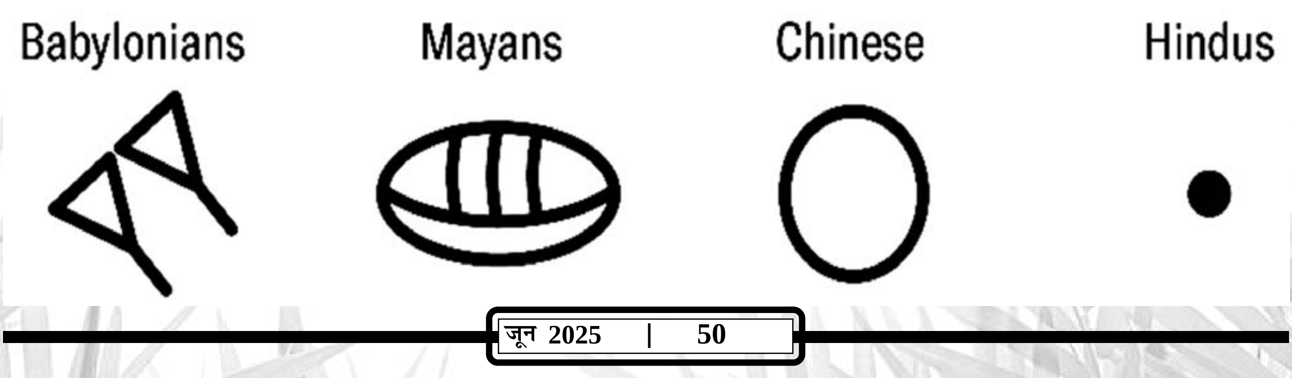

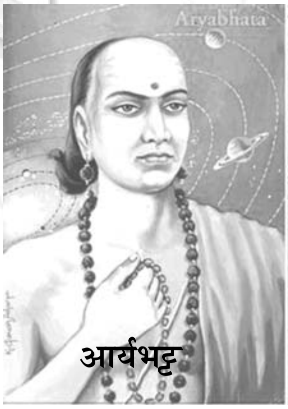

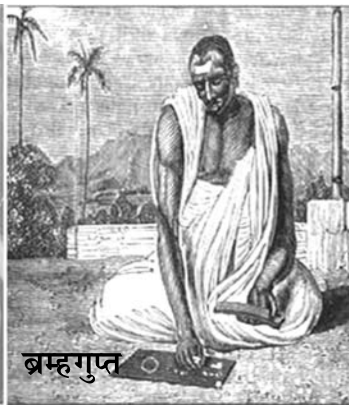

बहरहाल, आर्यभट्ट के शून्य के आविष्कार पर जानने से पहले शून्य के भारतीय इतिहास के बारे में थोड़ा जान लें। संस्कृत के विद्वान और भारतीय गणितज्ञ आचार्य पिंगला ने सबसे पहले संस्कृत शब्द 'शून्य' का इस्तेमाल किया था, जिसे शून्य के रूप में संदर्भित किया जाता है। 'शून्य' शब्द का अर्थ शून्य या खाली होता है। ऐसा माना जाता है कि दशमलव स्थान मान प्रणाली (शून्य शामिल है) का उपयोग करने वाला पहला पाठ सबसे पहले जैन ग्रंथ या ब्रह्मांड विज्ञान में 'लोकविभाग' नाम से इस्तेमाल किया गया था। यहीं पर 'शून्य' शब्द का इस्तेमाल किया गया था। व्यापारियों पर अंकगणित की पुस्तिका 'बक्शाली पांडुलिपि' में शून्य का प्रतीक दर्ज है जो एक बिंदु जैसी संरचना है, जिसमें एक खोखली संरचना होती है जो शून्य या कुछ भी नहीं होने का संकेत देती है। इन पांडुलिपियों को 2017 में रेडियोकार्बन डेटिंग (जो रेडियोकार्बन का उपयोग करके किसी वस्तु की आयु निर्धारित करने की एक विधि है) द्वारा लाया गया था। आयु 224-383 ईस्वी, 680-779 ईस्वी और 885-993 ईस्वी के बीच दर्ज की गई थी। यह शून्य के प्रतीक के उपयोग का दुनिया का सबसे पुराना रिकॉर्ड है। भारत में शून्य का सिद्धांत पूरी तरह से पांचवीं शताब्दी में विकसित हुआ था। माना जाता है कि पांचवीं शताब्दी में ही शून्य की खोज भारत में हुई थी। भारत में मिली बख्शाली पांडुलिपि में शून्य को डॉट की तरह इस्तेमाल किया गया था। ये डॉट संख्या के रूप में नहीं थे बल्कि इन्हें स्थान निर्धारक के रूप में इस्तेमाल किया गया था। पहले इन दस्तावेजों से व्यापारियों को गणना करने में मदद मिलती थी। कुछ और सभ्यताएं भी शून्य को स्थान निर्धारण के लिए इस्तेमाल करती थीं जैसे बेबीलोनियन इसे दो अलग तरह के चिन्हों के रूप में इस्तेमाल करते थे। माया सस्कृति के लोगों ने इसे शेल की तरह इस्तेमाल किया, इससे यह सिद्ध होता है पुरानी सभ्तयाओं को 'कुछ नहीं' की अवधारणा थी, लेकिन उनके पास इसे दर्शाने का कोई प्रतीक नहीं था। भारत के ग्वालियर में नौवीं शताब्दी के एक मंदिर के शिलालेख में वर्णित शून्य को सबसे पुराने उल्लेख के रूप में माना जाता है। 628 ईस्वी में ब्रह्मगुप्त नामक विद्वान और गणितज्ञ ने पहली बार शून्य और उसके सिद्धांतों को परिभाषित किया और इसके लिए एक प्रतीक विकसित किया जो कि संख्याओं के नीचे दिए गए एक डॉट के रूप में था इसके बाद यह भारत से कम्बोडिया पहुंचा और वहां से शून्य का विस्तार चीन और अरब जगत में भी हुआ, जहां से इसे आज का रूप '0' मिला। समय के साथ साथ हरेक अंक को लिखने का तरीका बदला, लेकिन जीरो ऐसी अकेली संख्या है जो हर दौर में एक सी रही।

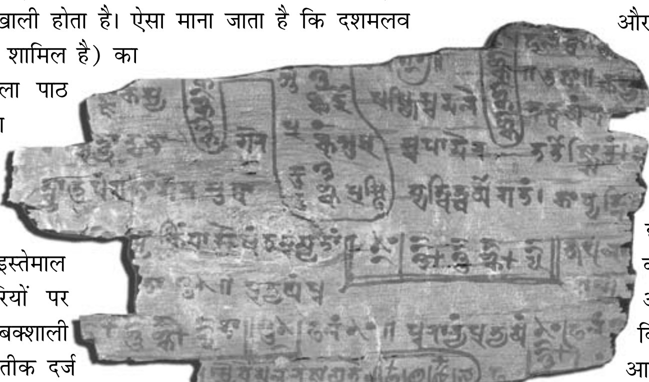

गौरतलब है कि शून्य नहीं होता तो कोई व्यापार सही नहीं पाता। हम अंतरिक्ष में नहीं जा पाते। विभिन्न ग्रहों और पृथ्वी के बीच दूरी का ज्ञान नहीं कर पाते। सूर्य के बारे में कोई जानकारी हासिल नहीं हो पाती। कृत्रिम सेटेलाइट का उपयोग नहीं हो पाता। मनुष्यों की उत्पत्ति का ज्ञान नहीं हो पाता। आधुनिक चिकित्सा नहीं उत्पन्न हो पाती। यानि कि कुछ सही नहीं हो पाता केवल अंधे की तरह भोला भगत बने रहते। बता दें कि जीरो या शून्य एक बहुत ही दिलचस्प नंबर है इसका अपना कोई मूल्य नहीं होता परन्तु जब यह किसी और संख्या के आगे या पीछे लिखा जाता है तब यह उस संख्या के अर्थ को बदल कर रख देता है। किसी अंक से पहले लिखने से इसकी कोई पहचान नहीं, लेकिन अगर अंक के पीछे लग जाए तो उसे एक बड़ी संख्या में बदल देता है उसे दस, पांच सौ, सात हजार आदि में बदल देता है। पहले संख्याएं सिर्फ 9 तक थीं, परन्तु शून्य के आविष्कार ने आगे की संख्याओं के निर्माण में मदद की। जैसे 101, 200, 3005 इत्यादि। यह कहना गलत नहीं होगा कि शून्य के आविष्कार से ही बड़ी संख्याएं बनी और गणित के क्षेत्र में क्रांति आई।

विदित हो कि शून्य की अवधारणा में दो भारतीय गणितज्ञों के योगदान पर केंद्रित है- आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त। माया और बेबीलोन के लोगों द्वारा शून्य को केवल एक स्थानापन्न के रूप में इस्तेमाल करने से लेकर बड़ी संख्याओं को छोटी संख्याओं से अलग करने के लिए एक उपकरण के रूप में, एक अलग अंक के रूप में भारत में आर्यभट्ट नामक व्यक्ति द्वारा 5वीं शताब्दी में स्थापित किया गया था। एक गणितज्ञ और खगोलशास्त्री, आर्यभट्ट ने कई गणितीय अवधारणाओं का योगदान दिया, जो आज के गणित के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिसमें पाई का मान 3.14 होना और समकोण त्रिभुज का सूत्र शामिल है। शून्य की अनुपस्थिति ने सरल गणना करने में कठिनाई पैदा की। इसके बाद 7वीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त नामक व्यक्ति ने गणनाओं में शून्य का उपयोग करने के लिए सबसे पहले ज्ञात तरीकों का विकास किया और इसे पहली बार एक संख्या के रूप में माना। भारत के ग्वालियर में चतुर्भुज मंदिर की दीवारों पर शून्य का उपयोग अंकित किया गया था। एक दीवार पर उकेरे गए अंक 270 और 50 को आज भी देखा जा सकता है और इन्हें इतिहास में दर्ज

दूसरे सबसे पुराने शून्य के रूप में स्थापित किया गया है। ग्वालियर शहर को इस तरह से डिजाइन किया गया था कि मंदिर के चारों ओर के बगीचे इतने बड़े हैं कि हर दिन बगीचे में इतने फूल खिलें कि मंदिर के कर्मचारियों के लिए 50 मालाएँ बनाई जा सकें। जब मंदिर का निर्माण किया गया था तो इसे दीवारों पर अंकित किया गया था और यह 50 ही है, जिसे देखा जा सकता है, लगभग उसी तरह से जिस तरह से हम इसे आज लिखते हैं। जिसे हम अब अंग्रेजी में शून्य कहते हैं, ब्रह्मगुप्त ने उसे 'शून्य' या 'सुन्या' नाम दिया, जो संस्कृत शब्द है। जिसका अर्थ है खालीपन या शून्यता। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने अपनी रचनाएँ संस्कृत में लिखीं, जो भारत की प्राचीन और शास्त्रीय भाषा है। उनके द्वारा संख्याओं का प्रयोग आज की अंग्रेजी में इस्तेमाल किए जाने वाले अंकों से काफी अलग लगता होगा। हालाँकि, संस्कृत का बहुत बड़ा महत्व था। अंग्रेजी अंक प्रणाली को लिखने के तरीके पर इनका बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है और इसलिए इनमें काफी समानताएं हैं।

ब्रम्हगुप्त

भारतीय संस्कृति में एक विचार है कि व्यक्ति के अंदर 'कुछ नहीं' या शून्य है। शून्य को अंक के रूप में मानने से बहुत पहले, इस दार्शनिक अवधारणा को हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में पढ़ाया जाता था और ध्यान के माध्यम से इसका अभ्यास किया जाता था। प्राचीन हिंदू प्रतीक, 'बिंदी' या 'बिंदु', बीच में एक बिंदु वाला एक चक्र इसका प्रतीक था और संभवत: यही कारण था कि सूर्य के प्रतीक के रूप में अंडाकार का उपयोग किया गया। यह सुझाव दिया गया है कि शून्य की अवधारणा पर इस सांस्कृतिक और दार्शनिक प्रभाव ने भारत को वह विकसित करने की अनुमति दी जिसके बारे में पिछली सभ्यताओं ने नहीं सोचा था। ब्रह्मगुप्त यह भी दिखाने वाले पहले व्यक्ति थे कि गणना के माध्यम से शून्य तक पहुँचा जा सकता है। उन्होंने इन नियमों को अपनी पुस्तक 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में लिखा। इसलिए वे एक और महत्वपूर्ण छलांग लगाने में सक्षम थे-ऋणात्मक संख्याओं के निर्माण में, जिसे उन्होंने शुरू में 'ऋण' कहा था। ब्रह्मगुप्त ने संख्याओं के ऊपर छोटे बिंदु लगाए ताकि यह दर्शाया जा सके कि वे ऋणात्मक हैं, आज के समय के विपरीत जहाँ माइनस चिह्न का उपयोग किया जाता है। ऋणात्मक संख्याओं का उपयोग 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में दिखाया गया था। ब्रह्मगुप्त ने द्विघात सूत्र बनाने के लिए उनके उपयोग का भी प्रदर्शन किया और ऋणात्मक संख्याओं और शून्य दोनों को शामिल करने वाली गणनाओं के लिए नियमों का प्रदर्शन किया।

✯ शून्य और ऋणात्मक संख्याओं के साथ जोड़ और घटाव :-

- ☞ जब किसी संख्या में शून्य जोड़ा जाता है या घटाया जाता है, तो संख्या अपरिवर्तित रहती है; और शून्य से गुणा की गई संख्या शून्य हो जाती है।
- ☞ ऋण शून्य से घटा हुआ ऋण है।
- ☞ भाग्य शून्य से घटाया गया भाग्य है।
- ☞ शून्य शून्य से घटाया गया शून्य है।
- ☞ शून्य में से घटाया गया ऋण एक भाग्य है।
- ☞ शून्य से घटाया गया भाग्य ऋण है।

✯ शून्य और ऋणात्मक संख्याओं से विभाजन और गुणा :-

- ☞ धनात्मक या ऋणात्मक संख्याओं को शून्य से विभाजित करने पर वह भिन्न बनती है, जिसका हर शून्य होता है।
- ☞ शून्य को ऋणात्मक या धनात्मक संख्याओं से विभाजित करने पर या तो शून्य प्राप्त होता है, या इसे अंश के रूप में शून्य तथा हर के रूप में परिमित मात्रा वाली भिन्न के रूप में व्यक्त किया जाता है।
- ☞ शून्य को शून्य से भाग देने पर शून्य प्राप्त होता है।
- ☞ शून्य और ऋण या भाग्य का गुणनफल शून्य होता है।
- ☞ शून्य और शून्य का गुणनफल शून्य होता है।
- ☞ दो भाग्यों का गुणनफल या भागफल एक भाग्य होता है।
- ☞ दो ऋणों का गुणनफल या भागफल एक भाग्य होता है।
- ☞ ऋण और भाग्य का गुणनफल या भागफल ऋण है।
- ☞ भाग्य और ऋण का गुणनफल या भागफल ऋण होता है।

जब ब्रह्मगुप्त ने 0 को 0 से भाग देने का प्रयास किया, तो वह

अगर आर्यभट्ट ने शून्य की खोज नहीं की होती तो जिस उपकरण के बारे में आप यह पढ़ रहे हैं, उसका आविष्कार नहीं हो पाता। बाइनरी सिस्टम के भीतर शून्य और '1' के उपयोग ने कंप्यूटिंग को संभव बनाया है। जब आप कंप्यूटर को सूक्ष्म स्तर पर देखते हैं तो आप देखते हैं कि वे सर्किट से बने होते हैं जो या तो 'चालू' या 'बंद' होते हैं। 'चालू' स्थिति को '1' और 'बंद' स्थिति को '0' द्वारा दर्शाया जाता है और प्रोग्रामिंग कोड जो कंप्यूटर को नियंत्रित करने के लिए लिखा जाता है, जब इसे इसके सरलतम रूप में घटाया जाता है, तो यह 1s और 0s से बना होता है। यह कल्पना करना कठिन है कि शून्य की अवधारणा के बिना कंप्यूटर कैसे बनाया जा सकता था। इसलिए, शून्य के आविष्कार के बिना आज हम जो कुछ भी जानते हैं, वह संभव नहीं होता।

0 के परिणाम पर पहुंचे। हालाँकि, अधिकांश आधुनिक गणितज्ञ यह तर्क देंगे कि 0 को 0 से भाग देने पर अपरिभाषित, या अनिश्चित रूप होता है। इस अपवाद के बावजूद, ब्रह्मगुप्त की संख्या शून्य पर बाकी की समझ बिल्कुल वैसी ही है जैसी हम आज इसकी अवधारणा बनाते हैं। शून्य की अवधारणा धीरे-धीरे पूर्व में चीन में फैल गई। फिर पश्चिम में मध्य पूर्व तक पहुँच गई और अंत में, अपनी अवधारणा से आधी सदी से भी ज्यादा समय बाद, शून्य यूरोप में पहुँच गया, जहाँ इसके महत्व को अंततः पश्चिमी संस्कृति द्वारा मान्यता दी गई, जो पहले शून्य के विचार को नापसंद करती थी, इसे अर्थहीन या यहाँ तक कि शैतानी भी कहती थी। 1200 ई. में, इतालवी गणितज्ञ फिबोनाची, जिन्हें मध्य युग का सबसे प्रतिभाशाली पश्चिमी गणितज्ञ माना जाता है, ने भारतीय गणित और उनके शून्य के उपयोग के बारे में लिखा : ***"The method of the Indians surpasses any known method to compute. It's a marvelous method. They do their computations using nine figures and the symbol zero."***

शून्य का शाब्दिक अर्थ में कोई मूल्य नहीं होने के बावजूद, इसकी अवधारणा ने गणित को आज के रूप में विकसित होने की अनुमति दी है। इसके संरक्षण ने आधुनिक गणित के तीन स्तंभों को जन्म दिया: बीजगणित, एल्गोरिदम और कलन। कलन (निरंतर परिवर्तन का गणितीय अध्ययन) के उपयोग ने, जिसके लिए शून्य महत्वपूर्ण है, इंजीनियरिंग और आधुनिक प्रौद्योगिकी को संभव बनाया है। बाइनरी सिस्टम के भीतर शून्य और एक के उपयोग ने कंप्यूटिंग को संभव बनाया है। इसलिए, शून्य के आविष्कार के बिना आज हम जो कुछ भी जानते हैं, वह संभव नहीं होता। जिस उपकरण के बारे में आप यह पढ़ रहे हैं, उसका आविष्कार नहीं हो पाता, अगर आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भारत के शून्य के विचार के प्रति आकर्षण न होता। वही आज हमारे गणित पर शून्य का प्रभाव दोगुना है। यह हमारी संख्या प्रणाली में एक महत्वपूर्ण प्लेसहोल्डर अंक है। यह अपने आप में एक उपयोगी संख्या है।

यहाँ मेरा क्या मतलब है इसका एक उदाहरण है:- संख्या 103 के बारे में सोचें। इस मामले में शून्य का अर्थ है 'दहाई के कॉलम में कुछ

Thousands	Hundreds	Tens	Ones
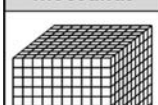			
1	0	0	0

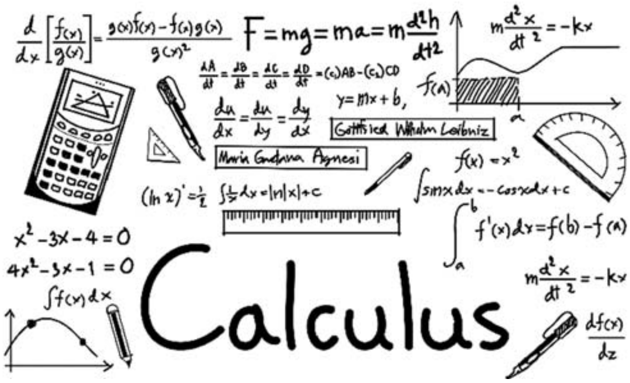

भी नहीं है।' यह एक प्लेसहोल्डर है, जो हमें यह समझने में मदद करता है कि यह संख्या एक सौ तीन है न कि 13 । ठीक है, आप सोच रहे होंगे, यह बुनियादी है, लेकिन प्राचीन रोम के लोग यह नहीं जानते थे। क्या आपको याद है कि रोमनों ने अपनी संख्याएँ कैसे लिखीं? रोमन अंकों में 103 CIII है। 99 नंबर XCIX है। आप CIII + XCIX जोड़ने का प्रयास करें। यह बेतुका है। प्लेसहोल्डर नोटेशन वह है जो हमें संख्याओं को आसानी से जोड़ने, घटाने और अन्यथा हेरफेर करने की अनुमति देता है। प्लेसहोल्डर नोटेशन वह है जो हमें एक कागज पर जटिल गणित की समस्याओं को हल करने की अनुमति देता है। जब किसी संख्या में शून्य जोड़ा जाता है या किसी संख्या से घटाया जाता है, तो संख्या अपरिवर्तित रहती है; और शून्य से गुणा की गई संख्या शून्य हो जाती है। किसी भी ग्राफ के बारे में सोचें जो 0, 0 से शुरू होने वाले गणितीय फंक्शन को प्लॉट करता है। रेखांकन की यह अब-सर्वव्यापी पद्धति का आविष्कार पहली बार 17वीं शताब्दी में शून्य के यूरोप में फैलने के बाद हुआ था। उस सदी में गणित का एक नया क्षेत्र भी देखा गया जो शून्य पर निर्भर करता है: CALCULUS। आप हाई स्कूल या कॉलेज के गणित से याद कर सकते हैं कि CALCULUS में सबसे सरल कार्य व्युत्पन्न है। एक व्युत्पन्न केवल एक रेखा का स्लोप है जो एक ग्राफ पर एक बिंदु के साथ प्रतिच्छेद करता है। एक बिंदु के स्लोप की गणना करने के लिए, आपको आमतौर पर तुलना के बिंदु की आवश्यकता होती है: रन ओवर रन। आइजैक न्यूटन और गॉटफ्रीड लाइबनिज ने जब कैलकुलस का आविष्कार किया तो उन्होंने पाया कि एक ही बिंदु पर उस स्लोप की गणना करना और भी करीब, करीब और करीब होना शामिल है लेकिन वास्तव में कभी नहीं शून्य से विभाजित करना। वही जब आप कंप्यूटर को सूक्ष्म स्तर पर देखते हैं तो आप देखते हैं कि वे सर्किट से बने होते हैं जो या तो 'चालू' या 'बंद' होते हैं। 'चालू' स्थिति को "1" और 'बंद' स्थिति को "0" द्वारा दर्शाया

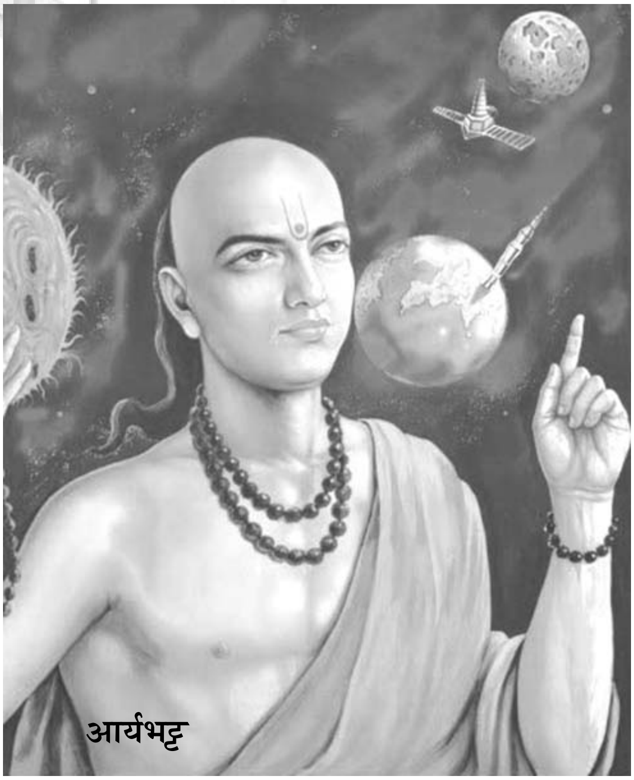

आर्यभट्ट

हैंड्रिक केर्ण

जाता है और प्रोग्रामिंग कोड जो कंप्यूटर को नियंत्रित करने के लिए लिखा जाता है, जब इसे इसके सरलतम रूप में घटाया जाता है, तो यह 1s और 0s से बना होता है। यह कल्पना करना कठिन है कि शून्य की अवधारणा के बिना कंप्यूटर कैसे बनाया जा सकता था और हम इसे दर्शाने के लिए किस अंक का उपयोग करते हैं। संक्षिप्त रूप में इतना कहा जा सकता है कि 0 एक ऐसा अंक है जिसका मतलब तो शून्य होता है, अर्थात कुछ नहीं। लेकिन किसी संख्या के आगे या पीछे लगकर उसके महत्व को घटा या बढ़ा देता है। वही गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, जावा, C++ जैसे कई भाषाओं में इसका इस्तेमाल किया जाता है। इसका कंप्यूटर में इस्तेमाल होने वाली बाइनरी भाषा में विशेष महत्त्व है। इसके बिना कंप्यूटर में डेटा को स्टोर करना मुश्किल है क्योंकि कंप्यूटर बाइनरी भाषा को ही समझता है जिसका बाद में वो अन्य भाषा में रूपांतरण कर देता है। इसके बिना कंप्यूटर चल नहीं सकता। इसका मतलब ये भी है कि कंप्यूटर के साथ-साथ उसके मदद से बनाये गए अन्य उपकरण जैसे कैलकुलेटर, टेलीविजन, मोबाइल, एटीएम मशीन, रोबोट, सैटेलाइट, चिप पर चलने वाले सभी उपकरण, इत्यादि चल नहीं सकेंगे। अत: यह कहा जा सकता है कि 0 के बिना वैज्ञानिक रूप से हम काफी पिछड़ जाएंगे।

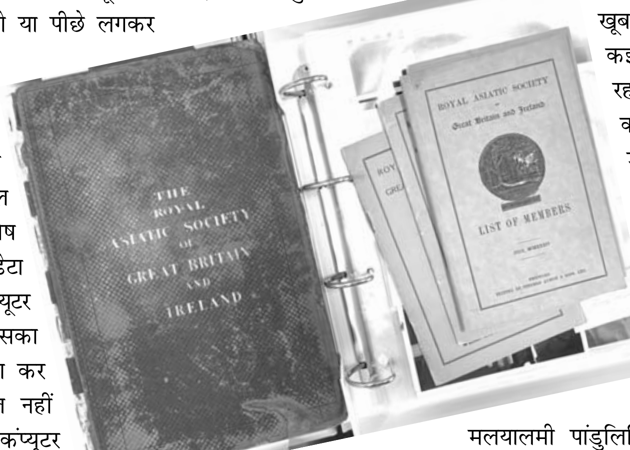

गौरतलब है कि आर्यभट्ट ने कुल तीन ग्रंथों की रचना की थी। जिनमे से तीन ग्रन्थ दशगीतिका, आर्यभटीय एवं तन्त्र के बारे में वर्तमान में जानकारी उपलब्ध हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार उन्होंने 'आर्यभट्ट सिद्धांत' नाम से एक और ग्रन्थ की रचना की थी, परन्तु वर्तमान में इस ग्रन्थ के मात्र 34 श्लोक ही उपलब्ध हैं। इन 34 श्लोकों में आर्यभट्ट ने खगोलीय यंत्रों के बारे में जानकारी दी है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार आर्यभट्ट ने एक-दो ग्रन्थों की रचना और की थी। बहरहाल, आर्यभट्ट की सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं क्रांतिकारी कृतित्व 'आर्यभटीय' है। इस कृति के लेखन के बाद पद्य शैली और सूत्र शैली में होने के कारण इसका खूब प्रचार हुआ। परन्तु मध्यकाल तक आते-आते कई सदियों तक आर्यभटीय ग्रन्थ लुप्तप्राय रहा। वर्ष 1865 में डॉ. भाऊ दाजी ने आर्यभटीय की तीन ताड़पत्र पांडुलिपियों को ढूढ़ निकाला। डॉ. भाऊ दाजी ने आर्यभट्ट एवं आर्यभटीय पर गहन अध्ययन एवं शोध करने के पश्चात 'जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' में एक शोधपत्र प्रकाशित करवाया। तब जाकर लोगों को आर्यभट्ट और उनके कृति के बारे में प्रथम प्रामाणिक जानकारी प्राप्त हुई। यूरोपीय विद्वान हैंड्रिक केर्ण ने आर्यभटीय की मलयालमी पांडुलिपियों का उपयोग करके पहली बार वर्ष 1874 में नीदरलैंड से मुद्रित एवं परमेश्वर के टीका सहित प्रकाशित करवाया। वर्ष 1930 में शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस ने फ्रांसीसी भाषा में आर्यभटीय का प्रकाशन किया। पंडित बलदेव मिश्र ने हिंदी व्याख्या सहित आर्यभटीय को वर्ष 1966 में पटना में प्रकाशित करवाया।

बहरहाल, आर्यभट्ट उन पहले व्यक्तियों में से थे जिन्होंने बीजगणित (एलजेबरा) का प्रयोग किया। आपको यह जानकार हैरानी होगी कि उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'आर्यभटीय' (गणित की पुस्तक) को कविता के रूप में लिखा। यह प्राचीन भारत की बहुचर्चित पुस्तकों में से एक है। इस पुस्तक

आर्यभट्ट के प्रयासों द्वारा ही खगोल विज्ञान को गणित से अलग किया जा सका। बीजगणित में भी सबसे पुराना ग्रंथ आर्यभट्ट का है। आर्यभट्ट ने दशमलव प्रणाली का विकास किया। उन्होंने सबसे पहले 'पाई'(   ) की कीमत निश्चित की और उन्होंने ही सबसे पहले 'साइन' (SINE) के 'कोष्टक' दिए। गणित के जटिल प्रश्नों को सरलता से हल करने के लिए उन्होंने ही समीकरणों का आविष्कार किया, जो पूरे विश्व में प्रख्यात हुआ। एक के बाद ग्यारह शून्य जैसी संख्याओं को बोलने के लिए उन्होंने नई पद्धति का आविष्कार किया। बीजगणित में उन्होंने कई संशोधन, संवर्धन किए और गणित ज्योतिष का 'आर्य सिद्धांत' प्रचलित किया। वृद्धावस्था में आर्यभट्ट ने 'आर्यभट्ट सिद्धांत' नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में रेखागणित, वर्गमूल, घनमूल जैसी गणित की कई बातों के अलावा खगोल शास्त्र की गणनाएं और अंतरिक्ष से संबंधित बातों का भी समावेश है। आज भी 'हिन्दू पंचांग' तैयार करने में इस ग्रंथ की मदद ली जाती है।

में दी गयी ज्यादातर जानकारी खगोलशास्त्र और गोलीय त्रिकोणमिति से संबंध रखती है। 'आर्यभटीय' में अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति के 33 नियम भी दिए गए हैं। दिगर बात है कि आर्यभट्ट द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध ग्रंथ आर्यभटीय है, जिसमें गणित और खगोल विज्ञान के सिद्धांतों का विवरण दिया गया है। उन्होंने त्रिकोणमिति के सिद्धांतों को विकसित किया, जो आज भी गणित और खगोल विज्ञान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह गणित और खगोल विज्ञान पर एक विस्तृत ग्रन्थ है। आर्यभटीय के गणितीय भाग में अंकगणित, बीजगणित, समतल त्रिकोणमिति, गोलीय त्रिकोणमिति, भिन्न, द्विघात समीकरण, घात-श्रेणी के योग और ज्या की तालिका शामिल है। आर्यभटीय उनके द्वारा किये गए कार्यों का प्रत्यक्ष विवरण प्रदान करता है। ऐसा माना जाता है कि आर्यभट्ट ने स्वयं इसे यह नाम नही दिया होगा बल्कि बाद के टिप्पणीकारों ने आर्यभटीय नाम का प्रयोग किया होगा। इसका उल्लेख भी आर्यभट्ट के शिष्य भास्कर प्रथम ने अपने लेखों में किया है। इस ग्रन्थ को कभी-कभी आर्य-शत-अष्ट (अर्थात आर्यभट्ट के 108-जो की उनके पाठ में छंदों कि संख्या है) के नाम से भी जाना जाता है। आर्यभटीय में वर्गमूल, घनमूल, समान्तर श्रेणी तथा विभिन्न प्रकार के समीकरणों का वर्णन है। वास्तव में यह ग्रन्थ गणित और खगोल विज्ञान का एक संग्रह है। आर्यभटीय के गणितीय भाग में अंकगणित, बीजगणित, सरल त्रिकोणमिति और गोलीय त्रिकोणमिति शामिल हैं। इसमे सतत भिन्न (कँटीन्यूड फरेक्शन्स), द्विघात समीकरण (क्वड्रेटिक इक्वेशंस), घात श्रृंखला के योग (सम्स ऑफ पावर सीरीज) और ज्याओं की एक तालिका (टेबल ऑफ सीनेस) शामिल हैं। आर्यभटीय में कुल 108 छंद है, साथ ही परिचयात्मक 13 अतिरिक्त हैं। यह चार पदों अथवा अध्यायों में विभाजित है :-

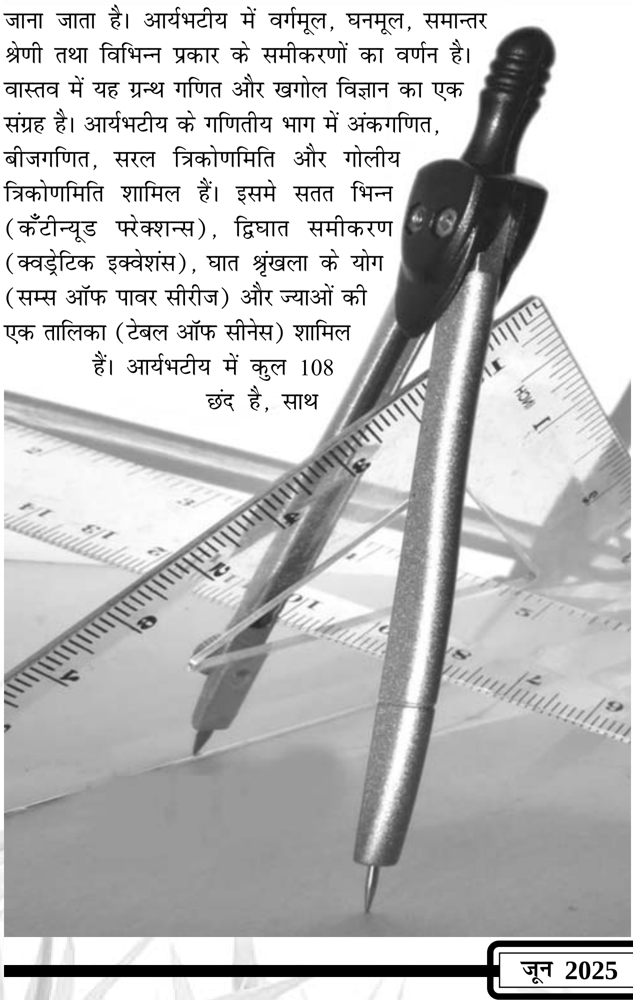

☆ **दशगीतिकापाद :** यह आर्यभटीय के चार भागों में से सबसे छोटा भाग है। इसमें कुल 13 श्लोक हैं। इनमें से 10 श्लोक गीतिका छंद में है, इसलिए इस भाग को 'दशगीतिका सूत्र' के नाम से भी जाना जाता है। इस भाग के प्रथम श्लोक में ब्रह्म और परब्रह्म की वंदना है। आगे के एक ही श्लोक में

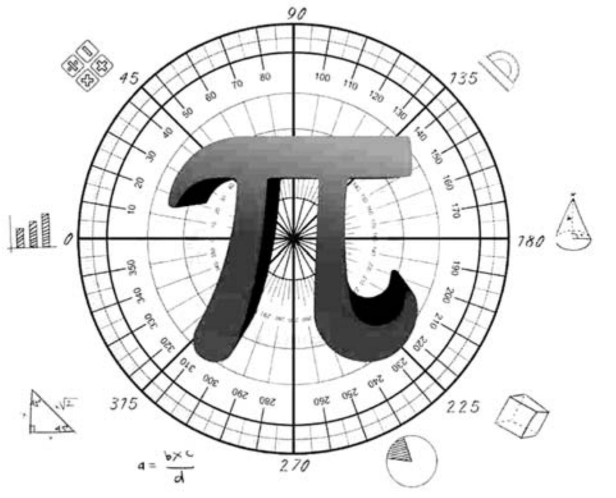

आर्यभट्ट अक्षरों द्वारा संख्याओं को लिखने की अपनी नवीन अक्षरांक पद्धति को प्रस्तुत करते हैं। शेष श्लोकों में आर्यभट्ट ने सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, शनि, बृहस्पति, शुक्र और बुध के चक्कर (भगण) और कल्प, महायुग एवं त्रिकोणमिति इत्यादि की चर्चा की है।

☆ **गणितपाद :** इस भाग में अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित पर संक्षिप्त में चर्चा की गयी है। इसमें कुल 33 श्लोक हैं। इसके श्लोकों में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, त्रिभुज का क्षेत्रफल, त्रिभुजाकार शंकु का क्षेत्रफल, वृत्त का क्षेत्रफल, वृत्त की त्रिज्या, गोले का आयतन, समान्तर श्रेणी, चार दशमलव अंकों तक पाई (   ) का शुद्ध मान आदि का गणितीय विवेचन किया गया है।

☆ **कालक्रियापाद :** कालक्रियापाद का अभिप्राय है काल गणना। इस भाग में कुल 25 श्लोक है। इसमें काल एवं वृत्त के विभाजन और मासों, वर्षों, युगों, महायुगों के सम्बन्ध में बताया गया है। इसके 20 श्लोक ग्रहीय गतियों तथा खगोलशास्त्र सम्बन्धी अन्य विषयों पर केन्द्रित है।

☆ **गोलपाद :** यह सर्वाधिक प्रसिद्ध, सबसे बड़ा एवं ग्रंथ का अंतिम भाग है। इस भाग में कुल 50 श्लोक हैं। इसमें खगोल के विभिन्न वृत्तों को समझाया गया है और ग्रहों, चन्द्रमा और पृथ्वी के गतियों को स्पष्ट किया गया है। इसी भाग में आर्यभट्ट ने ग्रहणों के सही कारण एवं अन्य नवीनतम खगोलीय अवधारणाओं को प्रस्तुत किया है। जिसके बारे में आगे चर्चा करेंगें। आर्यभटीय पुस्तक में कुल 121 श्लोक हैं और ये 121 श्लोक खगोल विज्ञान और उसके तथ्यों के बारे में बताते हैं। आप गणित अनुभाग में 66

आर्यभट्ट ने गणित के आविष्कारों और सिद्धांतों में कई योगदान दिए। गणित में उनके महत्वपूर्ण योगदान और उपलब्धियों के कारण उन्हें भारतीय गणित का राजा भी कहा जाता है। गणित के क्षेत्र में उनकी कुछ महत्वपूर्ण खोजें इस प्रकार हैं : स्थानीय मान प्रणाली और शून्य, त्रिकोणमिति, बीजगणित, पाई p का सन्निकटन, अनिर्धारित समीकरण।

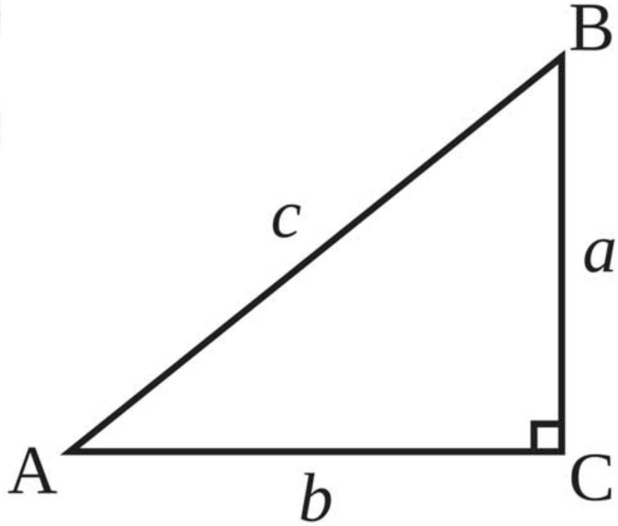

गणितीय नियमों के साथ 33 श्लोक पा सकते हैं। 50 श्लोकों में से कालक्रिया पांड (25 श्लोक), गोलापद (25 श्लोक), गीतिकापद (13 श्लोक) और गणितपद (33 श्लोक) हैं, जो आर्यभटीय के चार अध्यायों का निर्माण करते हैं। इस पाठ में अंतरिक्ष में खगोलीय पिंडों की स्थिति, सौर मंडल की प्रकृति और सूर्य तथा चंद्र ग्रहण के कारणों के अलावा अन्य पहलुओं का मानकीकृत औचित्य शामिल है। आर्यभट्ट ने त्रिकोणमिति और बीजगणित के क्षेत्र में कुछ प्रमुख योगदान दिए हैं। उन्होंने समीकरणों और सूत्रों को सरल बनाया। उस समय जटिल गणित के सरल समाधान दिए जाते थे। उदाहरण के लिए, पहले n नंबरों, उनके वर्गों और घनों का अनुमान लगाना। आर्यभट्ट ने शून्य की मूल अवधारणा को समझा और स्थानीय मान प्रणाली का आविष्कार किया। आर्यभट्ट आर्यभटीय में अंकों की एक प्रणाली के आविष्कारक थे। इस प्रणाली में, उन्होंने संख्याओं को दर्शाने के लिए भारतीय शब्दों पर आधारित वर्णमाला से शब्द लिखे। यह प्रणाली एक अंक प्रणाली थी जो वर्णमाला

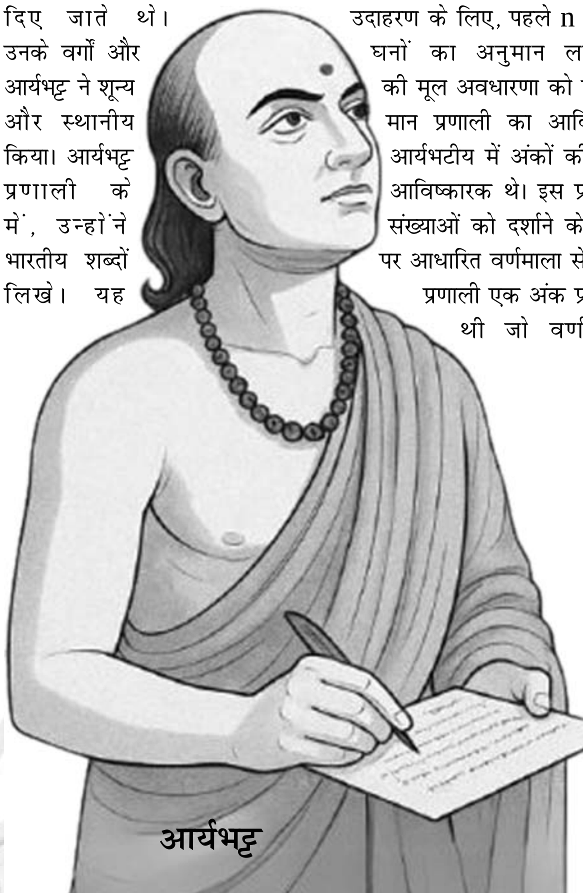
आर्यभट्ट

संकेतन का उपयोग करके 1018 के बीच की संख्याओं की अभिव्यक्ति की अनुमति देती थी। वह शून्य की अवधारणा और स्थान मान प्रणाली के बारे में भी जानकार थे। वही आर्यभटीय में आर्यभट्ट ने वर्गों और घनों की श्रृंखला के योग के लिए शानदार परिणाम प्रदान किए। बता दें कि आर्यभट्ट डायोफैंटाइन समीकरण को हल करने वाले पहले वैज्ञानिक थे। एक से अधिक अज्ञात पूर्णांक वाले समीकरण को डायोफैंटाइन समीकरण कहा जाता है। उदाहरण के लिए ax+by=c एक सरल डायोफैंटाइन समीकरण है। इस समीकरण में, पूर्णांक a, b, और c निर्दिष्ट हैं, जबकि x और y अज्ञात हैं। अपनी पुस्तक, आर्यभटीय में, उन्होंने by= axe + c और by = axe-c के रूप में डायोफैंटाइन समीकरणों के पूर्णांक समाधानों को देखा।

बहरहाल, आर्यभट्ट का भारत और विश्व के गणित और ज्योतिष

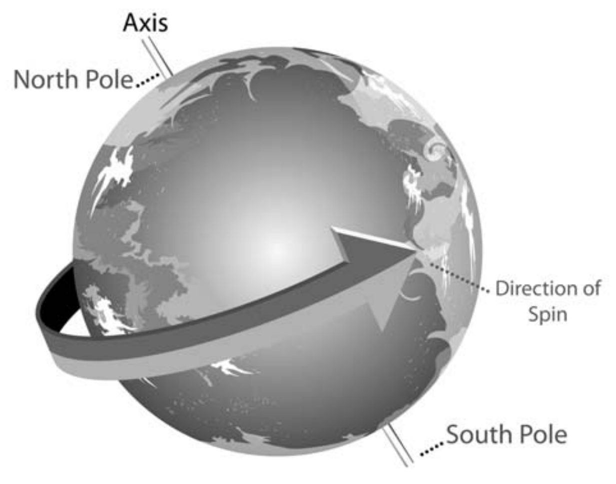

सिद्धान्त पर गहरा प्रभाव रहा है। भारतीय गणितज्ञों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले आर्यभट्ट ने 120 आर्याछंदों में ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांत और उससे संबंधित गणित को सूत्ररूप में अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'आर्यभटीय' में प्रस्तुत किया है। उन्होंने गणित के क्षेत्र में महान आर्किमिडीज से भी अधिक सटीक 'पाई' के मान को निरूपित किया और खगोलविज्ञान के क्षेत्र में पहली बार यह घोषित किया गया कि पृथ्वी स्वयं अपनी धुरी पर घूमती है। स्थान-मूल्य अंक प्रणाली आर्यभट्ट के कार्यों में स्पष्ट रूप से विद्यमान थी। हालांकि उन्होंने शुन्य दर्शाने के लिए किसी प्रतीक का प्रयोग नहीं किया, परन्तु गणितज्ञ ऐसा मानते हैं कि रिक्त गुणांक के साथ, दस की घात के लिए एक स्थान धारक के रूप में शून्य का ज्ञान आर्यभट्ट के स्थान-मूल्य अंक प्रणाली में निहित था। यह हैरान और आश्चर्यचकित करने वाली बात है कि आजकल के उन्नत साधनों के बिना ही उन्होंने लगभग डेढ़ हजार साल पहले ही ज्योतिषशास्त्र की खोज की थी। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, कोपर्निकस (1473 से 1543 ई.) द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत की खोज आर्यभट्ट हजार वर्ष पहले ही कर चुके थे। "गोलपाद" में आर्यभट ने सर्वप्रथम यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। इस महान

गणितज्ञ के अनुसार किसी वृत्त की परिधि और व्यास का संबंध 62,832:20,000 आता है जो चार दशमलव स्थान तक शुद्ध है। आर्यभट्ट कि गणना के अनुसार पृथ्वी की परिधि 39,968.0582 किलोमीटर है, जो इसके वास्तविक मान 40,075.0167 किलोमीटर से केवल 0.2 % कम है। हम सभी इस बात को जानते हैं कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है और इसी कारण रात और दिन होते हैं। मध्यकाल में 'निकोलस कॉपरनिकस' ने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था पर इस वास्तविकता से बहुत कम लोग ही परिचित होगें कि 'कॉपरनिकस' से लगभग 1 हजार साल पहले ही आर्यभट्ट ने यह खोज कर ली थी कि पृथ्वी गोल है और उसकी परिधि अनुमानतः 24835 मील है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के हिन्दू धर्म की मान्यता को आर्यभट्ट ने गलत सिद्ध किया। इस महान वैज्ञानिक और गणितज्ञ को यह भी ज्ञात था कि चन्द्रमा और दूसरे ग्रह सूर्य की किरणों से प्रकाशमान होते हैं। आर्यभट्ट ने अपने सूत्रों से यह सिद्ध किया कि एक वर्ष में 366 दिन नहीं वरन 365.2951 दिन होते हैं। आर्यभट्ट ने पृथ्वी के घूर्णन का पता लगाया और यह भी बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। उन्होंने खगोल विज्ञान के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए, जैसे कि सूर्य और चंद्र ग्रहण की भविष्यवाणी, ग्रहों की गति का पता लगाना और नक्षत्रों के बारे में जानकारी देना। आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ में लिखा था कि पृथ्वी गोल है और वह अपनी धुरी पर घूमती है। उन्होंने यह भी बताया कि सूर्य के चारों ओर ग्रहों की गति पृथ्वी के घूर्णन के कारण होती है। आर्यभट्ट ने त्रिकोणमिति के सिद्धांतों का उपयोग करके खगोलीय पिंडों की दूरी और आकार की गणना की।

आर्यभट्ट ने पाई (3.14) का अनुमानित मान दिया। इस खोज को संभवतः आर्यभट्ट की पुस्तक के दूसरे भाग में समझाया गया है। उन्होंने बताया कि 100 में 4 जोड़कर, फिर 8 से गुणा करके और 62,000 जोड़कर, कोई 20,000 व्यास वाले वृत्त की परिधि का अनुमान लगा सकता है। इस गणना से 5 सार्थक अंकों की परिशुद्धता के साथ पाई का मान 62832/20000=3.1416 प्राप्त होता है। 3. 14159265 आठ दशमलव बिंदुओं तक सही है।

आर्यभट्ट का भारत और विश्व के गणित और ज्योतिष सिद्धान्त पर गहरा प्रभाव रहा है। वह ज्यामितीय मापों में पाई ( ) के लिए 62,832/20,000 (= 3.1416) का उपयोग करते हैं, जो वास्तविक मान 3.14159 के बहुत करीब है। आर्यभट्ट द्वारा दिया गया 'पाई' का मान आधुनिक मान के बहुत करीब है और प्राचीनों में सबसे सटीक है। इसके अलावा, यह भी माना जाता है कि आर्यभट्ट जानते थे कि 'पाई' का मान अपरिमेय है। आर्यभट्ट ने 'पाई' (3.14) का अनुमानित मान दिया। इस खोज को संभवतः आर्यभट्ट की पुस्तक के दूसरे भाग में समझाया गया है। उन्होंने बताया कि 100 में 4 जोड़कर, फिर 8 से गुणा करके और 62,000 जोड़कर, कोई 20,000 व्यास वाले वृत्त की परिधि का अनुमान लगा सकता है। इस गणना से 5 सार्थक अंकों की परिशुद्धता के साथ पाई का मान 62832/20000=3.1416 प्राप्त होता है। 3.14159265 आठ दशमलव बिंदुओं तक सही है।

''उदयो यो लंकायां सोस्तमयः सवितुरेव सिद्धपुरे।
मध्याह्नो यवकोट्यां रोमकविषयेऽर्धरात्रः स्यात्॥''

(आर्यभट्टीय गोलपाद-13)

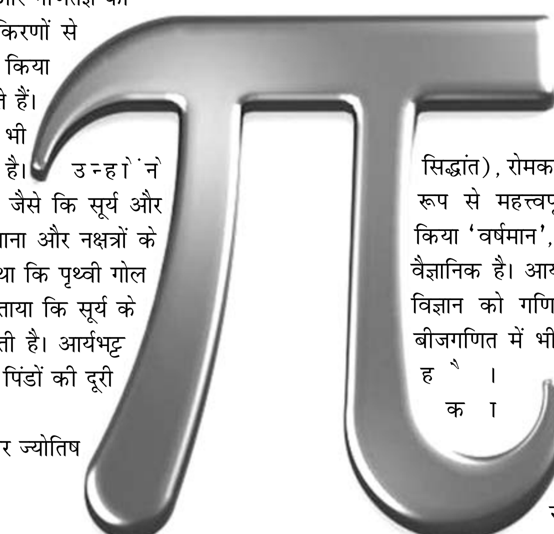

अर्थात जब लंका में सूर्योदय होता है, तब सिद्धपुर में सूर्यास्त हो जाता है। आर्यभट्ट के बॉलिस सिद्धांत (सूर्य चंद्रमा ग्रहण के सिद्धांत), रोमक सिद्धांत और सूर्य सिद्धांत विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। आर्यभट्ट द्वारा निश्चित किया 'वर्षमान', 'टॉलमी' की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है। आर्यभट्ट के प्रयासों द्वारा ही खगोल विज्ञान को गणित से अलग किया जा सका। बीजगणित में भी सबसे पुराना ग्रंथ आर्यभट्ट का है। आर्यभट्ट ने दशमलव प्रणाली का विकास किया। उन्होंने सबसे पहले 'पाई' ( ) की कीमत निश्चित की और उन्होंने ही सबसे पहले 'साइन' (SINE) के 'कोष्टक' दिए। गणित के जटिल प्रश्नों को सरलता से हल करने के लिए उन्होंने ही समीकरणों का आविष्कार किया, जो पूरे विश्व में प्रख्यात हुआ। एक के बाद ग्यारह शून्य जैसी संख्याओं को बोलने के लिए उन्होंने नई पद्धति का आविष्कार किया। बीजगणित में उन्होंने कई संशोधन, संवर्धन किए और गणित ज्योतिष का 'आर्य सिद्धांत' प्रचलित किया। वृद्धावस्था में आर्यभट्ट ने 'आर्यभट्ट सिद्धांत' नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में रेखागणित, वर्गमूल, घनमूल जैसी गणित की कई बातों के अलावा खगोल शास्त्र की गणनाएं और अंतरिक्ष से संबंधित बातों का भी समावेश है। आज भी 'हिन्दू पंचांग' तैयार करने में इस ग्रंथ की मदद ली जाती है। आर्यभट्ट के सिद्धांत पर 'भास्कर प्रथम' ने टीका लिखी। भास्कर के 3 अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं-महाभास्कर्य, लघुभास्कर्य एवं भाष्य। खगोल और गणितशास्त्र इन दोनों क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के स्मरणार्थ भारत के प्रथम उपग्रह का नाम आर्यभट्ट रखा गया था। आर्यभट्ट ने सूर्य से विविध ग्रहों की दूरी के बारे में बताया है। वह आजकल के माप से मिलता-जुलता है। आज पृथ्वी से सूर्य की दूरी लगभग 15 करोड़ किलोमीटर मानी जाती है। इसे ऑस्ट्रोनोमिकल यूनिट कहा जाता है। इस

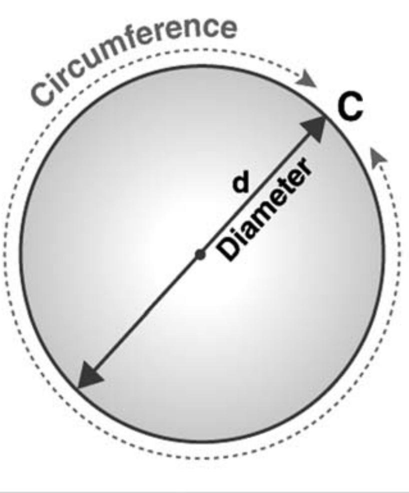

$$\frac{\text{Circumference}}{\text{Diameter}} = \pi = 3.14159.....$$

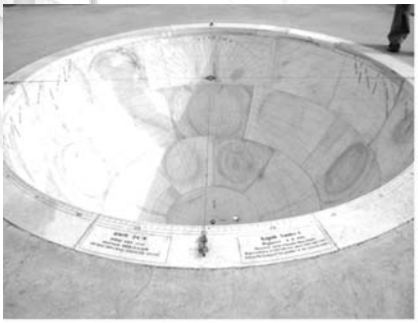

अनुपात के आधार पर निम्न सूची बनती है :-
बुध : आर्यभट्ट का मान 0.375 एयू - वर्तमान मान 0.387 एयू
शुक्र : आर्यभट्ट का मान 0.725 एयू - वर्तमान मान 0.723 एयू
मंगल : आर्यभट्ट का मान 1.538 एयू - वर्तमान मान 1.523 एयू
गुरु : आर्यभट्ट का मान 4.16 एयू - वर्तमान मान 4.20 एयू
शनि : आर्यभट्ट का मान 9.41 एयू - वर्तमान मान 9.54 एयू

वही आर्य सिद्धांत खगोलीय गणना से संबंधित है और इसमें कई खगोलीय उपकरणों का विवरण है, जैसे शंकु-यंत्र, छाया यंत्र, अर्धवृत्ताकार और वृत्ताकार कोण मापने वाले उपकरण धनूर-यंत्र/चक्र-यंत्र, एक बेलनाकार छड़ी जिसे यस्तियंत्र कहा जाता है, एक छतरी के आकार का उपकरण छत्र-यंत्र, धनुषाकार और बेलनाकार जल घड़ियाँ।

आर्यभट्ट की खगोल विज्ञान प्रणाली को औदयक प्रणाली कहा जाता था। लंका, भूमध्य रेखा पर उदय, भोर से दिन की गणना की जाती थी। आर्यभटीय में दर्ज यह खोज महत्वपूर्ण है कि पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। आर्यभट्ट ने यह भी बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। आर्यभटीय में उन्होंने पृथ्वी, चंद्रमा और ग्रहों द्वारा डाली जाने वाली और उन पर पड़ने वाली छाया के विचार का परिचय दिया है और कहा है कि चंद्र ग्रहण पृथ्वी की छाया में चंद्रमा के प्रवेश करने के कारण होता है। आर्यभट्ट ने पृथ्वी की छाया की लंबाई और व्यास, ग्रहणों का समय और अवधि, तथा सूर्य या चंद्रमा के ग्रहणग्रस्त भाग के आकार के लिए सूत्र दिए हैं। आर्यभट्ट ने यह भी बताया कि पृथ्वी की परिधि 39,968 किमी है। आधुनिक वैज्ञानिक गणना के अनुसार यह 40,072 किमी है। आर्यभट्ट की खगोल विज्ञान प्रणाली को औदयाक प्रणाली कहा जाता था, जिसमें दिनों की गणना उदय, लंका या भूमध्य रेखा पर सुबह से की जाती है। खगोल विज्ञान पर उनके कुछ बाद के लेख, जो जाहिर तौर पर एक दूसरे मॉडल या अर्ध-रात्रिका, आधी रात का प्रस्ताव करते थे, खो गए हैं, लेकिन ब्रह्मगुप्त के खंडखाद्यक में चर्चा से आंशिक रूप से पुनर्निर्मित किए जा सकते हैं। कुछ ग्रंथों में, वह आकाश की स्पष्ट गतियों को पृथ्वी के घूमने के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। उनका मानना था कि ग्रह की कक्षाएँ गोलाकार के बजाय अण्डाकार हैं। आर्यभट्ट ने सही ढंग से जोर देकर कहा कि पृथ्वी प्रतिदिन अपनी धुरी पर घूमती है और तारों की स्पष्ट गति पृथ्वी के घूमने के कारण होने वाली सापेक्ष गति है, जो उस समय प्रचलित दृष्टिकोण के विपरीत है, कि आकाश घूमता है। यह आर्यभटीय के पहले अध्याय में इंगित किया गया है, जहाँ वह एक युग में पृथ्वी के घूमने की संख्या देता है और अपने गोला अध्याय में इसे और अधिक स्पष्ट करता है। जिस तरह से नाव में आगे की ओर जाने वाला व्यक्ति किसी अचल (वस्तु) को पीछे की ओर जाता हुआ देखता है, उसी तरह भूमध्य रेखा पर बैठा व्यक्ति अचल तारों को समान रूप से पश्चिम की ओर जाता हुआ देखता है। उदय और अस्त होने का कारण यह है कि तारों का क्षेत्र ग्रहों के साथ भूमध्य रेखा पर पश्चिम की ओर मुड़ता है, जो लगातार ब्रह्मांडीय हवा द्वारा धकेला जाता है। आर्यभट्ट ने सौरमंडल का एक भूकेन्द्रित मॉडल बताया, जिसमें सूर्य और चंद्रमा दोनों ही चक्रों द्वारा चलते हैं। वे बदले में पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं। इस मॉडल में, जो पैतामहासिद्धांत (सी. 425 ई) में भी पाया जाता है, ग्रहों की गति प्रत्येक दो चक्रों द्वारा नियंत्रित होती है, एक छोटा मंद (धीमा) और एक बड़ा शिघ्र (तेज)। पृथ्वी से दूरी के संदर्भ में ग्रहों का क्रम इस प्रकार लिया गया है: चंद्रमा, बुध, शुक्र , सूर्य

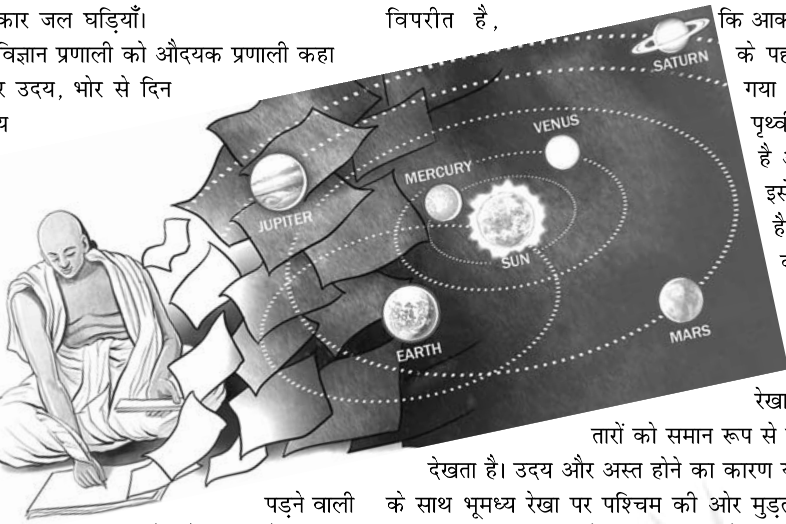

आर्यभट्ट ने सूर्य और चंद्र ग्रहणों को वैज्ञानिक रूप से समझाया था। उन्होंने कहा कि चंद्रमा और ग्रह, सूर्य की परावर्तित किरणों से चमकते हैं। प्रचलित ब्रह्मांड विज्ञान के बजाय जिसमें ग्रहण राहु और केतु (छद्म ग्रहीय चंद्र नोड्स के रूप में पहचाने जाते हैं) के कारण होते थे, वे ग्रहणों को पृथ्वी द्वारा डाली गई और पृथ्वी पर पड़ने वाली छाया के संदर्भ में समझाते हैं। इस प्रकार, चंद्र ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा पृथ्वी की छाया में प्रवेश करता है।

, मंगल , बृहस्पति , शनि और क्षुद्रग्रह। ग्रहों की स्थिति और अवधि की गणना समान रूप से गतिशील बिंदुओं के सापेक्ष की गई थी। बुध और शुक्र के मामले में, वे सूर्य के समान औसत गति से पृथ्वी के चारों ओर घूमते हैं। मंगल, बृहस्पति और शनि के मामले में, वे पृथ्वी के चारों ओर विशिष्ट गति से घूमते हैं, जो राशि चक्र के माध्यम से प्रत्येक ग्रह की गति का प्रतिनिधित्व करते हैं। खगोल विज्ञान के अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि यह दो-एपिसाइकल मॉडल प्री-टॉलेमिक ग्रीक खगोल विज्ञान के तत्वों को दर्शाता है। आर्यभट्ट के मॉडल में एक अन्य तत्व, शिघ्रोका, सूर्य के संबंध में बुनियादी ग्रहों की अवधि, कुछ इतिहासकारों द्वारा अंतर्निहित हेलियोसेंट्रिक मॉडल के संकेत के रूप में देखा जाता है। आर्यभट्ट ने सूर्य और चंद्र ग्रहणों को वैज्ञानिक रूप से समझाया था। उन्होंने कहा कि चंद्रमा और ग्रह सूर्य की परावर्तित किरणों से चमकते हैं। प्रचलित ब्रह्मांड विज्ञान के बजाय जिसमें ग्रहण राहु और केतु (छद्म ग्रहीय चंद्र नोड्स के रूप में पहचाने जाते हैं) के कारण होते थे, वे ग्रहणों को पृथ्वी द्वारा डाली गई और पृथ्वी पर पड़ने वाली छाया के संदर्भ में समझाते हैं। इस प्रकार, चंद्र ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा पृथ्वी की छाया में प्रवेश करता है (श्लोक गोला-37)। वे पृथ्वी की छाया के आकार और विस्तार पर विस्तार से चर्चा करते हैं (श्लोक गोला-38-48) और फिर ग्रहण के दौरान ग्रहण वाले हिस्से की गणना और आकार प्रदान करते हैं। बाद में भारतीय खगोलविदों ने गणनाओं में सुधार किया, लेकिन आर्यभट्ट के तरीकों ने मूल प्रदान किया। उनका कम्प्यूटेशनल प्रतिमान इतना सटीक था कि 18वीं सदी के वैज्ञानिक गिलियूम ले जेंटिल ने भारत के पांडिचेरी की यात्रा के दौरान पाया कि 30 अगस्त 1765 के चंद्र ग्रहण की अवधि की भारतीय गणना 41 सेकंड छोटी थी, जबकि उनके चार्ट (टोबियास मेयर द्वारा, 1752) 68 सेकंड लंबे थे।

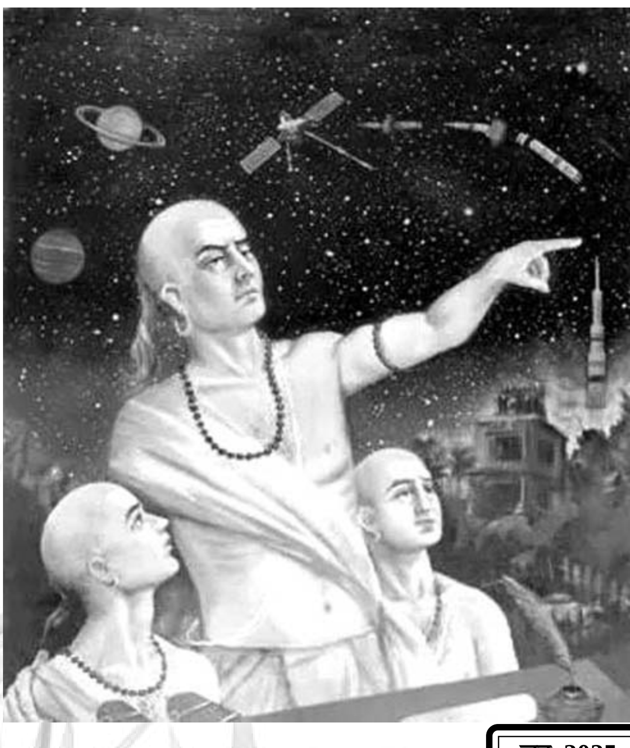

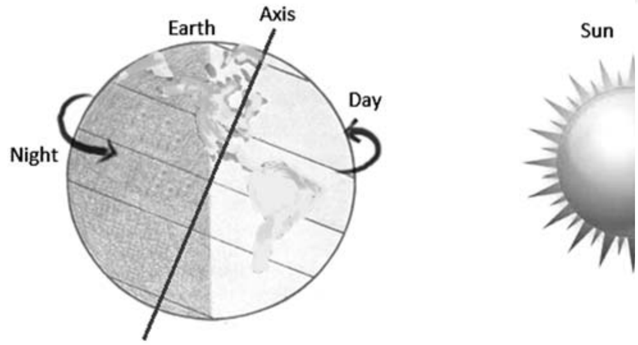

समय की आधुनिक अंग्रेजी इकाइयों में विचार करते हुए, आर्यभट्ट ने नाक्षत्रिक घूर्णन (स्थिर तारों को संदर्भित करते हुए पृथ्वी का घूर्णन) की गणना 23 घंटे, 56 मिनट और 4.1 सेकंड के रूप में की; आधुनिक मान 23:56:4.091 है। इसी तरह, नाक्षत्रिक वर्ष की लंबाई के लिए उनका मान 365 दिन, 6 घंटे, 12 मिनट और 30 सेकंड (365.25858 दिन) एक वर्ष की लंबाई (365.25636 दिन) पर 3 मिनट और 20 सेकंड की त्रुटि है। जैसा कि बताया गया है कि आर्यभट्ट ने एक खगोलीय मॉडल का समर्थन किया जिसमें पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। उनके मॉडल ने सूर्य की औसत गति के संदर्भ में आकाश में ग्रहों की गति के लिए सुधार (शिग्रा विसंगति) भी दिए। इस प्रकार, यह सुझाव दिया गया है कि आर्यभट्ट की गणना एक अंतर्निहित सूर्यकेंद्रित मॉडल पर आधारित थी, जिसमें ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं, हालांकि इसका खंडन किया गया है। यह भी सुझाव दिया गया है कि आर्यभट्ट की प्रणाली के पहलुओं की उत्पत्ति पहले के संभवतः टॉल्मी से पहले के ग्रीक, सूर्यकेंद्रित मॉडल से हुई हो सकती है, जिसके बारे में भारतीय खगोलविदों को जानकारी नहीं थी, हालांकि सबूत कम हैं। आम सहमति यह है कि एक सिनोडिक विसंगति (सूर्य की स्थिति पर निर्भर करती है) एक शारीरिक रूप से सूर्यकेंद्रित कक्षा का संकेत नहीं देती है (इस तरह के सुधार बेबीलोनियन खगोलीय ग्रंथों में भी मौजूद हैं) और यह कि आर्यभट्ट की प्रणाली स्पष्ट रूप से सूर्यकेंद्रित नहीं थी।

आर्यभट्ट के अन्य योगदानों में गणितीय श्रृंखला, द्विघात समीकरण, चक्रवृद्धि ब्याज (द्विघात समीकरण शामिल), अनुपात (अनुपात) और अंकगणित और बीजगणितीय विषयों में विभिन्न रैखिक समीकरणों का समाधान शामिल है। साइन (ज्या), कोसाइन (कोज्या), वरसाइन (उत्क्रम-ज्या) और व्युत्क्रम साइन (ओत्क्रम ज्या) की उनकी परिभाषाओं ने त्रिकोणमिति के जन्म को प्रभावित किया। वह साइन और वरसाइन (1-cos x) तालिकाओं को 0° से 90° तक 3-75° अंतराल में, 4 दशमलव स्थानों की सटीकता के साथ निर्दिष्ट करने वाले पहले व्यक्ति भी थे। वास्तव में, आधुनिक शब्द 'साइन' और 'कोसाइन' आर्यभट्ट द्वारा प्रस्तुत किए गए ज्या और कोज्या शब्दों के गलत लिप्यंतरण हैं। जैसा कि उल्लेख किया गया है, उन्हें अरबी में जिबा और कोजिबा के रूप में अनुवादित किया गया था और फिर क्रेमोना के जेरार्ड द्वारा अरबी ज्यामिति पाठ का लैटिन में अनुवाद करते समय गलत समझा गया था। उन्होंने मान लिया कि जिबा अरबी शब्द जैब है, जिसका अर्थ है 'कपड़े में तह', एल. साइनस (लगभग 1150)। आर्यभट्ट की खगोलीय गणना पद्धतियाँ भी बहुत प्रभावशाली थीं।

त्रिकोणमितीय तालिकाओं के साथ-साथ, उनका इस्लामी दुनिया में व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा और कई अरबी खगोलीय तालिकाओं (जीजेस) की गणना करने के लिए उनका उपयोग किया गया। विशेष रूप से, अरबी स्पेन के वैज्ञानिक अल-जरकाली (11वी शताब्दी) के काम में खगोलीय तालिकाओं का लैटिन में टोलेडो की तालिकाओं (12वीं शताब्दी) के रूप में अनुवाद किया गया और सदियों तक यूरोप में इस्तेमाल की जाने वाली सबसे सटीक पंचांग बनी रहीं। आर्यभट्ट और उनके अनुयायियों द्वारा तैयार की गई कैलेंडर गणनाएं भारत में पंचांगम (हिंदू कैलेंडर) को ठीक करने के व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए निरंतर उपयोग में रही हैं।

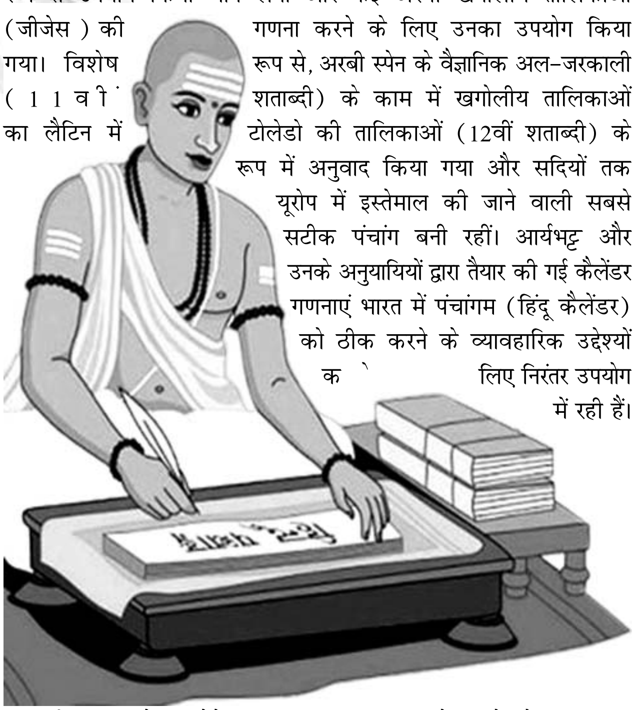

इस्लामी दुनिया में, उन्होंने उमर खय्याम सहित खगोलविदों के एक समूह द्वारा 1073 ई० में पेश किए गए जलाली कैलेंडर का आधार बनाया, जिसके संस्करण (1925 में संशोधित) आज ईरान और अफगानिस्तान में उपयोग में आने वाले राष्ट्रीय कैलेंडर हैं। जलाली कैलेंडर की तिथियां वास्तविक सौर पारगमन पर आधारित हैं, जैसा कि आर्यभट्ट और पहले के सिद्धांत कैलेंडर में था। इस प्रकार के कैलेंडर में तिथियों की गणना के लिए पंचांग की आवश्यकता होती है। हालाँकि तिथियों की गणना करना मुश्किल था, लेकिन ग्रेगोरियन कैलेंडर की तुलना में जलाली कैलेंडर में मौसमी त्रुटियाँ कम थीं। आर्यभट्ट और उनके अनुयायियों द्वारा शुरू की गई पंचांग गणना भारत में पंचांगम (हिंदू कैलेंडर) तैयार करने के व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए निरंतर उपयोग में रही है।

बहरहाल, आर्यभट्ट की मृत्यु 550 ई. में पाटलिपुत्र में ही हुई थी और उनकी उपलब्धियों को विशेष रूप से उनके कृति आर्यभटीय को महानतम ज्योतिषीय कार्यों के रूप में जाना जाता है। आर्यभट्ट का चिंतन एक गणितज्ञ-ज्योतिषी के रूप में इतना महत्वपूर्ण था कि प्रथम भारतीय उपग्रह 'आर्यभट्ट' को उनके सम्मान में उनके नाम पर रखा गया। जिसे सोवियत संघ के एक रॉकेट के द्वारा 19 अप्रैल, 1975 में प्रक्षेपित किया गया था। भारत दुनिया पहला ऐसा देश है जिसने अपने पहले कृत्रिम उपग्रह को किसी काल्पनिक देवी-देवता का नाम नही दिया, बल्कि अपने एक महान गणितज्ञ का नाम दिया। वही चन्द्रमा पर उपस्थित एक बड़ी दरार (गड्ढे) का नाम आर्यभट रखा गया है। यही नहीं भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा बैलून से किए गये एक अनोखे प्रयोग में समतापमंडल की वायु में जीवाणुओं की ऐसी प्रजातियाँ पाई गई है जिसे पृथ्वी पर पहले कभी देखा नही गया था। उनमें से एक जीवाणु का नाम आर्यभट्ट के सम्मान में 'बैसिलस आर्यभट्ट' रखा गया। साथ ही साथ खगोल भौतिकी से सबंधित नैनीताल के निकट स्थित एक संस्थान को आर्यभट्ट के सम्मान में 'आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान अनुसंधान संस्थान' रखा गया है। बता दें कि एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा स्थापित वार्षिक पुरस्कार भारत में अंतरिक्ष

Astronautical Society of India
ARYABHATA AWARD 2000
Presented to
In recognition of his contribution to
Promotion of Astronautics in India
March 2003
Bangalore
(K. Kasturirangan)
President

विज्ञान और एयरोस्पेस प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय आजीवन योगदान देने वाले व्यक्तियों को दिया जाता है। भारत के पहले उपग्रह आर्यभट्ट और चंद्र क्रेटर आर्यभट्ट का नाम इस महान भारतीय वैज्ञानिक के सम्मान में रखा गया था।

गौरतलब है कि आर्यभट्ट पुरस्कार एक वार्षिक पुरस्कार है, जो भारत में अंतरिक्ष यात्री और एयरोस्पेस प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय आजीवन योगदान देने वाले व्यक्तियों को दिया जाता है। इसे एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (एएसआई) द्वारा 1990 में स्थापित किया गया था, जो 1958 से अंतर्राष्ट्रीय एस्ट्रोनॉटिकल फेडरेशन का सदस्य है। यह पुरस्कार आमतौर पर प्रधानमंत्री कार्यालय के राज्य मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया जाता है और इसमें एक प्रशस्ति पत्र और 1 लाख रूपये शामिल होते हैं। इस पुरस्कार का नाम पाँचवीं शताब्दी के भारतीय खगोलशास्त्री और गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया है और पहले भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट (19 अप्रैल 1975 को प्रक्षेपित) की स्मृति में दिया गया है।

✯ **पुरस्कार विजेता :-**

- ☞ पी.डी. भावसार (1999)
- ☞ आरपी शेनॉय (2000)
- ☞ रोडम नरसिम्हा (2004)
- ☞ पी.एस. गोयल (2005)
- ☞ प्रमोद काले (2006)
- ☞ एई मुथुनायगम (2010)
- ☞ वीके सारस्वत (2011)
- ☞ रंगनाथ आर. नवलगुंड (2012)
- ☞ अविनाश चंदर (2016)

प्राचीन भारत के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट्ट को भारत सरकार की ओर से कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। आज, कई उपक्रमों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और उपग्रहों का नाम महान वैज्ञानिक और गणितज्ञ आर्यभट्ट

आर्यभट्ट अंतरिक्ष यान आर्यभट्टहोम प्रसिद्ध भारतीय खगोलशास्त्री के नाम पर, भारत का पहला उपग्रह था; यह पूरी तरह से भारत में डिजाइन और निर्मित किया गया था और 19 अप्रैल, 1975 को कपुस्टिन यार से सोवियत कॉसमॉस-3 एम रॉकेट द्वारा लॉन्च किया गया था; साथ ही चंद्रमा पर एक क्रेटर, जिसका नाम भी आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया है।

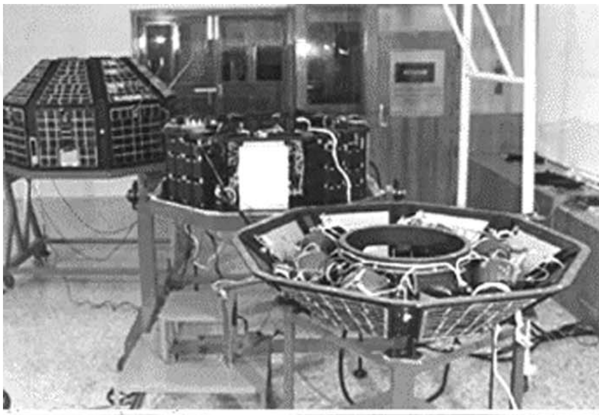

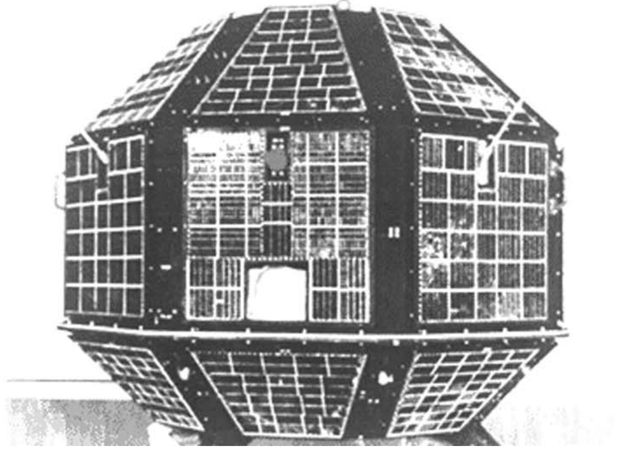

INDIA ENTERS SPACE AGE
Satellite sent into orbit from USSR
India insists on comprehensive deal with EEC
UPROAR IN KARNATAKA ASSEMBLY
Many ex-Govt. leaders beheaded

के नाम पर रखा गया है।

☞ **आर्यभट्टहोम (उपग्रह) :-** भारत का पहला उपग्रह, जिसे इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (ISRO) ने लॉन्च किया था। इसे खगोलशास्त्री आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया था। आर्यभट्ट अंतरिक्ष यान, प्रसिद्ध भारतीय खगोलशास्त्री के नाम पर, भारत का पहला उपग्रह था। यह पूरी तरह से भारत में डिजाइन और निर्मित किया गया था और 19 अप्रैल, 1975 को कपुस्टिन यार से सोवियत कॉसमॉस-3 एम रॉकेट द्वारा लॉन्च किया गया था।

☞ **आर्यभट्ट (चंद्र क्रेटर) :-** चंद्रमा पर एक क्रेटर, जिसका नाम भी आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया है।

☞ **'बैसिलस आर्यभट्ट' :-** भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा बैलून से किए गये एक अनोखे प्रयोग में समतापमंडल की वायु में जीवाणुओं की ऐसी प्रजातियाँ पाई गई है जिसे पृथ्वी पर पहले कभी देखा नही गया था। उनमें से एक जीवाणु का नाम आर्यभट्ट के सम्मान में 'बैसिलस आर्यभट्ट' रखा गया।

☞ **दो रुपये का भारतीय नोट :-** दो रूपये के भारतीय इस नोट के पीछे आर्यभट्ट उपग्रह की छवि अंकित है।

☞ **डाक टिकट :-** भारत सरकार ने 1975 में आर्यभट्ट के सम्मान में डाक टिकट जारी किया।

☞ **आर्यभट्ट प्लेनेटेरियम :-** आर्यभट्ट प्लेनेटेरियम उत्तर प्रदेश के रामपुर में स्थित है, और यह खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान शिक्षा के लिए समर्पित है। इसे जनता को चंद्र ग्रहण और अन्य खगोलीय घटनाओं जैसे खगोलीय घटनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया था। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2012 में निर्मित, यह भारत का पहला

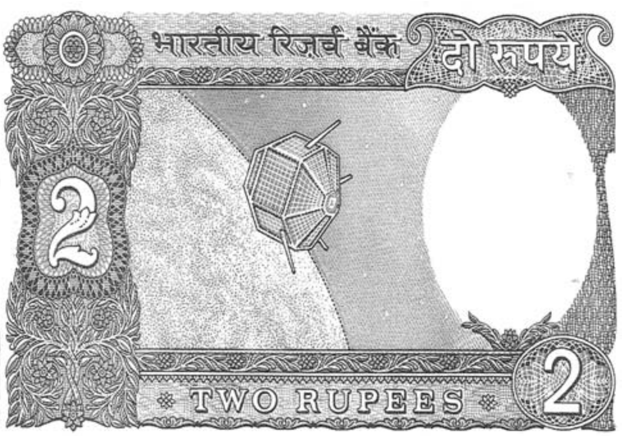

लेजर प्लेनेटेरियम है, जो गुंबद के आकार की स्क्रीन पर यथार्थवादी खगोलीय सिमुलेशन को प्रोजेक्ट करने के लिए उन्नत डिजिटल लेजर तकनीक का उपयोग करता है। आर्यभट्ट प्लेनेटेरियम राष्ट्रीय वैमानिकी एवं अंतरिक्ष प्रशासन (नासा) के डेटाबेस से जुड़ता है, जो खगोलीय घटनाओं पर अद्यतन जानकारी प्रदान करता है, जिसे बाद में लेजर प्रोजेक्टर का उपयोग करके प्रदर्शित किया जाता है। 2024 में यह बताया गया कि पिछले मानसून के मौसम में पानी की क्षति के कारण आर्यभट्ट प्लेनेटेरियम को एक साल से अधिक समय के लिए बंद कर दिया गया था, जिससे इसके उपकरण प्रभावित हुए थे। अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के बावजूद, जून 2024 तक सुविधा को फिर से खोलने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। आर्यभट्ट तारामंडल का उद्घाटन 17 सितंबर 2012 को मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव द्वारा किया गया था। आर्यभट्ट तारामंडल नासा से सीधे ऑनलाइन अपडेट प्राप्त करने वाला भारत का पहला तारामंडल बताया गया था। ये अपडेट अमेरिका स्थित कंपनी इवांस एंड सदरलैंड के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं, जिसने तारामंडल के उपकरण भी बनाए हैं। जनवरी 2018 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद, लखनऊ द्वारा प्रदान की गई एक दूरबीन आर्यभट्ट तारामंडल में स्थापित की गई थी।

☞ **आर्यभट्ट की कांस्य प्रतिमा :-** पूरे देश के लिए एक और गौरवपूर्ण क्षण तब आया जब तत्कालिन मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने फ्रांस के पेरिस स्थित यूनेस्को मुख्यालय में प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट की कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया।

प्रसिद्ध भारतीय मूर्तिकार राम सुतार द्वारा निर्मित इस प्रतिमा का अनावरण यूनेस्को और भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित 'शून्य पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन' के एक उच्च स्तरीय खंड में किया गया।

☞ **आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान अनुसंधान संस्थान :-** आर्यभट्ट के नाम पर एक प्रसिद्ध संस्थान 'आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एआरआईईएस)' है, जो भारत के नैनीताल में स्थित है। यह खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए एक प्रमुख केंद्र है। यह भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत एक स्वायत्त निकाय है। यह संस्थान कुमाऊँ मंडल के मुख्यालय नैनीताल से लगभग 9 किलोमीटर (5.6 मील) दूर मनोरा पीक (ऊँचाई 1,951 मीटर या 6,401 फीट) पर स्थित है। यहां खगोल विज्ञान, सौर भौतिकी, खगोल भौतिकी और वायुमंडलीय विज्ञान की पढ़ाई करायी जाती है। संस्थान की शुरुआत 20 अप्रैल 1954 को डॉ. ए.एन. सिंह की देख-रेख में उत्तर प्रदेश राज्य वेधशाला (यूपीएसओ) के रूप में राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के परिसर में की गई थी, जिसे वर्तमान में सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश के रूप में जाना जाता है। 9 नवंबर 2000 को उत्तराखंड राज्य के गठन के साथ और

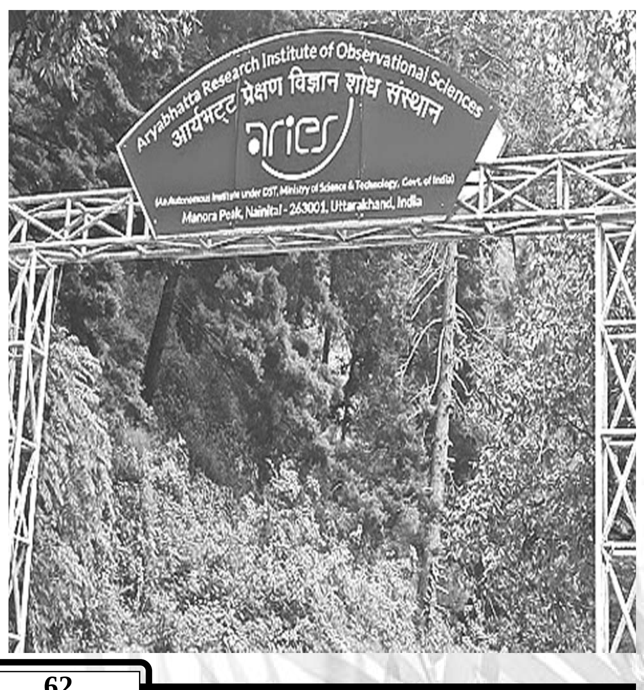

उत्तराखंड की सीमाओं के भीतर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण, यूपीएसओ उत्तराखंड सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आ गया और इसे राज्य वेधशाला (एसओ) के रूप में पुनः नामांकित किया गया। 22 मार्च 2004 को एक स्वायत्त निकाय के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार के अधीन आने पर संस्थान का नाम आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एआरआईईएस) रखा गया। एरीज के पास मनोरा पीक, नैनीताल में 32.38 हेक्टेयर (80.0 एकड़) भूमि है, जिस पर कार्यात्मक और आवासीय भवन स्थित हैं। नई अवलोकन सुविधाओं के लिए सड़क मार्ग से लगभग 50 किलोमीटर (31 मील) दूर देवस्थल में अतिरिक्त 4.48 हेक्टेयर (11.1 एकड़) का अधिग्रहण किया गया है।

☞ **आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय (AKU), पटना :-** आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय (AKU) भारत के बिहार प्रदेश की राजधानी पटना के मीठापुर में स्थित एक कॉलेजिएट पब्लिक स्टेट यूनिवर्सिटी है। इसका नाम भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया है। विश्वविद्यालय की स्थापना 2010 में बिहार सरकार द्वारा आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम, 2008 के माध्यम से की गई थी। इसकी स्थापना बिहार में तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा, प्रबंधन और संबद्ध व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित शैक्षिक बुनियादी ढांचे के विकास और प्रबंधन के लिए की गई थी।

☞ **आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय से संबद्ध राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज अस्पताल, पटना :-** राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज अस्पताल, पटना की स्थापना 1926 में हुई थी। राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज और अस्पताल आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय से संबद्ध है। अस्पताल में चिकित्सा और संबद्ध अनुसंधान के लिए अटूट संसाधनों के लिए व्यापक सुविधाएँ हैं और यह विश्वसनीय रोगी देखभाल प्रदान करता है। संस्थान का उद्देश्य स्वास्थ्य गतिविधि की सभी महत्वपूर्ण शाखाओं में आत्मनिर्भर कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए उच्चतम स्तर की शैक्षिक सुविधाओं को एक स्थान पर लाना है। राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, पटना में, हमारा लक्ष्य आयुर्वेदिक शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवा में उत्कृष्टता का वैश्विक केंद्र बनना है। हम एक ऐसे भविष्य की कल्पना करते हैं जहाँ आयुर्वेद का कालातीत ज्ञान मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों में सहजता से एकीकृत हो।

☞ **आर्यभट्ट कॉलेज, नई दिल्ली :-** आर्यभट्ट कॉलेज एक NAAC मान्यता प्राप्त A+ कॉलेज है, जो पूरी तरह से दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा संचालित है और इसका नाम प्राचीन भारतीय गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया है। यह कॉलेज दक्षिण दिल्ली में बेनिटो जुआरेज मार्ग, साउथ कैंपस में स्थित है। कॉलेज का परिसर हरा-भरा है। यह अरावली पर्वतमाला

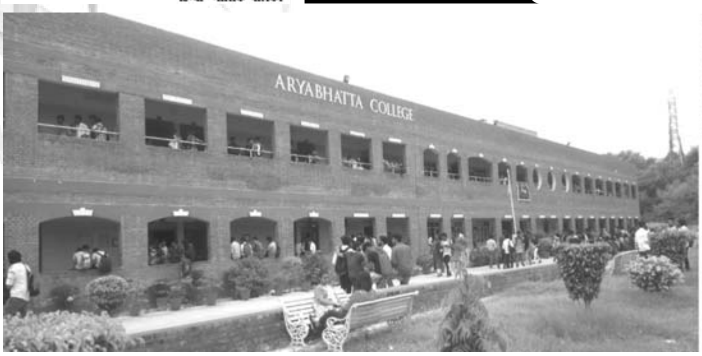

के दक्षिणी दिल्ली खंड के आसपास दिल्ली विश्वविद्यालय के दक्षिणी परिसर से सटा हुआ है। परिसर में दो ब्लॉक हैं-कुसुमपुर और तारेगना, जिसमें कक्षाएँ, ऑडिटोरियम और एक सेमिनार कक्ष है और एक नया शैक्षणिक ब्लॉक निर्माणाधीन है।

☞ **आर्यभट्ट साइंस सेंटर, अंबाला :-** हरियाणा के अंबाला में आर्यभट्ट रीजनल साइंस सेंटर बनाया जा रहा है जो कि उत्तर भारत का सबसे बेहतरीन साइंस सेंटर होगा। यहां विज्ञान से जुड़े विभिन्न पहलुओं को बखूबी ढंग से प्रदर्शित किया जाएगा। इस सेंटर में फ्लाइट सिम्युलेटर भी लगेगा जिसके जरिए लोग बिना हवाई जहाज में बैठे हवाई यात्रा जैसा आनंद ले पाएंगे। साइंस सेंटर स्टूडेंट्स के लिए सबसे लाभदायक होगा। स्टूडेंट्स साइंस गैलरी में लाइव वेदर के अलावा अंतरिक्ष विज्ञान, गणित और अन्य रोचक जानकारियां हासिल हो सकेंगी। जीटी रोड पर 5 एकड़ भूमि पर 36 करोड़ रुपये की लागत से आर्यभट्ट विज्ञान केंद्र का निर्माण किया जा रहा है। साइंस सेंटर अपनी तरह का सबसे बड़ा व यूनिक रिजनल साइंस सेंटर होगा। तीन मंजिला बनने वाले इस साइंस सेंटर में स्टूडेंट्स को आधुनिक तरीके से रोचक और अन्य जानकारियां दी जाएंगी। इससे उनकी विज्ञान में रुचि और बढ़ेगी। बच्चों के अलावा अन्य वर्गों के लिए भी साइंस सेंटर भी विभिन्न जानकारियां होंगी। यह ऐसा साइंस सेंटर होगा जिसमें लाइव वेदर को स्क्रीन पर प्रदर्शित किया जाएगा और वर्चुअल तरीके से भी अन्य जानकारियों को दर्शाया जाएगा। हरियाणा साइंस एंड टेक्नोलजी व नेशनल काउंसिल आफ साइंस म्यूजियम कोलकाता द्वारा संयुक्त रूप से यह केंद्र बनाया जा रहा है। इस केंद्र विज्ञान से जुड़ी वस्तुओं व माडलों को लाया जाएगा। यह अंबाला के विद्यार्थियों के लिए काफी फायदेमंद रहेगा, क्योंकि यहां पर विद्यार्थी साइंस के रहस्यों के बारे में जान पाएंगे, वहीं अंतरिक्ष की भी जानकारी मिलेगी। आर्यभट्ट विज्ञान केंद्र कई मायनों इतिहास रचेगा। म्यूजियम को नासा (द नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) से जोड़ा जाएगा। इसका मकसद है कि बच्चों को नवीनतम नियमों और विषयों पर जानकारी मिल सके। बदलते परिवेश के चलते मौसम को लेकर सूचनाएं भी अपडेट होंगी। नासा से कनेक्शन मिलने के बाद विद्यार्थी वैश्विक मौसम संबंधी विषयों पर भी अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। विज्ञान केंद्र में साइंस संबंधित करीब 60 प्रदर्शनियां स्थापित की जाएंगी, जो कि विज्ञान के विभिन्न नियमों पर आधारित होंगी। इसी तरह डिजिटल एडवेंचर गैलरी में डिजिटल पेंटिग, बैलून ब्रस्ट, ऑगोमेटेड रियलिटी, कलर सेंसिग रोबोट, ह्यूमन बॉडी सिस्टम, इंटरेक्टिव वाटर हाल, इंटरेक्टिव सैंड टेबल, होलोग्राम, स्मार्ट इलेक्ट्रॉनिक्स इत्यादि की सुविधाएं होंगी। यहां पर फन साइंस गैलरी, साइंस ऑन स्फेयर, वर्चुअल गैलरी थियेटर, 270 डिग्री इंप्रेसिव थियेटर और तारामंडल, प्रदर्शनी हॉल, सम्मेलन हाल, सभागार प्रदर्शनी, एसओएस हाल, एक्टिविटी हाल की व्यवस्था होगी। डिजिटल गैलरी भी बनाई जाएगी, जिसमें बच्चे स्क्रीन पर पेंटिग आदि भी बनाकर अपने कौशल को बढ़ा सकेंगे। इसी तरह केंद्र में मानव उत्पत्ति संबंधी विषय को लेकर भी फिल्में प्रदर्शित और परिभाषित होंगी। सेंटर का निर्माण कार्य जल्द पूरा हो इसके लिए पूरे प्रयास किए जा रहे हैं। साइंस सेंटर पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित करेगा। हरियाणा के अलावा विभिन्न राज्यों से लोग इसे देख पाएंगे, क्योंकि समूचे उत्तर भारत में यह साइंस सेंटर अलग किस्म का होगा।

☞ **आर्यभट्ट अभियंत्रण महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान :-** आर्यभट्ट कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड रिसर्च सेंटर, अजमेर राजस्थान के अजमेर शहर में स्थित एक निजी सहायता प्राप्त संस्थान है। कॉलेज की स्थापना वर्ष 2008 में आर्यभट्ट अकादमिक सोसायटी द्वारा राजस्थान के युवाओं और

आर्थिक रूप से पिछड़े और आदिवासी लोगों को गुणवत्तापूर्ण तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। कॉलेज अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित है और राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय से संबद्ध है।

☞ **आर्यभट्ट छात्रावास :-** आर्यभट्ट छात्रावास का नाम महान भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया है। आर्यभट्ट छात्रावास छात्र आवंटन के मामले में पूरे आईआईटी (बीएचयू) में सबसे बड़ा छात्रावास है। आर्यभट्ट छात्रावास ए ब्लॉक 15 अक्टूबर 2013 को स्थापित किया गया था। एक वर्ष के बाद बी और सी ब्लॉक को सौंप दिया गया था। मेस और कॉमन हॉल का उद्घाटन प्रोफेसर राजीव संगल, पूर्व निदेशक आईआईटी (बीएचयू), ने 20 फरवरी 2017 को किया। इसमें पुरुष छात्रों के रहने के लिए 433 कमरे हैं। छात्रावास में पढ़ाई के लिए बहुत शांतिपूर्ण माहौल है। परिसर में सुंदर उद्यान और बैडमिंटन कोर्ट हैं। छात्र टाटा स्काई सेट टॉप बॉक्स के साथ टेलीविजन की सुविधा वाले कॉमन रूम में खघली समय बिता सकते हैं और टेबल टेनिस, शतरंज, कैरम, बैडमिंटन जैसे इनडोर खेलों का अभ्यास कर सकते हैं।

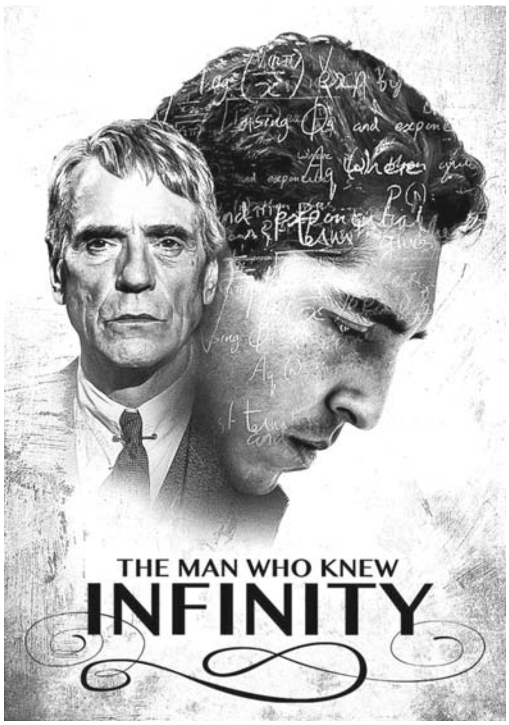

आर्यभट्ट पर कई फिल्में भी बनी हैं, जिनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं :-

☞ **आर्यभट्ट :-** यह एक कन्नड़ फिल्म है जो आर्यभट्ट के जीवन और उनके गणितीय योगदानों को दर्शाती है, जैसा कि YouTube पर दिखाया गया है।

☞ **द मैन हू न्यू इनफिनिटी :-** यह फिल्म गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के जीवन पर आधारित है, हालांकि, फिल्म में आर्यभट्ट का उल्लेख भी है।

☞ **मनोज कुमार की फिल्म :-** निर्देशक मनोज कुमार ने भी आर्यभट्ट पर एक फिल्म बनाने की घोषणा की थी, जैसा कि द इकोनॉमिक टाइम्स ने बताया है।

इनके अलावा, कई अन्य उपक्रमों, स्कूलों और विश्वविद्यालयों का नाम के अलावे संग्रहालय और पुस्तकालय भी आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया है, जो उनके गणित और खगोल विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान का सम्मान करते हैं।

विडम्बना है महान गणीतज्ञ शून्य अविष्कारक व प्रसिद्ध खगौलशास्त्री आर्यभट्ट ने दुनियां को वो दिया, जिनके बिना आज सबकुछ अधूरा रहता। बताते चले कि बिहार की राजधानी पटना से करीब पैंतीस किलोमीटर दूर तारेगना एक छोटा सा कस्बा है, जो आर्यभट्ट की कर्मस्थली मानी जाती है। यही रहकर आर्यभट्ट ने आकाश में ग्रह-नक्षत्र और तारों की स्थिति का अध्ययन किया था और इसलिए इसका नाम तारेगना पड़ गया। ऐसा माना जाता है कि आर्यभट्ट ने यहां अपने शिष्यों के साथ वेधशाला बनाकर तारों की गणना की थी, इसलिए इसका नाम तारेगना पड़ा। हाल ही में, इस गांव को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की मांग उठाई गई, ताकि आर्यभट्ट के वैज्ञानिक योगदान को याद किया जा सके। तारेगना एकाएक वर्ष 2009 के जुलाई महीने में उस समय चर्चा में आया, जब अमेरिकी अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान 'नासा' ने तारेगना पर एक रिपोर्ट छापी। इस रिपोर्ट में कहा गया कि तारेगना से 22 जुलाई का खग्रास यानी पूर्ण सूर्यग्रहण को बखूबी देखा जा सकेगा। इस रिपोर्ट के बाद दुनियाभर से खगोल वैज्ञानिक और पर्यटक तारेगना पधारे, लेकिन आकाश में बादल छाए रहने के कारण वो यहां पूर्ण सूर्यग्रहण का नजारा नहीं देख सके और उन्हें निराशा हाथ लगी।

गौरतलब है कि जिस तारेगना में शोध से आर्यभट्ट ने दुनिया को

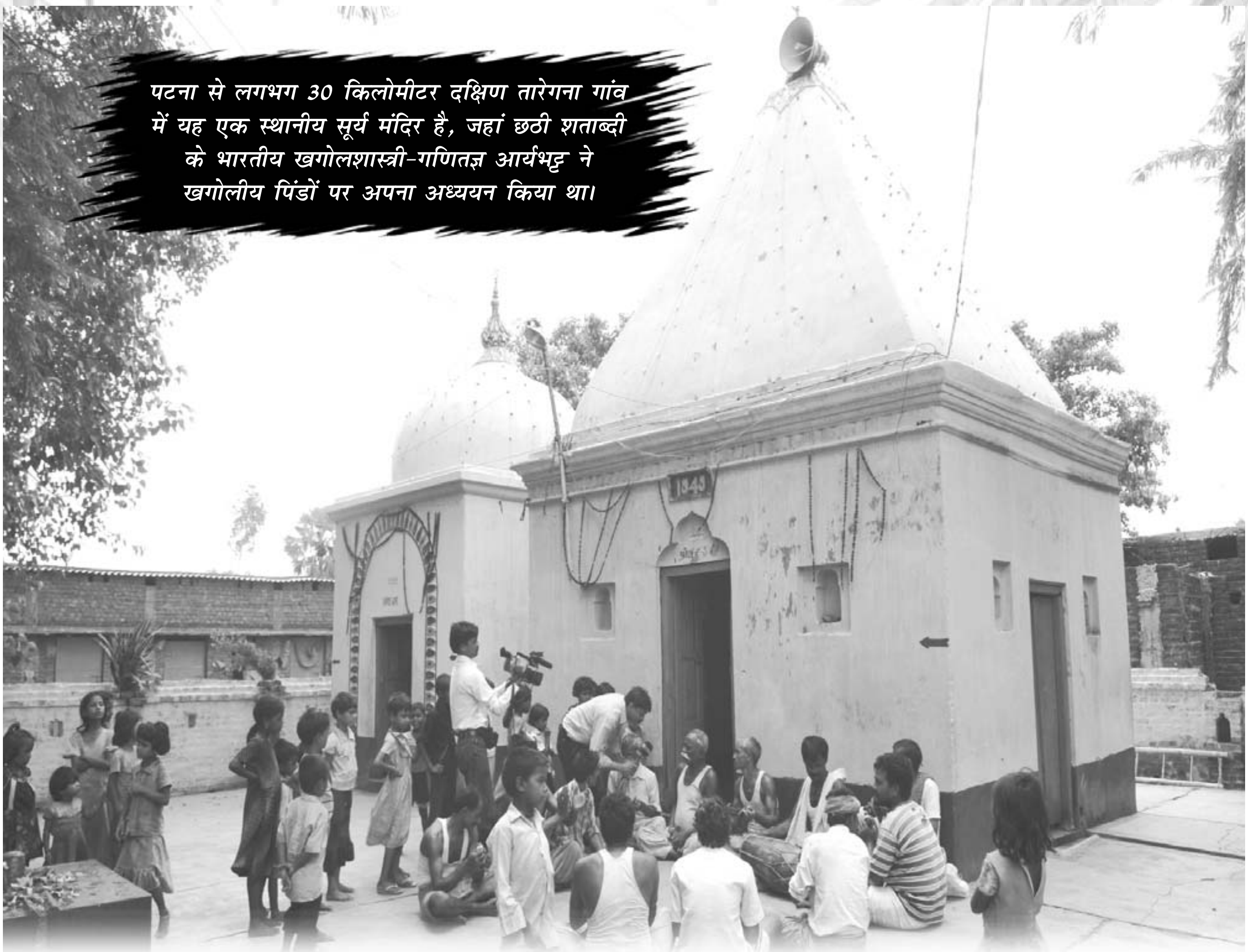

पटना से लगभग 30 किलोमीटर दक्षिण तारेगना गांव में यह एक स्थानीय सूर्य मंदिर है, जहां छठी शताब्दी के भारतीय खगोलशास्त्री-गणितज्ञ आर्यभट्ट ने खगोलीय पिंडों पर अपना अध्ययन किया था।

खगोलीय और अंतरिक्ष भौतिकी से रूबरू कराया, आज वह परिचय का मोहताज है। 'इसरो' में काम कर चुके वैज्ञानिक उपेंद्र अनमोल ने कहा था कि यह बेहद दुखद है कि जहां शोध के बाद प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने दुनिया को खगोलीय और अंतरिक्ष भौतिकी से परिचय कराया, वह आर्यभट्ट की कर्मस्थली तारेगना आज भी विकास से कोसों दूर है। ***''आज तक तारेगना में आर्यभट्ट की प्रतिमा तक नहीं लगी है''।*** बिहार के पटना जिले के तारेगना गांव का खगोलीय और अंतरिक्ष भौतिकी से गहरा संबंध है, क्योंकि तारेगना खगोल शास्त्र के प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक आर्यभट्ट की कर्मस्थली है। आर्यभट्ट ने तारेगना डीह यानी टीले पर अपनी प्रयोगशाला बनाकर खगोलीय अध्ययन किया था, लेकिन हैरत की बात ये है कि वह गांव आज अपना परिचय खोता जा रहा है। इसे ना तो पर्यटन क्षेत्र के रूप में चिह्नित किया गया है और ना ही यहां पर आर्यभट्ट के नाम पर किसी भी तरह का सरकारी निर्माण कराया गया है। हालांकि ***''22 जुलाई 2009 को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आर्यभट्ट के नाम पर तारेगना में विकास का ऐलान भी किया था, लेकिन इस ओर कोई पहल नहीं हुई''।***

सरकार और प्रशासन की उपेक्षा से ग्रामीणों में काफी नाराजगी है। आर्यभट्ट की कर्मस्थली तारेगना के ग्रामीणों का कहना है कि आर्यभट्ट ने जिस तारेगना डीह यानी टीले पर अपनी प्रयोगशाला बनाकर खगोलीय अध्ययन किया था, वहां तक पहुंचने के लिए ठीक से एक सड़क तक नहीं बनी। वैज्ञानिकों और सरकारी लोगों को आर्यभट्ट के मूल कर्मस्थल की दुर्दशा जरूर देखनी चाहिए थी। तारेगना गांव दरअसल तारेगना रेलवे-स्टेशन से मात्र डेढ़ दो किलोमीटर दूर और मसौढी बाजार के पीछे है, लेकिन वहां जाते-जाते विकास की रोशनी मद्धम पड़ जाती है। वहीं कई बुद्धिजीवियों ने हस्ताक्षर अभियान चलाकर प्रधानमंत्री को तारेगना में आर्यभट्ट की प्रतिमा लगाने और पर्यटन क्षेत्र बनाने की मांग करने की बात कही।

बता दें कि आर्यभट्ट के नाम पर प्रतिमा लगाने और पर्यटन क्षेत्र के रूप में बढ़ावा देने की मांग के बीच विदेश

तारेगना, पटना से सटे मसौढ़ी में स्थित है। बिहार की राजधानी पटना से करीब पैंतीस किलोमीटर दूर तारेगना एक छोटा सा कस्बा है, जो आर्यभट्ट की कर्मस्थली मानी जाती है। यही रहकर आर्यभट्ट ने आकाश में ग्रह-नक्षत्र और तारों की स्थिति का अध्ययन किया था और इसलिए इसका नाम तारेगना पड़ गया। ऐसा माना जाता है कि आर्यभट्ट ने यहां अपने शिष्यों के साथ वेधशाला बनाकर तारों की गणना की थी, इसलिए इसका नाम तारेगना पड़ा।

मंत्रालय के अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के सदस्य और इसरो में काम कर चुके उपेंद्र अनमोल ने तारेगना का दौरा करते हुए कहा था कि वैज्ञानिक विरासत को बचाना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि जहां से पूरी दुनियां को आर्यभट्ट ने नई-नई चीजें दी, सौरमंडल से लेकर कई गणितज्ञ फॉर्मूला विश्व को देने वाले आर्यभट्ट के नाम पर यहां कुछ नहीं होना बेहद आश्चर्यजनक है। ऐसे में पीएमओ कार्यालय में और इसरो के सहयोग से विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा आर्यभट्ट की तारेगना में लगे और इसे पर्यटन क्षेत्र में बढ़ावा मिले, इस बात को लेकर चर्चा होनी जरूरी है। कहा जाता है कि गुप्त काल में कभी नालंदा विश्वविद्यालय में ज्ञान प्राप्त कर लौट रहे आर्यभट्ट पटना से सटे मसौढ़ी के तारेगना में ठहरे थे और यहां पर अपने शिष्यों के साथ वेधशाला बनाकर तारों की गणना करते थे। जिस वजह से इसका नाम तारेगना पड़ा था, लेकिन आज सरकारी उदासीनता का दंश झेल रहा है। दुखत बात ये है कि आज तक ना तो उस जगह पर आर्यभट्ट के नाम पर प्रतिमा लगी और ना ही पर्यटन स्थल के रूप में चिह्नित किया गया। तारेगना गांव में किसी तरह का विकास भी नहीं हुआ। चूकि बिहार अब नया बिहार बनने की ओर अग्रसर है और लोकप्रिय माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की देख-रेख में बिहार में सड़कों और पुलों के निर्माण के साथ

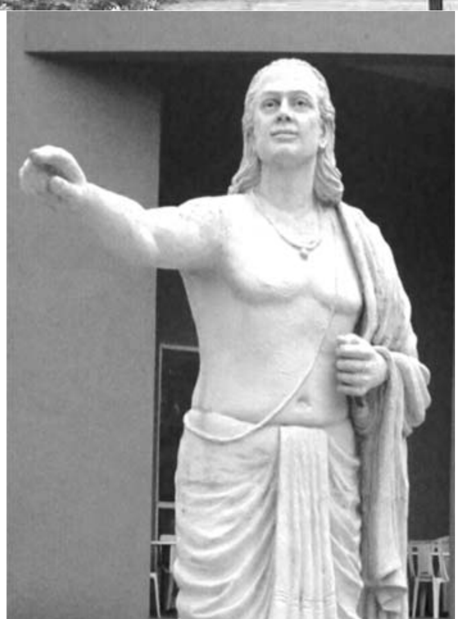

ही राजधानी पटना और उसके आसपास के क्षेत्रों में मेट्रो रेल की संसाधनों से लैश हो रहा हैं। कई ऐतिहासिक धरोहरों को संभालने का कार्य करते हुए उस स्थान को पर्यटन का दर्जा दिया जा रहा है। वैसे में राजधानी पटना से सटे तारेगना का, जहां महान खगोलशास्त्री, गणितज्ञ आर्यभट्ट की कर्मस्थली होने के बाद भी अपने विकास की राह देख रही है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का ध्यान इस ओर जाना बेहद ही जरूरी है। तारेगना को पर्यटन क्षेत्र में लाते हुए महान खगोलशास्त्री, गणितज्ञ आर्यभट्ट की विशाल प्रतिमा को यहां स्थापित किये जाने की वर्षों की मांग को पूरा किया जाना चाहिए। इससे पूरे विश्व में बिहार की ख्याती बढ़ेगी और तारेगना को पहचान मिलेगी।

बहरहाल, गणित और खगोल विज्ञान में आर्यभट्ट का योगदान अभूतपूर्व और प्रभावशाली था। आर्यभट्ट द्वारा की गई खोजें और आविष्कार विज्ञान और गणित के क्षेत्र में मददगार साबित हुए। त्रिकोणमिति, पाई, स्थानीय मान प्रणाली आदि जैसे गणित में आर्यभट्ट के योगदान ने महत्वपूर्ण समस्याओं को हल किया और आज भी स्कूलों और कॉलेजों में उनका अभ्यास किया जाता है और पढ़ाया जाता है। खगोल विज्ञान में उनके योगदान ने वैज्ञानिक क्षेत्र में बड़े बदलाव लाए, जिससे वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष यात्रियों को खगोल विज्ञान में नए मील के पत्थर हासिल करने में मदद मिली। ●

आर्यभट्ट : भारत का पहला खगोलविद जिसने समय से पहले सितारों को पढ़ लिया

● **रंधीर कुमार**

जब आज की दुनिया सुपरकंप्यूटर और सैटेलाइट से ब्रह्मांड की गुत्थियाँ सुलझा रही है, तब सोचिए उस युग को, जब न टेलीस्कोप था, न कैलकुलेटर, फिर भी एक भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री ने सैकड़ों साल पहले ब्रह्मांड के रहस्यों को कागज और कलम से हल कर दिया था। हम बात कर रहे हैं महान आर्यभट की, जिनका नाम आज भी विज्ञान की किताबों में श्रद्धा से लिया जाता है।

☞ **कौन थे आर्यभट? :-** 476 ईस्वी में जन्मे आर्यभट नालंदा विश्वविद्यालय के विद्वान थे। उन्होंने महज 23 वर्ष की उम्र में अपनी कालजयी रचना 'आर्यभटीय' लिख डाली, जिसमें गणित और खगोलशास्त्र का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

☞ **शून्य की अवधारणा: भारत की अमूल्य देन :-** हालांकि शून्य की खोज पर कई विवाद हैं, लेकिन यह निर्विवाद है कि आर्यभट ने गणित में शून्य की शक्ति को पहचाना और उसका व्यावहारिक उपयोग किया। उनके बिना आज का कम्प्यूटर युग शायद कल्पना भी न होता।

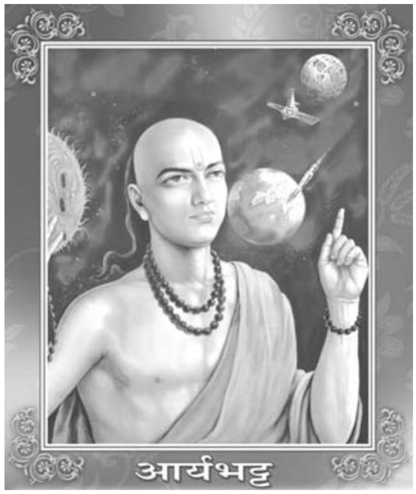

☞ **धरती घूमती है : पहले आर्यभट ने कहा था :-** जिस बात को गैलीलियो और कोपरनिकस ने यूरोप में 15वीं-16वीं शताब्दी में बताया, उसे आर्यभट ने 5वीं शताब्दी में ही साबित कर दिया था कि धरती अपनी धुरी पर घूमती है। उन्होंने लिखा : 'जैसे नाव में बैठे व्यक्ति को किनारे की वस्तुएँ पीछे जाती दिखती हैं, वैसे ही स्थिर ताराएँ घूमती प्रतीत होती हैं, जबकि धरती स्वयं घूमती है।'

☞ **गणना में गहराई :-** उन्होंने पाई (च) का मान 3.1416 तक निकाला ख्र वो भी बिना किसी आधुनिक उपकरण के। साथ ही त्रिकोणमिति, बीजगणित और ज्यामिति में जो योगदान आर्यभट का रहा, वह युगों तक विज्ञान की नींव बना रहेगा।

☞ **निष्कर्ष :-** आर्यभट सिर्फ एक वैज्ञानिक नहीं, बल्कि भारत की वैज्ञानिक चेतना के प्रतीक थे। उनके विचार आज भी शोध और नवाचार की प्रेरणा हैं। उनकी विरासत हमें यह सिखाती है कि ज्ञान का प्रकाश काल और तकनीक का मोहताज नहीं होता। ●

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया

● **प्रो० रामजीवन साह**

भारत जिन-जिन विशेषताओं के आधार पर विश्व गुरु कहलाया। उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगासन है- योगासन आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और सामाजिक तीनों दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण तथ्य है। अर्थात् परमपिता परमेश्वर में अपने आपको एकिकार करने के लिए योगासन आवश्यक है। विज्ञान कहता है शरीर को स्वस्थ रखना परम आवश्यक है, क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वच्छ विचार उत्पन्न होते हैं। शरीर को स्वस्थ व्यायाम के द्वारा ही रखा जा सकता है। व्यायाम में योगासन सर्वोत्तम है। समाज का हर व्यक्ति स्वस्थ रहने पर समाज खुशहाल रहता है। खुशहाली रहने से समाज में सामाजिक समरसता सदा बना रहता है, इसके लिए भी योगासन आवश्यक है।

अंग्रेजी में लवहं के प्रत्येक अक्षर योगा को परिभाषित करता है। ल से your अर्थात तुम्हारा, व से objectives अर्थात् उद्देश्य ह से guidelines अर्थात् दिशा निर्देश और ं से ssessment अर्थात् मूल्यांकन यानि शरीर को जिस उद्देश्य के लिए दिशा निर्देश दिया गया उसका मूल्यांकन करना। इसका भावार्थ हुआ कि योग साधनाओं को अपनाते हुए मन को नियंत्रित कर, संयमित कर, आत्मा का परमात्मा से मिलन ही योग है।

योग आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक प्रथाओं का एक समूह है, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई। योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना। योग शारीरिक व्यायाम, शारीरिक मुद्रा, ध्यान, सांस लेने की तकनीकों और व्यायाम को जोड़ता है। गीता में कहा गया है कि 'मन को नियंत्रित करना, इन्द्रियों को वस में करना, सांसारिक कार्यो को निष्कामभाव से करना, जिससे आत्मसाक्षात्कार और ईश्वर से मिलन हो सके', यही योग है।

भारत अति प्राचीन काल से ही कहते आ रहा है 'बसुधैव कुटुम्बकम्'अर्थात यह सम्पूर्ण पृथ्वी हमारा परिवार है और दूसरा है 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया। ●

भगवान का दूसरा पर्याय हैं पिता

पिता एक ऐसा शब्द है, जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ऐसा पवित्र रिश्ता, जिसकी तुलना किसी और रिश्ते से नहीं हो सकती। बचपन में जब कोई बच्चा चलना सीखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उंगली थामता है। नन्हा सा बच्चा पिता की उँगली थामे और उसकी बाँहों में रहकर बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चे जिद करना शुरू कर देते हैं और पिता उनकी सभी जिदों को पूरा करते हैं। बचपन में चॉकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवावर्ग तक बाइक, कार, लैपटॉप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक आपकी सभी माँगों को वो पूरा करते रहते हैं, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब भागदौड़ भरी इस जिंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। दुनियां भर के सारे रिश्ते निभाकर हमने ये जाना है की माता-पिता के सिवाय कोई अपना नहीं होता। जिसने भी इस सच को जान लिया, वो बहुत ही खुशनसीब है और जिन्होंने इस सच को जानते हुए भी अपनी आंखे बंद कर ली, इस दुनियां में उनसे ज्यादा बदनसीब और कोई नहीं। ***हमारे जीवन में पिता एक ऐसे इंसान हैं, जिनको हम जीते जी पहचान नहीं पाते। पिता की कमी हमें तब महसूस होती है, जब हमारे बीच सभी लोग हो, लेकिन पिता न हो।*** इसलिए पिता को समझने की हमें कोशिश करनी चाहिए और उनका सहारा बनना चाहिए। किसी व्यक्ति के जीवन में पिता का क्या महत्व होता है, इन बातों को कितने भी पन्नों में लिखकर कैद कर ली जाये, फिर भी यह अधूरी ही होगी, क्योंकि पिता का महत्व को कभी आंका नहीं जा सकता। हां पिता के महत्व और उनका अपने बच्चों के प्रति दिये गये योगदान 'फादर्स डे' यानि 'पिता दिवस' में चार चांद जरूर लगा देंगे और उक्त दिवस को खास बनाने के लिए ऐसा क्या किया जाना चाहिए, जो यादगार बन जाये? प्रस्तुत है 'पिता दिवस' के अवसर पर पत्रिका के संयुक्त संपादक **अमित कुमार** के द्वारा उन तमाम बच्चों की तरफ से उनके पिता के महत्व और योगदान पर विश्लेषनात्मक रिपोर्ट :-

हमारे ग्रन्थों में माता-पिता और गुरु तीनों को ही देवता माना गया है। जिस स्थूल जगत् में हम हैं, उसमें वही हमारे वास्तविक देवता हैं। इनकी सेवा और भक्ति में कसर रह जाए तो फिर ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं और अगर हमने इनकी सेवा पूरे मन से की तो भगवान स्वयं कच्चे धागे से बंधे भक्त के पीछे-पीछे चल पड़ते हैं। आखिर श्रवण कुमार में ऐसा क्या खास था कि किसी भी भगवान से उनकी अहमियत कम नहीं है। माता-पिता की भक्ति और सेवा ने उसे भक्त प्रह्लाद और ध्रुव के बराबर का आसन दिलाया है। पिता चाहे कैसे भी वचन बोले, कैसा भी बर्ताव करे, संतान को उनके प्रति श्रद्धा और विनम्रता से आज्ञाकारी होना ही चाहिए। केवल इतना सूत्र भर साध लेने से हम उस ईश्वर के राज्य के अधिकारी बन जाते हैं, जिसे पाने के लिए जाने कितने तपस्वियों ने शरीर गलाया, बरसों साधना की। कन्धे पर माता-पिता को लेकर तीर्थ कराने निकला श्रवण जब उनकी प्यास बुझने के लिए पानी भरते हुए राजा दशरथ का एक तीर लग जाने से प्राण त्यागता है, तब यही कहता है- 'मेरे माता-पिता प्यासे हैं, आप उन्हें जाकर पानी पिला दें।' प्राण त्यागते हुए भी जिसे अपने माता-पिता का ध्यान रहे, वह संतान उस युग में ही नहीं, इस युग में भी धन्य है। उसे किसी काल की परिधि में नहीं बांध सकते।

पिता एक ऐसा शब्द जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ऐसा पवित्र रिश्ता जिसकी तुलना किसी और रिश्ते से नहीं हो सकती। बचपन में जब कोई बच्चा चलना सीखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उंगली थामता है। नन्हा सा बच्चा पिता की उँगली थामे और उसकी बाँहों में रहकर बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चे जिद करना शुरू कर देते हैं और पिता उनकी सभी जिदों को पूरा करते हैं। बचपन में चॉकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवावर्ग तक बाइक, कार, लैपटॉप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक आपकी सभी माँगों को वो पूरा करते रहते हैं, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब भागदौड़ भरी इस जिंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। इसी को ध्यान में रखकर पितृ दिवस मनाने की परंपरा का आरम्भ हुआ।

पिता को आमतौर पर पापा भी कहते हैं तथा अंग्रेजी में फादर कहते हैं। वह परिवार के मुखिया होते हैं, इसीलिए घर के हर छोटे बड़े निर्णय लेने का अधिकार केवल पिता के ही पास होता है, क्योंकि उनके पास लंबे समय का अनुभव और जीवन का ज्ञान होता है। वह अपने इस अनुभव और ज्ञान के कारण परिवार को दूसरी बुराइयों और दुनियां के गलत लोगों से बचाते हैं। पिता का स्वभाव बाहर से जितना कठोर होता है वे अन्दर से उतने ही शांत और सरल होते हैं, यदि कोई व्यक्ति गलत कार्य करता है तो उसे डांटते भी है, जिस वजह से वह अपनी गलती सुधार कर अच्छा निर्णय ले सके।

जीवन का आधार ही पिता है, पिता से ही घर होता है। पिता ही जीवन में सबसे महत्वपूर्ण होते है। बिना पिता के जीवन नरक सा लगता है। माता-पिता के बिना जीवन अनुसाशन के बिना ही बीतता है, कोई रोक टोक नहीं होती है, मगर जीवन एक कटी हुई पतंग के सामान हो जाता है। पिता हमारे जीवन में बहुत महत्व रखते हैं, पिता न होते तो शायद मेरा कोई अस्तित्व ही न होता। पिता बिना किसी लोभ के अपने बच्चों के लिए पूरी जिंदगी मेहनत करते है ताकि उनका बच्चा पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बने और उनका नाम गर्व से ऊँचा हो। हर हाल में माता-पिता चाहते हैं की हमारे बच्चे को किसी भी प्रकार का दुःख न देखना पड़े। धरती पर भगवान के रूप में मेरे माता पिता ही हैं जो मुझे प्यार करते है और मेरे साथ हमेशा मेरी परेशानियों को हल करने में सहायता देते है। जीवन में पिता का होना बहुत जरुरी होता है बिना पिता के जीवन मानो बीना छत के घर, बीना आसमान के जमीन का होना है। पिता का जीवन में बहुत बड़ा भाग होता है, जिसकी व्याख्या करना बेहद मुश्किल है। पिता न होते तो घर नहीं चलता। बिना पिता के दुनिया कभी नहीं अपनाती। पिता का जीवन में होना बहुत जरूरी है, जिनके पास पिता होते हैं उसके पास दुनिया की सबसे बड़ी ताकत होती है। पिता से ही नाम है और पहचान है, माता-पिता एक वो अनमोल रत्न हैं, जिनके आशीर्वाद से दुनियां की सबसे बड़ी कामयाबी भी हांसिल की जा सकती है। माता-पिता ही है जो हमें सच्चे दिल से प्यार करते हैं, बाकी इस दुनिया में सब नाते रिश्तेदार झुठे होते हैं। पिता हमें पढ़ाते हैं, लिखाते हैं, एक कामयाब इन्सान बनाते है। जब बच्चे को कामयाबी हांसिल होती है; चाहे वो कितनी बड़ी हो, चाहे कितनी छोटी माता-पिता को लगता है की ये कामयाबी उन्हें मिली है। पता नहीं क्यों हमे हमारे पिता इतना प्यार करते हैं, दुनिया के बैंक खाली हो जाते हैं, मगर पिता की जेब हमेशा हमारे लिए भरी रहती हैं। पता नहीं जरुरत के समय न होते हुए, कहाँ से पैसे आ जाते हैं।

पिता शब्द की व्याख्या करना वैसे तो बहुत कठिन है, क्योंकि वह बहुत विस्तृत है। फिर भी मैं अपने विचारों को पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयास कर रहा हूँ, इसमें कुछ त्रुटि हो तो क्षमा करे। पिता परिवार के लिए वटवृक्ष की तरह होते हैं। वह बच्चों के जीवन का आधार होते हैं। वह एक उम्मीद, एक आस और विश्वास होते हैं। पिता बच्चों के लिए भगवान स्वरूप होते हैं, जो उनके हर सपने को पूरा करने की सोच रखते हैं। एक पिता का जीवन अपने परिवार के इर्दगिर्द घूमता रहता है, वह हमेशा बच्चों को खुशी देने की सोच रखते हैं, पिता बच्चों के संघर्ष में हौंसलों की दीवार है। जीवन में पिता का होना बहुत जरूरी होता है, पिता से ही बच्चों की पहचान है। उनका प्रेम अनमोल होता है, माता-पिता के आशीर्वाद से दुनियां की बड़ी से बड़ी कामयाबी हासिल की जा सकती है। कोई भी समस्या हो उसका समाधान पिता के पास होता है, बच्चों को पिता की महत्ता का पता जब वे खुद माता-पिता बनते हैं, तो और अधिक होता है। बचपन में माता-पिता निस्वार्थ भाव से बच्चों का पालन पोषण करते हैं। उसी प्रकार उनके बूढ़े हो जाने पर दुनिया के हर इंसान को उनको बच्चों की तरह प्यार और विश्वास देना चाहिए, उनके पास बैठना चाहिए, उनसे बांते करना चाहिए, जिससे वह खुश हो सके और उनको लगे कि, जो संस्कार मैंने अपने बच्चों को दिये है, वह आज मुझे फलते-फूलते नजर आ रहे हैं। बस यही इच्छा हर पिता की होती है। माता पिता का कर्ज दुनियां में सभी कर्जो से बड़ा होता है, जिसे किसी भी कीमत पर चुकाया नहीं जा सकता है, वह अनमोल होता है। फिर भी जो अमूल्य समय बचपन में उन्होंने हमें दिया है, उसे हमें भी उन्हें बूढापे में देना चाहिए।

पुराणों में कहा गया है की पिता राज प्रदान नहीं कर सकता, लेकिन दुनियां के हर पुत्र का ये फर्ज होता हे की वो अपने पिता को राज प्रदान करने की हर एक कोशिश करे। दुनियां भर के सारे रिश्ते निभाकर हमने ये जाना है की माता-पिता के सिवाय कोई अपना नहीं होता। जिसने भी इस सच को जान लिए वो बहुत ही खुशनसीब है और जिन्होंने इस सच को जानते हुए भी अपनी आंखे बंध कर ली है इस दुनियां में उनसे ज्यादा बदनसीब और कोई नहीं। ***हमारे जीवन में***

पिता एक ऐसे इंसान हैं, जिनको हम जीते जी पहचान नहीं पाते। पिता की कमी हमें तब महसूस होती है, जब हमारे बीच सभी लोग हो, लेकिन पिता न हो। इसलिए पिता को समझने की हमें कोशिश करनी चाहिए और उनका सहारा बनना चाहिए। जो अपनी आंखे बंद करके आपसे भरोसा और प्रेम करे वो प्रेमिका होती हे और आंखे खोलकर आपसे प्रेम करे वो आपका सच्चा दोस्त होता है, जबकि जो अपनी आंखे बंद होने तक आपसे प्रेम करे, वो माँ होती है और आँखों में प्रेम न जताये हुए भी आपसे प्रेम करे वो एक पिता ही होता है। पिता वो है जो अपना पूरा समय अपने संतानो, पत्नी और परिवार के लिए हर रोज काम करते हैं। वो खुद के लिए कम लेकिन अपने संतानो, परिवार और पत्नी के लिए अपना खून पसीना एक करते है, वो पापा, डैडी और बाबूजी हैं। पिता वो हैं जिनके होने का हमें कभी अहसास नहीं होता, लेकिन पिता न होने का एहसास जिन्दगी भर रहता है। पिता वो है, जो अपने परिवार के लिए अपनी हर खुशी को कुर्बान कर देते हैं। यानि कि पिता वो फरिस्ता है, जो हमें सिर्फ देता है। दुनियां का कोई भी आदमी अपना रात-दिन एक करता है तो उसके पीछे खुद का शरीर कम, लेकिन अपने संतानो पत्नी और परिवार के भरण-पोषण कही ज्यादा रहता है, वो पापा, डैडी और बाबूजी हैं। वो पिता ही होते हैं, जो अपने बच्चे को अपने कंधे पर बैठकर दुनियां दिखाते हैं, चाहे वो छेद वाले कपडे पहने, लेकिन अपने बच्चो को नए कपडे पहनाते हैं, वो पापा, डैडी और बाबूजी हैं। आज के युग में बच्चे ऐसे होते हे की कभी पापा जमीन पर बैठे हुए होते हैं और उनके संतान सोफे में बैठे हुए नजर आते हैं, कई बार हमें ये भी मालूम नहीं पड़ता की। उसमे पिता कौन और बेटा कौन है? पिता ही घर होता है और पिता ही अपने परिवार का आधार होता हैं। पिता ही होते हैं, जिन पर घर की हर जिम्मेदारी होती है। पिता एक नीम के पेड़ की तरह होते हैं, जो भले ही हमे डांट लें, लेकिन उसके पीछे हमारी ही भलाई होती है।

आचार्य चाणक्य के अनुसार पुत्र वही है, जो अपने पिता की आज्ञा का पालन करे यानि कि बच्चो को अपने पिता की हर सलाह का पालन करना चाहिए और सदैव उनकी बातों का अनुसरण करे। पिता को अपने संतानो के प्रति बहुत प्यार होता है, लेकिन पिता को माँ की तरह उसे बयां करना नहीं आता। माँ अपने संतानो को दुःख में देखकर रो लेंगी मगर एक पिता अपने अंदर ही अंदर झुझते रहेंगे, मगर वो कहेंगे नहीं वरना ममता और भावुकता में पिता किसी से पीछे नहीं रहते। ना पिता में जज्बात कम होते हे और ना ही आस्था बस वो अपने प्यार को अपनी कमजोरी नहीं बनने देते और यही उनकी ताकत होती है। पूरी दुनियां में एक पिता ही वो इंसान हैं, जो ये चाहता है की आप उससे भी ज्यादा कामयाब बने। माता-पिता ही होते हैं, जो आपको बिना कोई स्वार्थ के प्यार करते हैं, इसलिए अपने माता-पिता की जीते जी कदर करे, क्योकि वो ही होते हैं जिन्होंने आपको अपना सबकुछ छोड़कर आपको सबकुछ दिया है। जब भी आपके पिता आप पर गुस्से हो तो आप उनके गुस्से को समझो, क्योकि पिता के गुस्से के पीछे भी उनका अपनापन होता है, इसलिए अपने माता-पिता के गुस्से को कभी दिल पर न लो। किसी भी इंसान के विकास के लिए माँ के ममता के साथ-साथ पिता का योगदान भी इतना ही आवश्यक है, पिता से ही बच्चो का सपूर्ण विकास सम्भव है।

INSPIRATION for Father's Day was Civil War veteran William Jackson Smart, who reared six children after his wife died.

एक बच्चे के सपूर्ण विकास में एक पिता का योगदान माता के योगदान से कम नहीं होता। यानि कि अपने बच्चो के कठिन समस्या के आगे पिता एक चट्टान की तरह खड़ा होता है और अपने संतानो पर जरा सी भी आंच नहीं आने देते। पिता का व्यक्तित्व आपको भले ही ऊपर से कठोर लगे, लेकिन वो ही कठोर पिता के अंदर से अपने संतानो के लिए हमेंशा प्यार ही होता है। अक्सर पिता अपने संतानों पर लाड प्यार न जताये, लेकिन अपने संतानो की खुशी के लिए अपना दिन रात एक कर देता है। संतानो के लिए एक पिता वटवृक्ष की तरह होते हैं जो अपने संतानो के सुख और दुःख में हमेंशा साथ होते हैं। यानि कि एक पिता किसी भी बच्चे के लिए किसी भगवान से कम नहीं होते। वो पिता ही होते हैं जो अपने बच्चो के सपनो को पूरा करने की सोच रखते हैं और वो ही ये चाहते हैं की मेरा बच्चा मेरे से भी ज्यादा तरक्की करे। बच्चो की चाहे छोटी समस्या हो या बड़ी, उनका समाधान पिता के पास होता है। पिता के बिना हमारी जिन्दगी कटी पतंग की तरह होती है, जो कहा हमें ले जाएगी ये हमें भी मालूम नहीं होता। पिता ही होते हैं जो हमें सही क्या है और गलत क्या है, इसका ज्ञान देते हैं, हमें सही रास्ते की पहचान करवाते हैं। पिता के बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं है। जीवन में पिता होना ही हमारे लिए काफी है, क्योकि पिता ही हमारी पहचान होते हैं। लेकिन हमे पिता को जीते जी पहचान नहीं पाते। पिता का महत्व उनसे पूछो, जिनके सर पर पिता का हाथ नहीं है। पिता का प्यार अनमोल होता है। माता-पिता के आशीर्वाद से हम बड़ी सी बड़ी कामयाबी भी हासिल कर सकते हैं। पिता का हमारी जिन्दगी में होना ही काफी है, क्योकि जिनके पास पिता होते हैं, उनके पास दुनियां की सबसे बड़ी ताकत होती है। पिता का महत्व हमें तब समझ आता है, जब हम खुद एक पिता बने। तब हमें ये महसूस होता है की एक पिता की जिन्दगी एक पिता ही समझ सके। पिता जिस तरह से अपने बच्चो को बचपन में पालन पोषण, प्यार करते हैं, वैसे ही हमें भी जब पिता वृद्ध हो जाये तब हमें भी पिता का ख्याल रखना चाहिए, क्योकि हर एक पिता की ये ख्वाइश होती है की उनके संतान उसके पास रहे और उनकी ख्याल रखे। इसलिए हमें अपने माता पिता को प्यार और विश्वास देना चाहिए। उनके साथ बैठना चाहिए और सुख दुःख की बाते करनी चाहिए, ताकि उनको लगे की जो हमने अपने बच्चो को संस्कार दिए थे वो आज हमें नजर आ रहे हैं। इस दुनिया में सभी कर्जो से बड़ा कर्ज माता पिता का होता है, जिसे हम किसी भी जन्म में चूका नहीं पाएंगे, फिर भी हमें माता पिता ने बचपन में जो समय उन्होंने दिया, वो हमें माता पिता के वृद्ध होने पर देना चाहिए। अपने पिता की हर एक बात सुने और पालन करे, क्योकि वो पिता ही होते हैं, जिन्होंने तब भी आपकी सुनी, जब आपको कुछ भी बोलना नहीं आता। कुछ लोग बड़े होकर अपने माता पिता को ये कहते हैं की आपने मेरे

लिए किया ही क्या है, लेकिन शायद उनको ये मालूम नहीं होता की माता पिता की पूरी जिन्दगी निकल जाती है।

बहरहाल, आज सम्पूर्ण देश ही नहीं बल्कि विश्व पिता के महत्वों पर 'फादर्स डे' यानि पिता दिवस के रूप में मनाता है। भारतीय संस्कृति में 'पितृ-दिवस' के मायने ही अलग हैं। यहां इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अपने पिता द्वारा उनके पालन-पोषण के दौरान किए गए असीम त्याग और उठाए गए अनंत कष्टों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है। वैश्विक स्तर पर विशेष दिवस के रूप में अनेक पर्व एवं कार्यक्रम प्रचलित होने लगे हैं, जिनमें से एक 'पितृ-दिवस' यानी 'फादर्स डे' भी है। दुनिया में यह अलग-अलग तिथियों को मनाया जाता है। भारत, अमेरिका, श्रीलंका, अफ्रीका, पाकिस्तान, बर्मा, बांग्लादेश, जापान, चीन, मलेशिया, इंग्लैण्ड आदि दुनिया के सभी प्रमुख देशों में इसे जून के तीसरे रविवार को मनाते हैं। भारत में पिछले कुछ वर्षों से 'पितृ-दिवस' के प्रति रूझान में बड़ी तेजी से बढ़ौतरी दर्ज की जा रही है। 'फादर्स डे' मनाने की शुरूआत पश्चिमी वर्जीनिया के फेयरमोंट में 5 जुलाई, 1908 को हुई थी। इसका मूल उद्देश्य 6 दिसम्बर, 1907 को पश्चिम वर्जीनिया के मोनोंगाह की एक खान दुर्घटना में मारे गए 210 पिताओं को सम्मान देना था। लेकिन, इसके बाद 'फादर्स डे' मनाने का सिलसिला धीरे-धीरे बढ़ता चला गया और यह वैश्विक स्तर पर मनाया जाने लगा। बेशक, 'फादर्स डे' के मूल में पश्चिमी वर्जीनिया की एक दर्दनाक खान दुर्घटना मौजूद हो, लेकिन भारत में अपने माता-पिता और गुरु को सम्मान देने और उन्हें भगवान समान समझने के संस्कार एवं नैतिक दायित्व चिरकाल से चलते आ रहे हैं। भारतीय संस्कृति में 'पितृ-दिवस' के मायने ही अलग हैं। यहां इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अपने पिता द्वारा उनके पालन-पोषण के दौरान किए गए असीम त्याग और उठाए गए अनंत कष्टों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना अथवा स्वर्गीय पिताश्री की स्मृतियों को संजोना है ताकि हम एक श्रेष्ठ एवं आदर्श संतान के नैतिक दायित्वों का भलीभांति पालन कर सकें। इस तरह के सुसंकार भारतीय संस्कृति में कूट-कूटकर भरे हुए हैं। अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने, उनके दिखाए मार्ग पर चलने, वृद्धावस्था में उनकी भरपूर सेवा करने आदि हर नैतिक दायित्वों का पाठ बचपन से ही पढ़ाया जाता है। भारतीय संस्कृति और पौराणिक साहित्य में माता-पिता और गुरु को जो सर्वोच्च सम्मान और स्थान दिया गया है, शायद उतना कहीं और किसी सभ्यता व संस्कृति में देखने को नहीं मिलेगा।

हिन्दी साहित्य में 'पिता' को 'जनक', 'तात', 'पितृ', 'बाप', 'प्रसवी', 'पितु', 'पालक', 'बप्पा' आदि अनेक पर्यायवाची नामों से जाना जाता है। पौराणिक साहित्य में श्रवण कुमार, अखण्ड ब्रह्चारी भीष्म, मर्यादा पुरुषोत्तम राम आदि अनेक आदर्श चरित्र प्रचुर मात्रा में मिलेंगे, जो एक पिता के प्रति पुत्र के अथाह लगाव एवं समर्पण को सहज बयां करते हैं। वैदिक ग्रन्थों में 'पिता' के बारे में स्पष्ट तौर पर उल्लेखित किया गया है कि 'पाति रक्षति इति पिता' अर्थात जो रक्षा करता है, 'पिता' कहलाता है। यास्काचार्य प्रणीत निरूक्त के अनुसार, 'पिता पाता वा पालयिता वा', 'पिता-गोपिता' अर्थात 'पालक', 'पोषक' और 'रक्षक' को 'पिता' कहते हैं। वही महाभारत में 'पिता' की महिमा का बखान करते हुए कहा गया है :-

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परम तपः।
पितरि प्रितिमापन्ने सर्वाः प्रीयन्ति देवताः

अर्थात 'पिता' ही धर्म है, 'पिता' स्वर्ग है और पिता ही सबसे श्रेष्ठ तपस्या है। 'पिता' के प्रसन्न हो जाने से सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं। इसके साथ ही कहा गया है कि 'पितु र्हि वचनं कुर्वन न कन्श्चितनाम हीयते' अर्थात 'पिता' के वचन का पालन करने वाला दीन-हीन नहीं होता।

वाल्मीकि रामायण के अयोध्या काण्ड में पिता की सेवा करने व उसकी आज्ञा का पालन करने के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा गया है :-

न तो धर्म चरणं किंचिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरि शुश्रुषा तस्य वा वचनक्रिपा।।

अर्थात, पिता की सेवा अथवा, उनकी आज्ञा का पालन करने से बढ़कर कोई धर्माचरण नहीं है।

हरिवंश पुराण के विष्णुपर्व में पिता की महत्ता का बखान करते हुए कहा गया है :-

दारूणे च पिता पुत्र नैव दारूणतां व्रजेत।
पुत्रार्थ पदःकष्टाः पितरः प्रान्पुवन्ति हि।।

अर्थात, पुत्र क्रूर स्वभाव का हो जाए तो भी पिता उसके प्रति निष्ठुर नहीं हो सकता, क्योंकि पुत्रों के लिए पिताओं को कितनी ही कष्टदायिनी विपत्तियाँ झेलनी पड़ती हैं।

महाभारत में युधिष्ठर ने यज्ञ के एक सवाल के जवाब में आकाश से ऊँचा 'पिता' को कहा है और यक्ष ने उसे सही माना भी है। इसका अभिप्राय है कि पिता के हृदय-आकाश में अपने पुत्र के लिए जो असीम प्यार होता है, वह अवर्णनीय है। पदमपुराण में माता-पिता की महत्ता बड़े ही सुनहरी अक्षरों में इस प्रकार अंकित है :-

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात सर्वयत्रेन पुतयेत।।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्त द्वीपा वसुंधरा।
जानुनी च करौ यस्य पित्रोः प्रणमतः शिरः।
निपतन्ति पृथ्वियां च सोअक्षयं लभते दिवम्।

अर्थात, माता सभी तीर्थों और पिता सभी देवताओं का स्वरूप है। इसलिए सब तरह से माता-पिता का आदर सत्कार करना चाहिए। जो माता-पिता की प्रदक्षिणा करता है, उसके द्वारा सात द्वीपों से युक्त पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है। माता-पिता को प्रणाम करते समय जिसके हाथ घुटने और मस्तिष्क पृथ्वी पर टिकते हैं, वह अक्षय स्वर्ग को प्राप्त होता है। मनुस्मृति में महर्षि मनु भी पिता की असीम महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं :-

उपाध्यान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्त्रं तु पितृन माता गौरवेणातिरिच्यते।।

अर्थात, दस उपाध्यायों से बढ़कर 'आचार्य', सौ आचार्यो से बढ़कर 'पिता' और एक हजार पिताओं से बढ़कर 'माता' गौरव में अधिक है, यानी बड़ी है।

'पिता' के बारे में मनुस्मृति में तो यहां तक

कहा गया है :

''पिता मूर्ति: प्रजापते:''

अर्थात, पिता पालन करने से प्रजापति यानी राजा व ईश्वर का मूर्तिरूप है।

भारतीय संस्कृति और वैदिक साहित्य में जोर देकर कहा गया है कि माता-पिता द्वारा जन्म पाकर ललित पालित होने के पश्चात बच्चा जब बड़ा हो जाता है तब, माता-पिता के प्रति उसके कुछ कर्तव्य हो जाते हैं, जिसका उसे पालन करना चाहिए। वैदिक संस्कृति कहती है कि पुत्र का कर्तव्य है कि माता-पिता की आज्ञा का पालन करे। जो पुत्र माता-पिता एवं आचार्य का अनादर करता है, उसकी सब क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं, क्योंकि माता-पिता के ऋण से मुक्त होना असम्भव है। इसीलिए, माता-पिता तथा आचार्य की सेवा-सुश्रुषा ही श्रेष्ठ तप है। लेकिन, विडम्बना का विषय है कि आधुनिक युवा वर्ग अपने पथ से विचलित होकर अपनी प्राचीन भारतीय वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति को निरन्तर भुलाता चला जा रहा है। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। आज घर-घर में पिता-पुत्रों के बीच आपसी कटुता, वैमनस्ता और झगड़ा देखने को मिलता है। भौतिकवाद आधुनिक युवावर्ग के सिर चढ़कर बोल रहा है। उसके लिए संस्कृति और संस्कारों से बढ़कर सिर्फ निजी स्वार्थपूर्ति और पैसा ही रह गया है। इससे बड़ी विडम्बना का विषय और क्या हो सकता है कि एक 'पिता' अपने पुत्र के मुख से सिर्फ प्रेम व आदर के दो शब्द की उम्मीद करता है, लेकिन उसे पुत्र से उपेक्षित, तिरस्कृत और अभद्र आचरण के अलावा कुछ नहीं मिलता है। नि:सन्देह, यह हमारी आधुनिक शिक्षा पद्धति के अवमूल्यन का ही दुष्परिणाम है। पौराणिक ग्रन्थ देवीभागवत में स्पष्ट तौर पर लिखा गया है :-

धिक तं सुतं य: पितुरीप्सितार्थ,
क्षमोअपि सन्न प्रतिपादयेद य:।
जातेन किं तेन सुतेन कामं,
पितुर्न चिन्तां हि सतुद्धरेद य:।।

अर्थात, उस पुत्र को धिक्कार है, जो समर्थ होते हुए भी पिता के मनोरथ को पूर्ण करने में उद्यत नहीं होता। जो पिता की चिन्ता को दूर नहीं कर सकता, उस पुत्र के जन्म से क्या प्रयोजन है?

इसी तरह गरूड़ पुराण में लिखा गया है :-

सर्वसौख्यप्रद: पुत्र: पित्रो: प्रीतिविवद्धर्न:।
आत्मा वै जायते पुत्र इति वेदेषु निश्चितम।

अर्थात, पुत्र सब सुखों को देने वाला होता है, माता-पिता का आनंदवर्द्धक होता है। वेदों में ठीक ही कहा गया है कि आत्मा ही पुत्र के रूप में जन्म लेती है।

आधुनिक युवापीढ़ी को 'पितृ-दिवस' पर संकल्प लेना चाहिए कि वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति के अनुरूप वे अपने पिता के प्रति सभी दायित्वों का पालन करने का हरसंभव प्रयास करेंगे और साथ ही महर्षि वेदव्यास द्वारा महाभारत के आदिपर्व में दिए गए ज्ञान का सहज अनुसरण करेंगे कि 'जो माता-पिता की आज्ञा मानता है, उनका हित चाहता है, उनके अनुकूल चलता है तथा माता-पिता के प्रति पुत्रोचित व्यवहार करता है, वास्तव में वही पुत्र है।' हमें हमेशा यह याद रखने की आवश्यकता है कि ''देवतं हि पिता महत'' अर्थात 'पिता' ही महान देवता है।

पिता के महत्वों और उनके बच्चों का पिता के प्रति निष्ठा को पूरा करने को पूरी उम्र भी कम है किन्तु एक खास दिन का चयन जरूर हुआ है जो पिता और उनके बच्चों के लिए अहमियत रखता है, जिसे फादर्स डे के रूप में मनाया जाता है। फादर्स डे अपने पिता को स्पेशल महसूस कराने का दिन होता है। इस दिन बच्चे अपने पिता के प्रति अपने आदर को तरह-तरह के माध्यम से दर्शाते हैं।

कहते हैं कि पितृ दिवस की शुरुआत बीसवीं सदी के प्रारंभ में पिता धर्म तथा पुरुषों द्वारा परवरिश का सम्मान करने के लिये मातृ दिवस के पूरक उत्सव के रूप में हुई। यह हमारे पूर्वजों की स्मृति और उनके सम्मान में भी मनाया जाता है। पितृ दिवस को विश्व में विभिन तारीखों पर मनाते है- जिसमें उपहार देना, पिता के लिये विशेष भोज एवं पारिवारिक गतिविधियाँ शामिल हैं। आम धारणा के विपरीत, वास्तव में पितृ दिवस सबसे पहले पश्चिम वर्जीनिया के फेयरमोंट में 5 जुलाई, 1908 को मनाया गया था। 6 दिसम्बर, 1907 को मोनोंगाह, पश्चिम वर्जीनिया में एक खान दुर्घटना में मारे गए 210 पिताओं के सम्मान में इस विशेष दिवस का आयोजन श्रीमती ग्रेस गोल्डन क्लेटन ने किया था। 'प्रथम फादर्स डे चर्च' आज भी सेन्ट्रल यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च के नाम से फेयरमोंट में मौजूद है। फादर्स डे मनाने के पीछे इसका एक महत्वपूर्ण इतिहास है। इस दिवस के मनाने का पहला आईडिया सोनोरा लौइस स्मार्ट डोड के दिमाग में आया। इन्होने ही पहली बार एक विशेष दिन अपने पिता विलियम स्मार्ट को विशेष रूप से सम्मानित करने की योजना बनायी। चूँकि यह अपने पिता को सम्मान देने की एक नयी प्रणाली थी, जिसमे क्रिएटिविटी को भी स्थान प्राप्त हो रहा था, इस वजह से यह दिन काफी मशहूर हुआ और लोगों ने इस दिवस का मनाना औपचारिक रूप से शुरू किया। सोनोरा ने यह दिवस जून के पहले रविवार को मनाने की योजना बनायी, क्योंकि यह दिवस इनके पिता के जन्मदिवस के करीब था। इस तरह से यह दिवस पहली बार 19 जून 1910 को वाशिंगटन के स्पोकेन में मनाया गया। वर्ष 1966 में प्रेसिडेंट लिंडन जॉनसन ने जून के तीसरे रविवार को फादर्स डे का आयोजन किया। इसके उपरान्त वर्ष 1972 में प्रेसिडेंट रिचर्ड निक्सन ने फादर्स डे को औपचारिक छुट्टी का दिन घोषित किया। पौराणिक मान्यता के अनुसार फादर्स डे मनाने की शुरूआत अमेरिकन महिला सोनोरा स्मार्ट डोड ने इसलिए किया था क्योंकि उनके जन्म के तुरंत बाद उनकी मां की मौत हो गई थी, जिसके बाद उनके पिता ने उनका बेहद अच्छी तरह से पालन पोषण किया था। यह देख

सोनोरा के मन में ख्याल आया कि एक दिन पिता के नाम भी होना चाहिए। 1 मई 1972 को ही राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने 'फादर्स डे' को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया था। किसी भी बच्चे के लाइफ में जितनी अहम भूमिका मां की होती है उतनी ही पिता की भी होती है। लेकिन मदर्स डे सेलिब्रेशन की धूम ज्यादा देखने को मिलती है। ये अच्छा मौका होता है जब आप अपने पिता को हर उस चीज के लिए धन्यवाद कह सकते हैं, जो उनकी वजह से हासिल हुई हैं। इसे सेलिब्रेट करने का कोई प्रचलित तरीका नहीं है। जहां कोई गले मिलकर, गिफ्ट देकर इसे मनाता है वहीं कुछ लोग फादर्स के साथ ट्रिप प्लान कर, उन्हें लंच या डिनर पर ले जाकर इसे स्पेशल बनाते हैं। पिता अपने परिवार के लिए प्रतिदिन कार्य करते हैं और उससे जो भी पूंजी प्राप्त होती है, वह परिवार के सुख के लिए लगा देते हैं। यदि आसान शब्दों में कहे तो पिता हमारे परिवार का एक महत्वपूर्ण आधार होता है, जो किसी भी तरह की समस्याओं से लड़ने के लिए तैयार रहते हैं। पिता के बारे में जितना कहे उतना कम है। पिता परिवार के महत्वपूर्ण सदस्यों में से एक होते हैं। वह अपनी खुशियों का बलिदान देकर अपने बच्चों और परिवार की खुशियों का ध्यान रखते हैं। वह अपने बच्चों से प्यार भी करते हैं और बच्चे गलत कार्य करते हैं तो उन्हें डांटते भी है, अपने बच्चों के बेहतर भविष्य और खुशी के खातिर वे मेहनत करने से कभी नहीं कतराते हैं। इसलिए हर साल पिता के सम्मान के लिए फादर्स डे मनाया जाता है। यह दिवस इसीलिए भी मनाया जाता है क्योंकि जिन लोगों के पिता नहीं होते हैं उन्हें पिता का महत्व तथा उनकी कमी का अनुभव ना हो। जिन लोगों के पिता की मृत्यु हो जाती है वह भी इस दिवस को बड़े अच्छे से मनाते हैं। समय के साथ आजकल के लोग इतने व्यस्त हो गये हैं, कि अपने सपने के पीछे घर को समय नहीं दे पाते हैं। यद्यपि वे अपने माता पिता से बहुत अधिक प्रेम करते हैं, किन्तु वे अपने प्रेम को दर्शाने का समय नहीं पा सकते है. ऐसे में यह एक दिन बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस दिन सभी बच्चे अपने पिता के प्रति कृतज्ञता जाहिर करने के लिए या तो औपचारिक छुट्टी लेते हैं, अथवा सरकार की तरफ से स्वयं छुट्टी घोषित की जाती है। इस दिन बच्चे सारा दिन अपने पिता के साथ गुजारते हैं, जिससे उनके बीच आई दूरियां कम हो जाती है। इस दिन बच्चे चाहे विदेश में भी होते हैं, तो इस दिन के बहाने अपने घर वापस आ जाते है। जिस तरह माँ पर मदर्स डे मनाया जाता है और इसका जीवन में अत्यधिक महत्व है, उसी तरह इस दिन का भी महत्व लोगों में बहुत अधिक है, इसलिए लोग फादर्स डे के रूप में इसे सेलिब्रेट करते हैं। स्वयं इस दिन के मायने सभी बच्चों के लिए खास हैं क्योंकि अपने बच्चों के प्रयासों को देखकर इस दिन पिता बहुत खुश रहते हैं। अतः बच्चे अपनी इच्छा पिता के सामने रख सकते हैं। इस दिन परिवार एक साथ रहता है। परिवार के सभी छोटे बड़े सदस्य अपनी भावनाएं साझा करते हैं, जिससे एक दूसरे के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त होती है और उन्हें समझने में आसानी होती है। इससे उनके स्वभाव के बारे में भी पता चलता है और पिता अपने परिवार के सदस्यों से वैसे ही बर्ताव करते हैं। इस दिन बच्चों को नए नए पकवान खाने को मिलते हैं। कुछ लोग अपने पिता के लिए केक भी लाते हैं, जिसको पूरा परिवार मिलकर खाता है। इस तरह से बहुत सारी मिठाई और केक खाने को मिलता है। इस दिन पिता के सामने हम अपनी कोई भी गलती रखते हैं तो वह उस गलती को माफ भी कर देते हैं। यदि गलती बड़ी हो तो उसे अपने स्तर पर समझाने की कोशिश करते हैं। इससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि पिता हमारे जीवन में कितने महत्वपूर्ण और अलौकिक सदस्य हैं। फादर्स डे के दिन पिता का अतिरिक्त प्यार प्राप्त होता है। वह अपने बच्चों से इतने प्रसन्न रहते हैं कि उन्हें किसी और चीज की आवश्यकता नहीं होती है। यह वह दिन होता है जिससे हमें कई लाभ प्राप्त होते हैं चाहे वह गलतियां माफ करना हो या पिता के साथ कहीं घूमने जाने की प्लानिंग हो।

फादर्स डे यानि पिता दिवस मनाने के तरह-तरह के तरीके आजकल लोग इस्तेमाल करते हैं। पिता दिवस का दिन जितना किसी पिता के लिए महत्वपूर्ण होता है, उतना ही उनके बच्चों के लिए महत्वपूर्ण होता है। फादर्स डे के दिन अपने आदर को प्रकट करने के लिए आप निम्नलिखित तरीके अपना सकते हैं। इस दिन आप अपने पिता को सुन्दर फादर्स डे का कार्ड देकर उनका मान बढ़ा सकते हैं। बाजार में कई कार्ड्स की दुकाने हैं, जहाँ से आप फादर डे थीम पर तरह तरह के कार्ड प्राप्त कर सकते हैं। कई बार ऐसी स्थिति हो जाती है कि बच्चे पिता को वह सभी बातें नहीं कह पाते हैं, जो वे अपने पिता के प्रति सोचते हैं। अतः इन कार्ड में आप अपने पिता के लिए अपने मन की बात भी लिख सकते हैं। आप अपने पिता के लिए खुद से तरह-तरह की शायरी व कवितायें लिख कर भी अपना प्रेम व्यक्त कर सकते हैं। यह एक अनोखी प्रक्रिया होगी, जिसके अंतर्गत आपके समस्त भाव एक सुन्दर रूप में समने आयेंगे। आप अपने जमा किये अथवा कमाए पैसे की सहायता से अपने पिता को गिफ्ट दे सकते हैं। आपको यह तो पता ही होगा कि आपके पिता की सबसे पसंदीदा चीज अथवा मिठाई आदि क्या है? आप अपने पैसे से अपने पिता के लिए यह खरीद सकते हैं। आप चाहें तो अपने पिता के लिए छोटी सी सरप्राइज पार्टी भी रख सकते हैं, इससे आपके पिता को यह ज्ञात होगा कि आप जिम्मेदार हो चुके हैं। इस दिन आप अपने पिता को उनके पसंदीदा स्थान पर भ्रमण कराने के लिए ले जा सकते हैं, अथवा ऐसी जगह जहाँ पर आपके पिता जाना चाहते हैं, पर अब तक नहीं जा पायें हैं। इससे यह दिन आप और आपके पिता के लिए यादगार हो जायेगा।

बहरहाल, जीवन में माता-पिता का ऐहसासों में माँ का प्यार अपने बच्चों के प्रति जो भाव देता है तो उससे कही ज्यादा एक पिता का अपने बच्चों के जीवन को नई दिशा और भविष्य बनाने में मील का पत्थर साबित होता है और अपने बच्चों के वह सपने जो नामुमकिन दिखते हैं, फिर भी उसे मुमकिन बनाने के लिए एक पिता सबकुछ करता है।●

दुश्मन युद्ध चाहता है, तो एक बार हो जाने दो

मनहुँ वीर रस सोवत जागा

घनन-घनन घण्टियों की तरह मंच पर कविता घनघना रही थी। बीच-बीच में बड़े घण्टे की ध्वनि सरीखी टन्न की ध्वनि श्रोताओं की ध्यान मुद्रा को चौतन्य कर देती, अद्‌भुत कविताओं पर उठी करतल ध्वनियों की गड़गड़ाहट व वाह-वाही श्रोताओं को आनन्द और कवियों को सामूहिक गिफ्ट दे रही थीं। प्रसंग था रँगीले राजस्थान में हाड़ौती की धरती पर बसे नगर बाराँ के कोटा रोड स्थित रिसोर्ट में राष्ट्रीय सन्त कवि स्वामी परमानन्द जी की अध्यक्षता में प्रात: स्मरणीय हिन्दुआणा सूर्य महाराणा प्रताप के 485 वें जयन्ती पर्व पर आयोजित भव्य, दिव्य व विराट अखिल भारतीय कविसम्मेलन का, जिसमें कवियों ने अपनी वाणी से राणा और मेवाड़ के शौर्य के साथ ही भीलों के योगदान का यशोगान किया वहीं ऑपरेशन सिन्दूर के चलते देश की वर्तमान स्थिति पर मुखर मत व्यक्त किए। जब चुटकुलेबाजों की गिरफ्त में कविता के मंच आ रहे हों अकविता को मंच पर परोसा जा रहा हो, श्रोताओं को सच्ची और अच्छी कविता से दूर सा कर दिया गया हो, श्रोता चुटकुले और फूहड़ फब्तियों को ही कविता मान बैठे हों, ऐसे समय में इन समस्त धारणाओं का खण्डन कर रहा था यह कविसम्मेलन। आजकल ऐसे आयोजन प्राय: कम ही हो रहे हैं। राष्ट्रीय

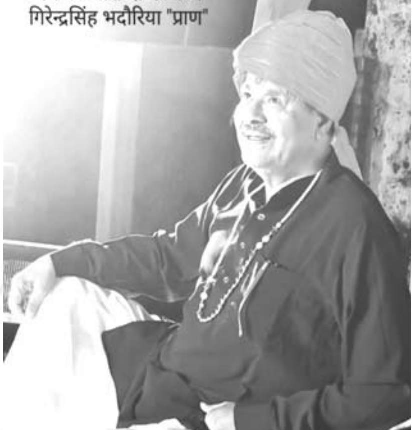
मंच की आसन्दी पर कवि
गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

भावना से पूरित मुम्बई के ओजस्वी कवि डॉ राज बुन्देली जी के संचालन में रात्रि के ठीक आठ बजे से कवि सम्मेलन का श्री गणेश हो गया। उत्तर प्रदेश के बस्ती से पधारीं यशस्वी कवयित्री डॉ शिवा त्रिपाठी सरस ने सरस वाणी में सरस्वती वन्दना की शब्द अर्चन है 'माँ विराजो कण्ठ में शुचि ज्ञान का विस्तार दो, पूरित करो हर साधना वीणा को फिर झंकार दो'। तत्पश्चात राजपूत समाज बाराँ द्वारा देश के विभिन्न स्थानों से आए वाणी पुत्रों का राजस्थानी साफा बँधवा कर अभिनन्दन किया गया। विषय प्रवर्तक इतिहासवेत्ता कवि जगदीश जलजला ने अपने प्रखर स्वर में कवियों का स्वागत परिचय व राणा के अनसुने वृत्तों का ऐसा बखान किया कि समूचा सदन तालियों के साथ राणा और भारत माता के जयकारों से गूँज उठा, इस समय का रोमांच देखते ही बनता था। सचमुच अद्‌भुत, अद्वितीय।

प्रताप वन्दना के प्रथम चरण में कवि सोनू सुरीला ने अपने गीत श्म्हारा एकलिंग दीवान, मेवाड़ धरा की शान, राणा थारी जय जयकार से प्रारम्भ किया, तो बच्छराज राजस्थानी ने अपने छन्दों की माला 'जो अपनी मातृभूमि के लिये बलिदान करते हैं। धरा और आसमाँ उनके गुणों का गान करते हैं।' रचना सुनाई। हरीश प्रजापति ने आपरेशन सिन्दूर पर अपना काव्य पाठ किया। कोटा से आए देश के वीर रस के प्रसिद्ध कवि राजेन्द्र गौड़ ने अपनी भगवा रचना से वातावरण को भगवा बनाते हुए पाकिस्तान के दम्भ को चूर करने वाली रचना शसिन्दूर मिटाने वालों को सिन्दूर मिटा कर चला गया।एक रात में पाकिस्तानी दम्भ गला कर चला गयाश पढ़ कर भारत माता के जयकारों से वातावरण को देशभक्ति मय बना दिया उन्होंने भारतीय संस्कृति और आपरेशन सिन्दूर को मुखर स्वर देकर प्रताप के शौर्य को साक्षात् कर दिया। बाराँ के कवि नाथूलाल निर्भय ने अपनी राजस्थानी रचना श्मर मर पचग्या एक न मानी, वाँ मुगला का बाप की । या धरती छ वीर शिरोमणि महाराणा परताप कीश जोशीली रचनाएँ सुनाई और खूब वाहवाही लूटी।

कवयित्री शिवा सरस को पुन: आहूत किया तो श्रोताओं की उत्सुक सरसता शुचिता का आभूषण बन गई। उन्होंने घनाक्षरियों और गीतों से सभा में समा बाँध दिया। उन्होंने श्द्रोहियों के दल को कर दिया छिन्न भिन्न राणा जी की गाथा सारे जग से महान है। जैसे वीर रस के छन्दों से पाण्डाल में जोश भर दिया। हाड़ौती के प्रसिद्ध गीतकार बाबू बंजारा ने अपने अंदाज में चेतक की अन्तिम यात्रा और प्रताप की संवेदना को व्यक्त करते हुए 'सूतों कॉई रे अब तो जाग, युद्ध में पवन वेग ज्यूँ भाग, भाइली और निभाल्यॉ रे, धरा को मान बचाल्यॉ रे' से चेतक की स्वामी भक्ति को शब्द प्रदान किए तो ऐसा लगा कि विस्मयादिबोधक अहा-अहा शब्द का औचित्य आज सार्थक हो उठा हो। जब इन्दौर के नवरस

सिद्ध राष्ट्रीय कवि गिरेन्द्र सिंह भदौरिया ष्प्राणष को बुलाया गया तो श्रोताओं ने उन्हें सिर–माथे पर बिठा लिया। क्या जबरदस्त और विलग रचनाएँ सुनने को मिलीं हैं वह दृश्य अविस्मरणीय हो गया जब उन्होंने पढ़ा 'बंशी नहीं बिगुल बजने दो धुआँधार हो जाने दो, दुश्मन युद्ध चाहता है, तो एक बार हो जाने दो। रोज–रोज की किच–किच से यदि पिण्ड छुड़ाना है तो फिर, जो होगा देखा जायेगा आर–पार हो जाने दो।' तो वातावरण राष्ट्रीय ऊर्जा से भर गया। देशभक्ति से ओत–प्रोत जयकारे लगने लगे। उनकी रचनाएँ कविता की गुणवत्ता का भी बखान कर रही थीं।

मुम्बई से वीर रस के सुनाम धन्य कवि डॉ राज बुन्देली ने राजस्थान की शौर्य गाथा गाते हुए 'गोरा बादल पत्ता जैसे बलिदानी रणधीरों के। कितने नाम गिनाऊँ तुमको राजस्थानी वीरों के।' सुना कर राजस्थान के कण कण में व्याप्त पराक्रम का वर्णन करते हुए उनकी ओजस्वी कविता की शुचिता और उसकी आभा का साक्षात् दर्शन हो उठा। उनकी वाणी में भवानी के मन्दिरों सरीखे शंखनाद और सिंहनाद दोनों समाहित थे। अन्त में कवि सम्मेलन के प्रवर्तक राष्ट्रीय कवि जगदीश जलजला ने राष्ट्र जागरण की अलख जगाते हुए 'सनातनी सपूत हो कृपाण खींच लो जरा, नवीन कल्प के लिए पुकारती वसुन्धरा' से श्रोताओं में शौर्य और उत्साह का संचार करते हुए अपने सनातनी छन्दों की माला से सम्मोहित करते हुए प्रताप की स्तुति में अपनी कविता 'जिस पौरुष की प्रबल कहानी सारी धरती गाती है। उसका वन्दन करके मेरी कलम धन्य हो जाती है' सुना कर सिद्ध किया कि हल्दी घाटी के युद्ध के विजेता महाराणा प्रताप ही रहे थे। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में राष्ट्रीय सन्त आचार्य परमानन्द ने चेतक के बलिदान की काव्यात्मक प्रस्तुति देते हुए प्रताप जयन्ती पर सम्पन्न काव्य यज्ञ में आहुति देकर कविसम्मेलन को ऐतिहासिक सफलता के शिखर पर स्थापित करने वाले समस्त राष्ट्रनिष्ठ और साहित्य निष्ठ श्रोताओं सहित समस्त अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि साहित्य का यह अनुष्ठान बाराँ की धरती से सज्जन शक्ति के जागरण का शंखनाद है , प्रताप का शौर्य पराक्रम चिरन्तन था, है और रहेगा। राजस्थान के कण–कण में प्रताप के संस्कार हैं, जिनके रहते कोई शत्रु वक्र दृष्टि से भारत की और देखने का साहस नहीं कर सकता। अन्त में हनुमान चालीसा के सामूहिक पाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ। आयोजन समिति के सरोज दीक्षित डॉ सुरेश मेघवाल और द्वारका लाल प्रजापति ने अतिथियों का अभिनन्दन एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस रिपोर्ट के अन्त में इतना ही कहूँगा कि बहुत समय बाद सुनने को मिले इस अविस्मरणीय कवि सम्मेलन में लग रहा था जैसे भगवती सरस्वती समूची धरती से चलकर मानो आज बाराँ में ही स्थिर हो गई हो। श्रोताओं की अपार भीड़ प्रताप और भारत माता के जयकारे लगा रही थी। कवियों को श्रोताओं से मिलतीं तालियों और वाह–वाही से मिलता हुआ सम्मान उनकी रचनाओं और उनकी प्रस्तुति को पुरस्कृत कर रहा था। आदि से अन्त तक के कार्यक्रम में ऐसा लग रहा था जैसे गोस्वामी तुलसीदास जी की चौपाई सच में यहाँ सार्थक हो रही हो 'मनहुँ वीर रस सोवत जागा।' कवि सम्मेलन के संयोजक पूर्व प्रधानाचार्य कैलाश शर्मा ने बताया कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी राष्ट्र आराधना के इस उत्सव का संयुक्त आयोजन हिन्दी साहित्य भारती, एकल अभियान और भक्त मण्डल के द्वारा राष्ट्रीय सन्त आचार्य परमानन्द की अध्यक्षता और राधेश्याम बैरवा विधायक बाराँ अटरू, नरेश सिंह सिकरवार जिलाध्यक्ष भाजपा नन्दलाल सुमन पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा, जयेश गालव युवा नेता भाजपा, राधेश्याम गर्ग जिला संघचालक, हरगोविंद जैन अध्यक्ष नागरिक बैंक, आनन्द गर्ग पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा, सतीश आरोड़ा समाज सेवक, यशभानु जैन,प्रमोद शर्मा आदि के आतिथ्य में प्रताप की आराधना का काव्य यज्ञ हुआ सम्पन्न हुआ। ●

"केवल सच"
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
के 20वें स्थापना वर्ष पर
सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं और
केवल सच के सभी पत्रकारों को
हार्दिक शुभकामनाएँ
निवेदक :- श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

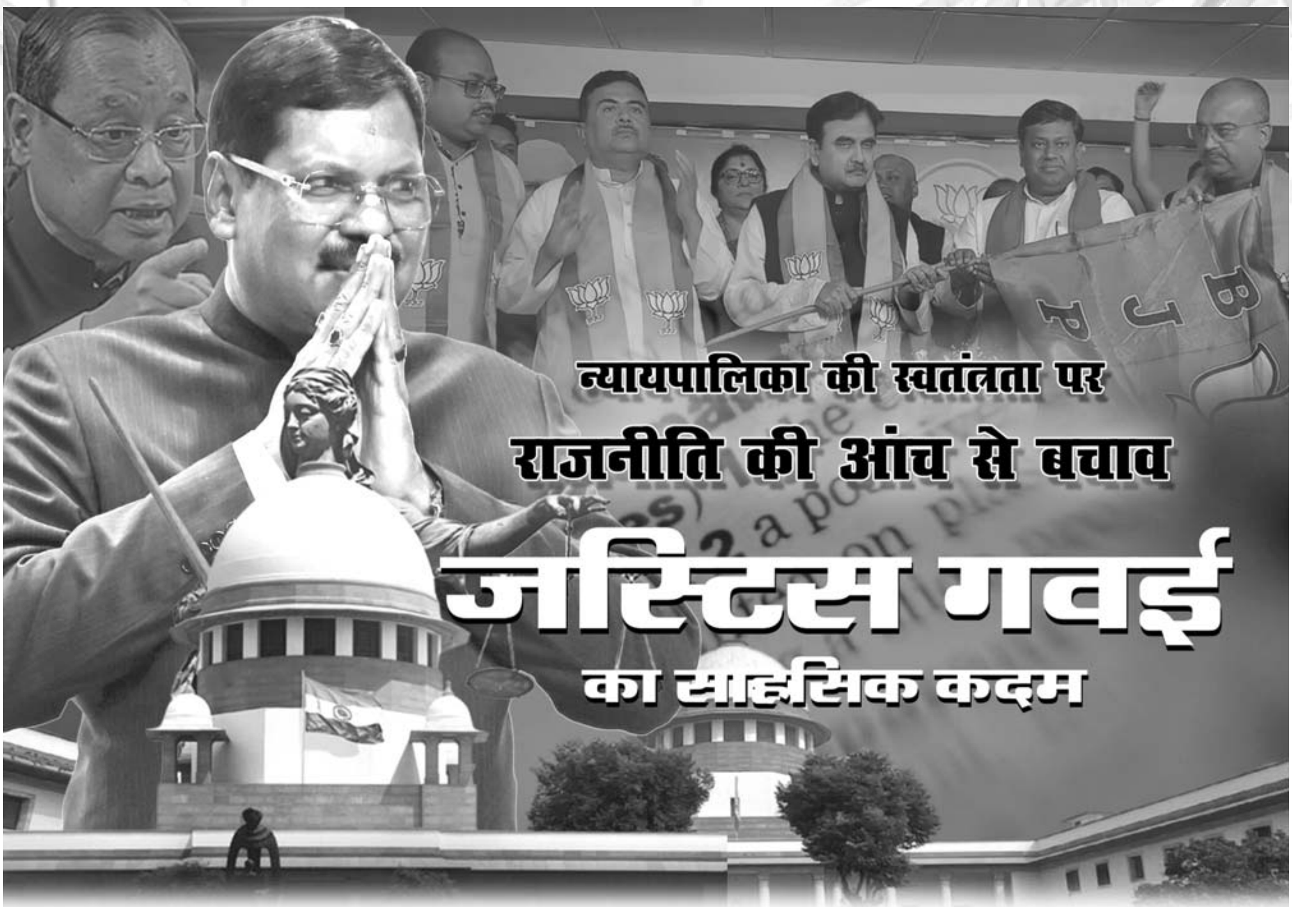

● अजय कुमार (वरिष्ठ पत्रकार)

भारत की न्यायपालिका में एक नई और ऐतिहासिक पहल की शुरुआत हुई है, जब देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई ने यह ऐलान किया कि वे रिटायरमेंट के बाद किसी भी सरकारी पद को स्वीकार नहीं करेंगे। इस साहसिक निर्णय ने सिर्फ न्यायपालिका की गरिमा को नया सम्मान दिया है, बल्कि जनता के मन में भरोसे की उस डोर को भी मजबूत किया है जो पिछले कुछ समय से कई घटनाओं के चलते कमजोर होती जा रही थी। यूनाइटेड किंगडम में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि उनके कुछ अन्य साथी न्यायाधीशों ने भी यह संकल्प लिया है कि वे भी सेवानिवृत्ति के बाद किसी सरकारी पद या राजनीतिक दल से जुड़ाव नहीं रखेंगे। चीफ जस्टिस गवई का यह बयान ऐसे समय में आया है जब भारत में न्यायपालिका की स्वतंत्रता और निष्पक्षता को लेकर गंभीर सवाल उठाए जा रहे हैं। यह बयान अप्रत्यक्ष रूप से उन घटनाओं की ओर इशारा करता है, जिनमें कुछ रिटायर्ड जजों ने सरकारी पद स्वीकार किये हैं या राजनीति में सक्रिय भागीदारी ली है। मसलन, पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई को राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा में नामित किया गया और हाल ही में कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीश अभिजीत गंगोपाध्याय बीजेपी में शामिल होकर लोकसभा चुनाव लड़ चुके हैं

और सांसद बन चुके हैं। जस्टिस गवई का कहना है कि अगर कोई जज रिटायरमेंट के बाद तुरंत कोई सरकारी पद या राजनीतिक जिम्मेदारी स्वीकार करता है, तो इससे जनता के बीच यह संदेश जाता है कि शायद उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान फैसले किसी स्वार्थ या लालच के तहत लिये थे। इससे न्यायपालिका की साख पर आंच आती है और निष्पक्षता पर सवाल उठते हैं। वे कहते हैं, "न्यायपालिका को केवल न्याय करना नहीं चाहिए, बल्कि ऐसा भी दिखना चाहिए कि वह पूरी तरह निष्पक्ष और ईमानदार है। लोगों का विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है।"

भारत में न्यायपालिका को संविधान द्वारा स्वतंत्र और स्वायत्त घोषित किया गया है। लेकिन जब रिटायरमेंट के बाद कोई जज राजनीतिक दल में शामिल होता है या किसी सरकारी संस्था में उच्च पद ग्रहण करता है, तो इस स्वतंत्रता पर प्रश्नचिह्न खड़े हो जाते हैं। यह सवाल केवल वर्तमान के बारे में नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए भी एक खतरनाक परंपरा की शुरुआत हो सकती है, जिसमें न्यायिक पदों का राजनीतिक उपयोग होने लगे।जस्टिस गवई का यह रुख ऐसे समय में आया है जब देश में न्यायपालिका और सरकार के बीच कई मुद्दों को लेकर टकराव की स्थिति

बनी हुई है। हाल ही में चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया था कि नियुक्ति समिति में मुख्य न्यायाधीश या उनके प्रतिनिधि को शामिल किया जाए, लेकिन केंद्र सरकार ने संसद से कानून पास कर इस व्यवस्था को बदल दिया और समिति से न्यायपालिका को बाहर कर दिया। इस घटनाक्रम ने फिर से न्यायपालिका की भूमिका और अधिकारों पर बहस को जन्म दे दिया। सिर्फ राजनीतिक नियुक्तियों की बात नहीं, बल्कि सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में कई हाई प्रोफाइल मामलों में भी सरकार की भूमिका पर सवाल उठाये हैं। मध्य प्रदेश के मंत्री विजय शाह के खिलाफ एसआईटी जांच की खबर सोशल मीडिया पर छाई रही, लेकिन वे अब भी मंत्री पद पर बने हुए हैं। वहीं अशोका यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अली खान महमूदाबाद को भी एसआईटी जांच का सामना करना पड़ा और उन्हें जेल भी जाना पड़ा। यह दोहरे मापदंड न्यायपालिका पर उठ रहे सवालों को और हवा देते हैं।इन सबके बीच, जस्टिस गवई ने कॉलेजियम प्रणाली की भी आलोचना की, लेकिन उन्होंने साफ कहा कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता को

मध्य प्रदेश के मंत्री
विजय शाह

प्रोफेसर
अली खान महमूदाबाद

जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई

किसी भी हाल में खतरे में नहीं डाला जा सकता। उन्होंने कहा कि कॉलेजियम सिस्टम में पारदर्शिता की कमी है, लेकिन कोई भी सुधार इस तरह नहीं होना चाहिए कि जजों की नियुक्ति पर सरकार का नियंत्रण बढ़ जाए। उनका यह बयान उस चल रही बहस में एक संतुलित दृष्टिकोण लेकर आया है, जिसमें कॉलेजियम प्रणाली को खत्म कर न्यायिक नियुक्तियों में कार्यपालिका की भूमिका बढ़ाने की मांग हो रही है। आज का दौर ऐसा है जब न्यायपालिका को सिर्फ निष्पक्ष न्याय देने के अलावा खुद को निष्पक्ष दिखाने की भी जिम्मेदारी उठानी होगी। जस्टिस गवई ने यह भी सुझाव दिया कि जजों की संपत्ति सार्वजनिक की जानी चाहिए, ताकि जनता को यह भरोसा हो कि जज किसी भी तरह के लालच या दबाव में नहीं हैं। यह विचार न केवल पारदर्शिता को बढ़ावा देता है बल्कि न्यायपालिका की विश्वसनीयता को भी मजबूत करता है। इस पूरी चर्चा का एक पहलू यह भी है कि न्यायपालिका में लंबे समय से कुछ नाम ऐसे उभरे हैं, जिन्होंने सेवा के बाद ऐसे निर्णय लिये जो विवाद का कारण बने। रंजन गोगोई का राज्यसभा में जाना उस समय सुर्खियों में रहा जब उन्होंने राफेल, राम मंदिर और एनआरसी जैसे महत्वपूर्ण मामलों में फैसले दिए थे। इसी तरह, जज अभिजीत गंगोपाध्याय ने टीचर भर्ती घोटाले से जुड़े मामलों में सरकार के खिलाफ सख्त रुख अपनाया और बाद में बीजेपी से चुनाव लड़कर संसद पहुंचे। इन घटनाओं ने यह संदेह पैदा किया कि कहीं जजों के फैसलों के पीछे भविष्य के लाभ की योजना तो नहीं छुपी होती?

इस संदर्भ में, जस्टिस गवई का निर्णय एक मिसाल बन सकता है, अगर आने वाले समय में अन्य न्यायाधीश भी इसी परंपरा का पालन करें। यह केवल एक व्यक्तिगत निर्णय नहीं है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र और न्यायिक प्रणाली के लिए एक नयी दिशा और सोच का प्रतीक बन सकता है।लेकिन इस सब के बावजूद बड़ा सवाल यह है कि क्या इस तरह के व्यक्तिगत निर्णयों से पूरे सिस्टम की खामियों को दूर किया जा सकता है? कॉलेजियम सिस्टम की अपारदर्शिता, जजों की जवाबदेही की कमी, न्यायिक नियुक्तियों में भाई-भतीजावाद, और सरकार की बढ़ती दखल जैसे मुद्दों का समाधान केवल नैतिकता के भरोसे छोड़ा जा सकता है?सिस्टम में व्यापक सुधार की आवश्यकता अब पहले से कहीं ज्यादा है। संसद और न्यायपालिका के बीच विश्वास की डोर को मजबूत करने के लिए संवैधानिक मर्यादाओं और संतुलन की पुनर्स्थापना जरूरी है। न्यायपालिका को न केवल स्वतंत्र रहना चाहिए, बल्कि स्वतंत्र दिखना भी चाहिए।

जस्टिस बीआर गवई का फैसला इसलिए अहम है क्योंकि यह न केवल न्यायपालिका की छवि सुधारने का प्रयास है, बल्कि यह जनता को यह संदेश भी देता है कि देश में अब भी ऐसे लोग हैं जो सिर्फ अपने पद की गरिमा के लिए नहीं, बल्कि लोकतंत्र की रक्षा के लिए भी खड़े हैं। उनकी यह पहल भारत की न्यायिक प्रणाली को नई दिशा दे सकती है अगर इसे एक स्थायी परंपरा में बदला जाए।न्यायपालिका पर जनता का भरोसा तभी कायम रह सकता है जब न्याय केवल हो ही नहीं, बल्कि होता हुआ भी दिखे। और जस्टिस गवई की तरह अगर हर न्यायाधीश यह तय कर ले कि उनका काम सिर्फ न्याय करना है, किसी पुरस्कार की उम्मीद में नहीं, तब ही भारत की न्यायिक प्रणाली दुनिया की सबसे ईमानदार और मजबूत संस्थाओं में शुमार हो सकती है।●

केरल में भारत माता का अपमान यह केवल चित्र नहीं देश की आत्मा पर चोट है!

● अजय कुमार (वरिष्ठ पत्रकार)

भारत माता एक ऐसा नाम, एक ऐसा भाव, जो करोड़ों भारतीयों के दिल की धड़कन है। जब कोई 'भारत माता की जय' बोलता है, तो ये केवल एक नारा नहीं होता, बल्कि एक ऐसी पुकार होती है, जिसमें देशभक्ति, श्रद्धा और मातृत्व का गहरा बोध समाहित होता है। लेकिन दुर्भाग्य देखिए, उसी भारत माता की तस्वीर अब देश के भीतर विवाद की जड़ बन रही है। जिस तस्वीर के सामने स्वतंत्रता सेनानी सिर झुकाकर बलिदान की प्रेरणा लेते थे, उसे देखकर अब केरल के एक मंत्री की आंखें चुभने लगी हैं। केरल के कृषि मंत्री पी प्रसाद ने पर्यावरण दिवस पर राजभवन में आयोजित कार्यक्रम का सिर्फ इसलिए बहिष्कार कर दिया क्योंकि मंच पर भारत माता की तस्वीर लगी थी। यह घटना एक प्रतीक भर नहीं है, यह उस वैचारिक युद्ध की प्रत्यक्ष झलक है जो अब भारत की आत्मा से टकरा रहा है।

पी प्रसाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता हैं। वही पार्टी जिसकी जड़ें भारत में नहीं, बल्कि 1920 के दशक में सोवियत रूस के ताशकंद में पड़ीं। एक विदेशी धरती पर जन्मी विचारधारा का भारत में प्रवेश होना ही एक

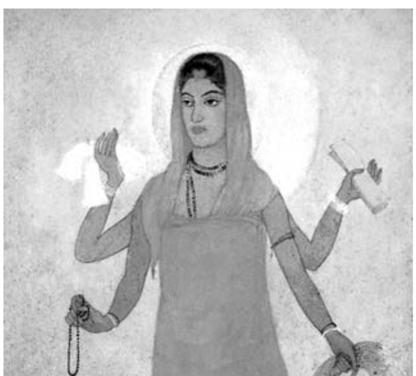

चेतावनी थी कि इसकी नजर भारतीय संस्कृति, परंपरा और भावनाओं से मेल नहीं खाती। और यही हुआ भी। आजादी के आंदोलन में जब देश के कोने-कोने में भारत माता की जय के उद्घोष के साथ आंदोलनकारी सड़कों पर उतर रहे थे, उसी वक्त वामपंथी विचारधारा सोवियत संघ के हितों की रक्षा में व्यस्त थी। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में इनका हिस्सा न बनना इस बात की सबसे बड़ी गवाही है। जब-जब भारत माता का स्वर प्रबल हुआ, तब-तब लेफ्ट ने अपना मुख कहीं और मोड़ लिया। जब महात्मा गांधी अंग्रेजों को "भारत छोड़ो" कह रहे थे, तब कम्युनिस्ट नेता सोवियत संघ की नीति के अनुसार चुप बैठे थे। जब 1962 में चीन ने भारत की सीमाओं पर हमला किया, तब भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने न केवल चीन के दावों का समर्थन किया, बल्कि 'बीजिंग नजदीक है, दिल्ली दूर' जैसे नारे दिए। एक विचारधारा जो भारत माता को मां नहीं मानती, बल्कि एक साम्राज्यवादी कल्पना मानती है, वो विचारधारा जब सत्ता में आती है, तो भारत माता की तस्वीर से चिढ़ होना स्वाभाविक हो जाता है। भारत माता का चित्र कोई धर्म विशेष का प्रतीक नहीं है। यह चित्र अबनिंद्रनाथ टैगोर ने 1905 में बनाया था, जिसमें भारत को चार हाथों वाली देवी के रूप में दर्शाया गया, जिनके हाथों में वेद, चावल, सफेद वस्त्र और माला होती थी।

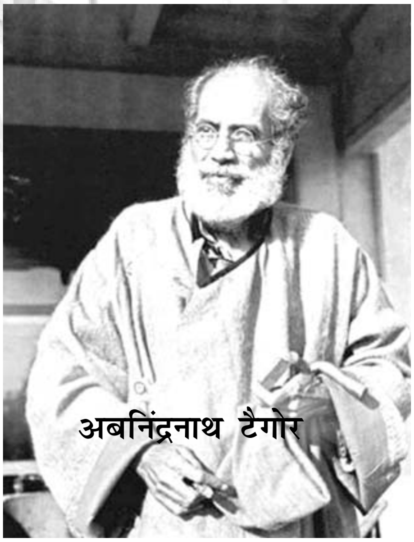

अबनिंद्रनाथ टैगोर

ये प्रतीक उस भारत का था, जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, आत्मनिर्भर और ज्ञान से परिपूर्ण था। यह चित्र उस समय बना जब बंग-भंग के कारण राष्ट्रवाद की लहर तेज हो रही थी। भारत माता उस राष्ट्रवादी चेतना का नाम थी जिसने आजादी की लड़ाई को जनांदोलन में बदल दिया। यही कारण था कि वीर सावरकर से लेकर भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस तक, सभी भारत माता को केंद्र में रखकर लड़ते रहे। लेकिन अब उस चित्र को लेकर यह तर्क दिया जा रहा है कि वह "सरकारी रूप से अधिकृत प्रतीक" नहीं है। केरल सरकार ने यहां तक कह दिया कि भारत माता का कोई आधिकारिक चित्र नहीं है और इसीलिए उसे किसी सरकारी मंच पर रखना असंवैधानिक है। कृषि मंत्री पी प्रसाद ने यह आरोप लगाया कि भारत माता के चित्र पर एक राजनीतिक संगठन का झंडा लगा हुआ था, इसलिए वे उसे स्वीकार नहीं कर सकते। सवाल यह है कि क्या भारत माता अब केवल एक पार्टी का विचार बन गई है? क्या आज भारत माता की जय बोलना किसी राजनीतिक विचारधारा से जुड़ गया है?

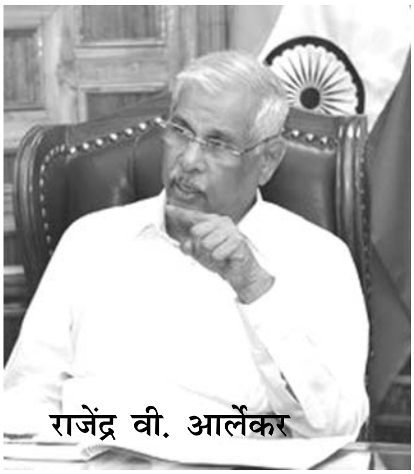

राजेंद्र वी. आर्लेकर

राज्यपाल राजेंद्र वी. आर्लेकर ने इस पूरे विवाद में स्पष्ट कहा कि भारत माता के सम्मान से कोई समझौता नहीं होगा। यह बयान सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं था, यह उस करोड़ों भारतीयों की भावना का प्रतिनिधित्व करता था जो भारत माता को केवल एक प्रतीक नहीं, एक सजीव सत्ता मानते हैं। लेकिन दुर्भाग्य देखिए कि राज्य के शिक्षा मंत्री वी. शिवनकुट्टी भी इस मुद्दे में कूद पड़े और बोले कि राज्यपाल को राजनीति से ऊपर उठना चाहिए। यानी अब भारत माता की तस्वीर रखना राजनीति है, लेकिन उस पर आपत्ति जताना राष्ट्रहित! भारत माता की तस्वीर को लेकर इतने तीव्र विरोध का अर्थ केवल एक सांस्कृतिक टकराव नहीं है। यह उस दीर्घकालीन वैचारिक विभाजन का परिणाम है जिसमें एक धड़ा सदैव भारत को सिर्फ एक भूगोल मानता आया है, जबकि दूसरा धड़ा इसे मातृभूमि के रूप में देखता रहा है। लेफ्ट की राजनीति हमेशा विदेशी सिद्धांतों से प्रेरित रही है। चाहे वह मार्क्सवाद हो या माओवाद, भारतीय सोच और परंपरा का इसमें कोई स्थान नहीं रहा। यही कारण है कि भारत माता के चित्र से इन्हें चिढ़ होती है। क्योंकि यह चित्र उस भारत का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने सांस्कृतिक गौरव पर गर्व करता है, जो अपने इतिहास से सीखता है, और जो मां को ईश्वर के समान मानता है।

पी. प्रसाद

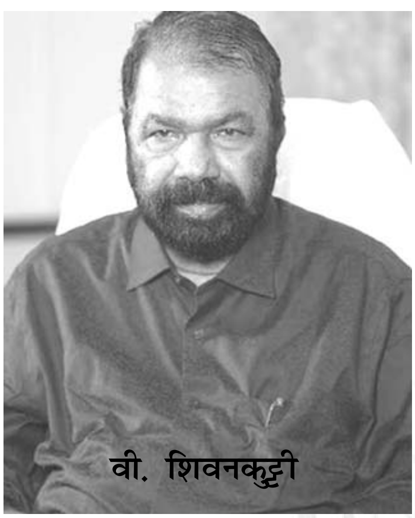

वी. शिवनकुट्टी

के. सुरेंद्रन

आज यह सोच केवल केरल तक सीमित नहीं है। यह सोच देश के अलग–अलग हिस्सों में मौजूद है, जो भारत के मूलभाव को छिन्न–भिन्न करने पर तुली हुई है। यह वही सोच है जो 'अफजल हम शर्मिंदा हैं, तेरे कातिल जिंदा हैं' जैसे नारे देती है। यह वही सोच है जो कभी जेएनयू से उठती है और कभी कन्हैया कुमार की आवाज बनकर फैलती है। अब इस सोच को अगर सरकार का संरक्षण मिल जाए, तो वह भारत माता की तस्वीर को मंच से हटवाने का साहस कर बैठती है। लेकिन यहां एक और गहरी बात छुपी है। आज देश में राष्ट्रवाद को संकीर्ण दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति बढ़ी है। भारत माता की तस्वीर या 'वंदे मातरम' जैसे नारों को कुछ लोग धार्मिक रंग में रंगने की कोशिश करते हैं। परंतु यह चित्र और ये नारे केवल धार्मिक नहीं, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक हैं। भारत माता का चित्र देखकर किसी को आपत्ति होती है, तो सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या उनका भारत से जुड़ाव केवल संविधान की किताबों तक सीमित है? क्या वे उस भारत को नहीं पहचानते जिसे करोड़ों लोग माँ कहते हैं? इस विवाद पर बीजेपी ने कड़ा रुख अपनाया। प्रदेश अध्यक्ष के. सुरेंद्रन ने राज्य सरकार के इस रुख को राष्ट्रविरोधी करार दिया और कहा कि भारत माता का अपमान देश का अपमान है। वहीं कांग्रेस ने भी राजभवन में राजनीतिक एजेंडे को थोपने की कोशिश की आलोचना की और कहा कि राज्यपाल को राजनीतिक प्रतीकों से दूरी बनानी चाहिए। लेकिन भारत माता की तस्वीर को केवल एक राजनीतिक प्रतीक मानना ही अपने आप में एक बड़ी भूल है। यह चित्र न किसी पार्टी का है और न किसी संगठन का। यह उस भावनात्मक जुड़ाव का प्रतीक है जिसे हर भारतवासी महसूस करता है।

पी प्रसाद जैसे मंत्री संविधान की शपथ लेकर सत्ता में आते हैं, लेकिन जब भारत माता का चित्र सामने आता है, तो शपथ में समाहित भावना को भी नजरअंदाज कर देते हैं। यह विडंबना नहीं तो और क्या है? भारत के प्रत्येक नागरिक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह देश के प्रतीकों, ध्वज, राष्ट्रगान, और सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करे। फिर एक मंत्री जब भारत माता की तस्वीर से परहेज करता है, तो यह केवल उनका निजी मत नहीं रह जाता, यह एक राजनीतिक संदेश बन जाता है ऐसा संदेश जो राष्ट्रवाद को टुकड़ों में बांटने की कोशिश करता है। यह घटना हमें उस खतरे की चेतावनी देती है जो भारत की एकता और अखंडता के लिए भीतर से उठ रहा है। देश को तोड़ने वाली ताकतें केवल सीमाओं से नहीं आतीं, वे उस मानसिकता से आती हैं जो अपने देश की आत्मा को पहचानने से इनकार करती हैं। भारत माता की तस्वीर से चिढ़ना उस चेतना को अस्वीकार करना है जो इस देश को जोड़ती है। यह केवल एक चित्र नहीं, यह एक विचार है, एक आस्था है, एक भावना है जो भारत को भारत बनाती है। देश को आज ऐसे लोगों की जरूरत है जो भारत माता की जय को राजनीति नहीं, बल्कि श्रद्धा समझें। जिन्हें राष्ट्रगान सुनकर सम्मान की भावना हो, और भारत माता की तस्वीर देखकर आंखों में नमी और माथे पर झुकाव आए। वरना वह दिन दूर नहीं जब भारत केवल संविधान की किताब में सिमट कर रह जाएगा, और भारत माता एक विवादास्पद प्रतीक बनकर रह जाएगी। यह समय है कि देश की आत्मा को फिर से पहचाना जाए, उसे गले लगाया जाए क्योंकि भारत माता का अपमान किसी भी सूरत में सहन नहीं किया जा सकता। यही भारत का सच्चा स्वाभिमान है। यही भारत की सच्ची पहचान है।●

गांवों की राजनीति से शुरू होगा 2027 का सियासी महाकुंभ

● अजय कुमार (वरिष्ठ पत्रकार)

उत्तर प्रदेश में दो साल बाद होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले 2026 में होने वाले पंचायत चुनाव को राजनीतिक दलों के लिए बेहद अहम माना जा रहा है। पंचायत चुनाव को 2027 के विधानसभा चुनाव का लिटमस टेस्ट कहा जा रहा है, क्योंकि इसके नतीजे आने के बाद ही प्रदेश की सियासी तस्वीर साफ होगी। चुनाव आयोग ने पंचायत चुनाव के लिए पूरी तैयारी शुरू कर दी है और जल्द ही अधिसूचना जारी करने की संभावना है। ऐसे में राजनीतिक दल भी अपनी-अपनी रणनीतियां बनाने में जुट गए हैं। पंचायत चुनाव से न केवल दलों की लोकल पकड़ का पता चलेगा, बल्कि 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए उनकी रणनीतियों की दिशा भी तय होगी। उत्तर प्रदेश के गांवों में पंचायत चुनाव को लेकर जो सरगर्मी दिख रही है, उससे यह साफ हो गया है कि ये चुनाव प्रदेश की राजनीति में बड़ी भूमिका निभाने वाले हैं।

उत्तर प्रदेश के ग्राम पंचायतों के मौजूदा प्रधानों का कार्यकाल 2026 में खत्म हो रहा है। लगभग 57,691 ग्राम प्रधान, पंचायत सदस्य, क्षेत्र पंचायत सदस्य, 826 ब्लॉक प्रमुख, 3,200 जिला पंचायत सदस्य और 75 जिला पंचायत अध्यक्षों के चुनाव होने हैं। राज्य निर्वाचन आयोग ने इस त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए करीब 1.27 लाख सीआर1 ग्रेड की मतपेटियों की खरीद के लिए ई-टेंडर भी जारी कर दिया है। पिछले चुनाव अप्रैल-मई 2021 में हुए थे, इसलिए इस बार चुनाव की अधिसूचना जनवरी या फरवरी 2026 के दूसरे या तीसरे हफ्ते में जारी होने की उम्मीद है। पंचायत चुनाव तीन स्तरों पर होते हैं ख्र ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत। इनमें सबसे ज्यादा चर्चा और सियासी रसगुल्ले गांव के प्रधान चुनाव को लेकर होती है, क्योंकि ग्राम प्रधान सीधे गांव की राजनीति पर प्रभाव डालते हैं। पंचायत चुनाव को लेकर राजनीतिक दलों की तैयारियां शुरू हो गई हैं। सभी दल यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि आरक्षण के बाद किस सीट पर कौन उम्मीदवार खड़ा हो सकता है। आरक्षण के बाद उम्मीदवारों की संभावनाओं का आकलन करना जरूरी होता है ताकि सही रणनीति बनाई जा सके। बीडीसी सदस्य और जिला पंचायत सदस्य भी होर्डिंग-पोस्टर के जरिए अपनी दावेदारी जताने लगे हैं। नेताओं और निर्वाचन आयोग की इस सक्रियता से साफ है कि पंचायत चुनाव को लेकर सियासी मशीनरी पूरी तरह से सक्रिय हो चुकी है।

पिछले पंचायत चुनावों के आंकड़े बताते हैं कि पंचायत चुनावों में सत्ताधारी दल का ही दबदबा रहता है। 2021 के पंचायत चुनाव में भाजपा, सपा, बसपा, कांग्रेस, आरएलडी, आम आदमी पार्टी और कई निर्दलीय उम्मीदवार मैदान में थे। कुल 3050 जिला पंचायत सदस्य सीटों पर हुए चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवारों ने भी खासा दम दिखाया। भाजपा ने 768 सीटें जीतीं, सपा ने 759, बसपा ने 319, कांग्रेस 125, आरएलडी 69 और आम आदमी पार्टी 64 सीटों पर जीत हासिल की। निर्दलीयों की संख्या 944 रही। भाजपा ने निर्दलीयों को अपने साथ जोड़कर 67 जिलों में जिला पंचायत अध्यक्ष की कुर्सी अपने नाम कर ली, जबकि सपा महज पांच जिलों में ही अध्यक्ष बना सकी। यह आंकड़ा यह बताता है कि पंचायत स्तर पर भी सत्ता का प्रभाव कितना

महत्वपूर्ण होता है। पंचायत चुनावों को 2027 के विधानसभा चुनाव का सेमीफाइनल माना जाता है, क्योंकि इस चुनाव में ग्रामीण क्षेत्र की बड़ी संख्या की सीटें शामिल होती हैं। उत्तर प्रदेश की लगभग दो तिहाई विधानसभा सीटें ग्रामीण इलाकों से आती हैं, इसलिए पंचायत चुनाव का नतीजा सीधे विधानसभा चुनाव में राजनीतिक दलों की ताकत पर प्रभाव डालता है। पंचायत चुनावों में जो दल सफल होता है, उसके पास ग्रामीण वोट बैंक की मजबूत पकड़ होती है, जो आगे जाकर विधानसभा चुनावों में मददगार साबित होती है। राजनीतिक दल पंचायत चुनाव के नतीजों का विश्लेषण कर हर जिले, क्षेत्र और जाति के हिसाब से अपनी रणनीति बनाते हैं। राजनीतिक दल पंचायत चुनाव के नतीजों के बाद गहन मंथन करते हैं। जातिगत समीकरण, क्षेत्रीय ताकत, वोट प्रतिशत, पिछली बार की तुलना में वोटों में बढ़ोतरी या कमी, सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए वे आगामी विधानसभा चुनाव के लिए रणनीति बनाते हैं। ये चुनाव दलों को अपनी ताकत को सही आंकने का मौका देते हैं ताकि वे कमजोर हिस्सों पर काम कर सकें। पिछले विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव के मतों की तुलना कर दल अपने वोट बैंक में आए बदलाव का आंकलन करते हैं। फिर इसके आधार पर उम्मीदवार चयन, गठबंधन और प्रचार रणनीति को दुरुस्त करते हैं।

उत्तर प्रदेश की सियासत में पंचायत चुनावों का महत्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि इससे दलों की लोकल स्तर पर पकड़ का पता चलता है। पंचायत चुनाव से पार्टी का बूथ स्तर तक संगठन मजबूत होता है। गांवों के छोटे-छोटे चुनाव भी बड़े चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। जिस पार्टी के पास मजबूत ग्राम स्तर की पकड़ होती है, उसके लिए विधानसभा और लोकसभा चुनाव जीतना आसान होता है। इसलिए दल पंचायत चुनाव को हल्के में नहीं लेते और पूरे जोर-शोर से चुनाव लड़ते हैं। इन चुनावों में अपना दल (एस) का भी विशेष महत्व है, जो बीजेपी के सहयोगी दल के रूप में काम करता है। केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने हाल ही में घोषणा की है कि उनका दल यूपी पंचायत चुनाव में अकेले चुनाव लड़ेगा। उन्होंने साफ कहा कि कोई गठबंधन नहीं होगा और अपना दल (एस) पूरी ताकत से सभी सीटों पर चुनाव लड़ने को तैयार है। अनुप्रिया पटेल ने कहा कि पंचायत चुनाव 2027 के विधानसभा चुनाव का रिहर्सल है। उनका मानना है कि पंचायत चुनाव में अपनी ताकत आजमाकर वे आगामी विधानसभा चुनाव की रणनीति मजबूत करेंगे। पिछले कई सालों से अपना दल (एस) ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों में बीजेपी के

अनुप्रिया पटेल

साथ गठबंधन किया, लेकिन पंचायत चुनावों में वह हमेशा अकेले ही चुनाव लड़ता रहा है। 2021 में भी अपना दल (एस) अकेले ही जिला पंचायत सदस्य चुनाव में हिस्सा लिया था। इस बार भी यही रणनीति अपनाई जा रही है। केंद्र और प्रदेश में बीजेपी और अपना दल (एस) साथ हैं, लेकिन गांवों में पंचायत चुनाव में वे एक-दूसरे के

प्रतिद्वंदी बनेंगे।

अनुप्रिया पटेल ने यह भी बताया कि पंचायत चुनाव में अपने कार्यकर्ताओं को ज्यादा से ज्यादा मौका देना चाहते हैं। गठबंधन में रहते हुए यह संभव नहीं था कि सभी कार्यकर्ता चुनाव लड़ पाएं, इसलिए अकेले चुनाव लड़ना जरूरी था। उन्होंने कहा कि संगठन को पंचायत चुनाव के अनुसार मजबूत करना होगा। पंचायत चुनाव में हर स्तर पर संगठन को तैयार करने की कवायद चल रही है। पार्टी बूथ स्तर पर भी मजबूत हो रही है ताकि चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को पूरी मदद मिल सके। यह रणनीति अनुप्रिया पटेल की पार्टी के लिए नए अवसर भी लेकर आएगी। पंचायत चुनाव से पार्टी को ग्रामीण इलाकों में अपनी पकड़ बढ़ाने का मौका मिलेगा, जो आगे जाकर विधानसभा चुनाव में काम आएगा। यह चुनाव पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए एक प्रकार का मंच भी होगा, जहां वे अपनी राजनीतिक योग्यता साबित कर सकेंगे। चुनावों में जीत से पार्टी को स्थानीय नेताओं का विश्वास मिलेगा और पार्टी संगठन मजबूत होगा। पंचायत चुनावों में अच्छा प्रदर्शन पार्टी को आगामी विधानसभा चुनावों के लिए भी उत्साहित करता है।

राजनीतिक विश्लेषक बताते हैं कि पंचायत चुनाव उत्तर प्रदेश की राजनीति की जमीन तैयार करते हैं। गांव की राजनीति से जुड़ी दलों की पकड़ मजबूत होने पर विधानसभा चुनाव में भी उनकी सफलता की संभावना बढ़ जाती है। पंचायत चुनाव में मिली सफलता से नेताओं को यह भी समझने में मदद मिलती है कि किस क्षेत्र में उनकी पार्टी की पकड़ कमजोर है और वहां वे अपनी रणनीति में बदलाव कर सकते हैं। इसके अलावा, पंचायत चुनाव से दलों को जातिगत और क्षेत्रीय समीकरणों को समझने में भी मदद मिलती है। साथ ही, पंचायत चुनावों में नए नेताओं को उभरने का मौका मिलता है। कई बार युवा और नए चेहरे इन चुनावों के जरिए राजनीति में आते हैं और आगे जाकर बड़े स्तर पर राजनीति में अपना मुकाम बनाते हैं। इसलिए पंचायत चुनाव सिर्फ स्थानीय स्तर की राजनीति तक सीमित नहीं रह जाते, बल्कि ये प्रदेश की राजनीति की दिशा तय करते हैं। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में सियासी पार्टियों की जंग पंचायत चुनाव से शुरू होती है और यही मुकाबला विधानसभा चुनाव तक चलता रहता है। इस बार भी राजनीतिक दल पंचायत चुनावों में पूरी ताकत झोंक रहे हैं ताकि वे 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले अपनी पकड़ मजबूत कर सकें। योगी सरकार के नेतृत्व में बीजेपी ने पंचायत चुनावों में कड़ा दबदबा बनाया है, लेकिन विपक्षी दल भी पीछे नहीं हैं। सपा, बसपा, कांग्रेस, आम आदमी पार्टी और अपना दल (एस) भी अपने-अपने क्षेत्रों में जीत दर्ज करने के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं।

अंततः पंचायत चुनाव उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक ऐसा मंच हैं, जहां से सरकार बनने की राह दिखती है। इस चुनाव का परिणाम 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए सियासी मिजाज का आईना होगा। जो पार्टी पंचायत चुनाव में सफल होगी, उसकी सियासी पकड़ मजबूत होगी और वह विधानसभा चुनाव में भी बेहतर प्रदर्शन कर पाएगी। इसलिए 2026 के पंचायत चुनाव को लेकर राजनीतिक दलों में खासा उत्साह और संघर्ष देखा जा रहा है। यह चुनाव सिर्फ ग्रामीण नेतृत्व चुनने का माध्यम नहीं, बल्कि भविष्य की सियासत के लिए मजबूत आधार बनाने का जरिया बनेंगे। इस चुनाव के परिणाम पूरे प्रदेश की राजनीतिक दिशा तय करेंगे और तय करेंगे कि 2027 में उत्तर प्रदेश की सत्ता किसके हाथ में होगी। ●

मोदी के हनुमान अब खुद बनना चाहते हैं बिहार के राम

● **संजय सक्सेना (वरिष्ठ पत्रकार)**

बिहार की राजनीति एक बार फिर बदलाव के मुहाने पर खड़ी है और इस बार केंद्र में हैं चिराग पासवान, जो अपने पिता रामविलास पासवान के अधूरे सपनों को पूरा करने की ओर तेजी से बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। हर पिता की यह ख्वाहिश होती है कि उसका बेटा उसकी विरासत को आगे बढ़ाए और जब बात रामविलास जैसे करिश्माई नेता की हो, जिन्होंने राष्ट्रीय राजनीति में अपनी खास पहचान बनाई, तो यह जिम्मेदारी और भी बड़ी हो जाती है। चिराग पासवान यह बात न सिर्फ समझते हैं, बल्कि इसे अपनी राजनीतिक यात्रा का मुख्य आधार भी बना चुके हैं। अक्सर वह यह कहते पाए जाते हैं कि वह अपने पिता के दिखाए रास्ते पर चलना चाहते हैं, लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट होता जा रहा है कि चिराग की राजनीतिक समझ और महत्वाकांक्षा का दायरा कहीं अधिक व्यापक है। चिराग अब बिहार के राजनीतिक मौसम का अध्ययन करने के साथ-साथ उसकी दिशा बदलने का माद्दा भी रखते हैं।

जब 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में चिराग ने एनडीए के भीतर रहते हुए भी जेडीयू के खिलाफ अपने उम्मीदवार उतारे थे, तब किसी ने नहीं सोचा था कि यह नौजवान नेता इतनी जल्द फिर से भाजपा के साथ खड़ा हो जाएगा, पर आज की तारीख में वह केंद्र सरकार में मंत्री हैं और भाजपा के साथ एक बार फिर मजबूत रिश्तों की बुनियाद पर खड़े हैं। यह वही चिराग हैं जो कभी कांग्रेस के साथ गठबंधन करते थे और 2005 में उन्होंने मुस्लिम मुख्यमंत्री की मांग कर सनसनी फैला दी थी। लेकिन अब वह भाजपा की विचारधारा के साथ कदमताल कर रहे हैं। यह एक चौंकाने वाला लेकिन रणनीतिक

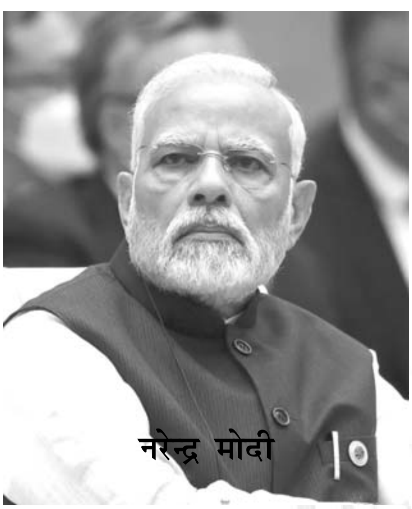

नरेन्द्र मोदी

बदलाव है। यह बदलाव सिर्फ सत्ता की राजनीति नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक रोडमैप है जिसमें चिराग खुद को बिहार के भावी मुख्यमंत्री के रूप में देख रहे हैं। हालांकि चिराग पासवान ने अभी तक सार्वजनिक तौर पर मुख्यमंत्री बनने की कोई इच्छा नहीं जताई है, लेकिन उनकी पार्टी के नेता लगातार यह मांग कर रहे हैं और चिराग खुद भी इन अटकलों को खारिज करने के बजाय हवा देते नजर आते हैं। बिहार की मौजूदा राजनीतिक स्थिति को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि नीतीश कुमार अब उस ऊर्जा और प्रभाव के साथ शासन नहीं कर पा रहे जो कभी उनकी पहचान थी। उनके बार-बार के पाला बदलने और अप्रत्याशित फैसलों ने उनकी साख को नुकसान पहुंचाया है। भाजपा के लिए अब यह जरूरी हो गया है कि वह एक नया चेहरा सामने लाए जो बिहार में न सिर्फ गठबंधन का नेतृत्व कर सके, बल्कि जनता में भी उसे स्वीकार्यता मिले। ऐसे में चिराग पासवान एकमात्र विकल्प की तरह सामने आते हैं जो तेजस्वी यादव को चुनौती दे सकते हैं और नीतीश कुमार का स्थान ले सकते हैं।

तेजस्वी यादव फिलहाल महागठबंधन के सबसे लोकप्रिय चेहरे हैं। उनका युवा चेहरा, सामाजिक न्याय की राजनीति और पिछले चुनाव में अच्छा प्रदर्शन उन्हें मजबूत बनाता है। लेकिन तेजस्वी की लोकप्रियता अगर 36.9% है तो चिराग

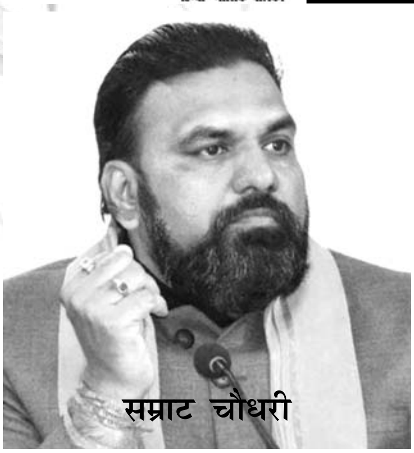
सम्राट चौधरी

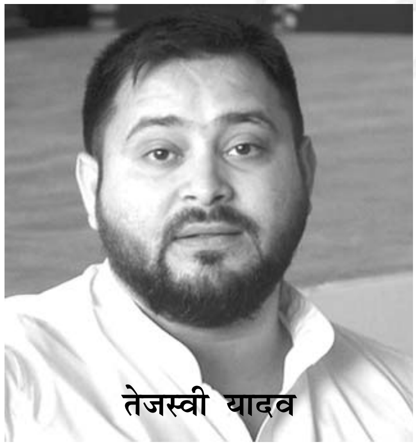
तेजस्वी यादव

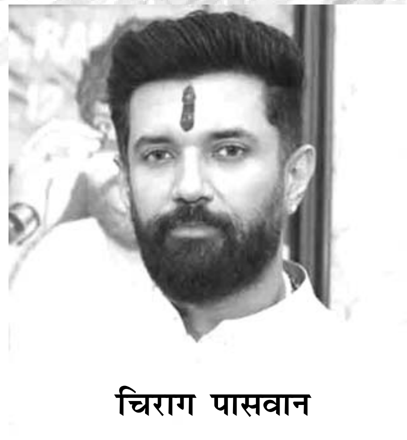
चिराग पासवान

भी 10.6% पर हैं, जो कि बिना किसी औपचारिक मुख्यमंत्री पद के दावेदारी के ये आंकड़ा काफी मजबूत माना जा सकता है। नीतीश कुमार खुद अब 18.4% पर हैं, जो यह दिखाता है कि उनकी लोकप्रियता में तेजी से गिरावट आई है। चिराग और तेजस्वी दोनों हमउम्र हैं, दोनों युवाओं के बीच लोकप्रिय हैं और दोनों ही अगड़े-पिछड़े वर्गों में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन चिराग को 'बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट' अभियान से जो अतिरिक्त बढ़त मिली है, वह उन्हें एक अलग पहचान देती है। चिराग पासवान की राजनीतिक समझ इस बात से भी जाहिर होती है कि वह गठबंधन की राजनीति को बारीकी से समझते हैं। वह जानते हैं कि भाजपा को बिहार में समर्थन की जरूरत है और वह यह भी जानते हैं कि भाजपा को नीतीश कुमार जैसे नेता से धीरे-धीरे पीछा छुड़ाना है। ठीक वैसे ही जैसे उसने असम में हिमंत बिस्वा सरमा और महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे को अवसर दिया। चिराग को इस बात की भी पूरी समझ है कि भाजपा तब तक नीतीश के साथ रहेगी जब तक उसे कोई नया विकल्प नहीं मिल जाता और वह खुद को उसी विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। यह रणनीति है, जो समय आने पर चिराग को मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचा सकती है।

चिराग पासवान अब सिर्फ एक नेता नहीं, बल्कि संभावनाओं के प्रतीक बन चुके हैं। वह रिजर्व सीट से नहीं, बल्कि सामान्य विधानसभा सीट से चुनाव लड़ने की बात कर रहे हैं। यह उनका आत्मविश्वास है, जो उन्हें बिहार के राजनीतिक केंद्र में खड़ा करता है। केंद्रीय मंत्री रहते हुए भी अगर वह विधानसभा चुनाव लड़ने की बात कर रहे हैं, तो यह संकेत है कि वे दिल्ली से पटना की ओर एक नई राजनीतिक यात्रा शुरू करने जा रहे हैं। यह यात्रा सिर्फ उनके लिए नहीं, बल्कि पासवान समुदाय और भाजपा के लिए भी नए राजनीतिक समीकरण रच सकती है। भाजपा के भीतर भी एक लंबे समय से नीतीश कुमार के विकल्प की तलाश चल रही है। सम्राट चौधरी जैसे नेता भी सामने लाए गए लेकिन वे नीतीश की लव-कुश सोशल इंजीनियरिंग को चुनौती देने में सक्षम नहीं रहे। ऐसे में चिराग पासवान न सिर्फ पासवान समुदाय के वोटों को साध सकते हैं, बल्कि पिछड़ा और दलित वर्ग में भी एक नई उम्मीद जगा सकते हैं। उनकी राष्ट्रीय पहचान, युवा चेहरा और भाजपा के साथ मजबूत रिश्ते उन्हें उस मुकाम पर ले जा सकते हैं जहां से वे मुख्यमंत्री पद के दावेदार के रूप में खड़े हो सकते हैं।

अब सवाल यह उठता है कि अगर भाजपा चिराग को मुख्यमंत्री पद देने के बदले उनकी पार्टी का विलय चाहती है तो क्या चिराग इसके लिए तैयार होंगे? राजनीति में ऐसे विलय पहले भी हुए हैं और अगर चिराग के सामने मुख्यमंत्री बनने का मौका हो, तो यह त्याग उन्हें मंजूर भी हो सकता है। वैसे भी, चिराग पहले ही खुद को मोदी का 'हनुमान' कह चुके हैं, और उनके साथ अपनी निष्ठा को बार-बार साबित भी कर चुके हैं। इसलिए भाजपा अगर सही समय पर यह प्रस्ताव लेकर आती है, तो चिराग भी पीछे नहीं हटेंगे। हालांकि भाजपा के भीतर भी यह चिंता हो सकती है कि चिराग जैसे नेता को आगे करने से बाकी सहयोगी दलों को क्या संदेश जाएगा। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि बिहार में भाजपा को एक ऐसा चेहरा चाहिए जो युवाओं, दलितों और मध्यम वर्ग को एक साथ जोड़े। और इस भूमिका में चिराग पासवान एकमात्र स्वाभाविक नेता के रूप में सामने आते हैं। अगर भाजपा नहीं भी तैयार होती है, तो यह भी संभव है कि प्रशांत किशोर जैसे रणनीतिकार, जो अक्सर चिराग की तारीफ करते हैं, भविष्य में उनके समर्थन में एक नया मोर्चा तैयार करें। राजनीति में मौके बार-बार नहीं आते। यह चिराग पासवान के लिए एक निर्णायक क्षण है। अगर वे सही रणनीति अपनाते हैं, भाजपा के साथ संतुलन साधते हैं और जनता में अपनी मजबूत छवि गढ़ने में कामयाब होते हैं, तो वह दिन दूर नहीं जब बिहार की सत्ता का केंद्र चिराग बन जाएं। यह सपना सिर्फ चिराग का नहीं, राम विलास पासवान के अधूरे स्वप्नों की पूर्णता भी होगी, जो शायद बेटे की आंखों में अब साकार होने के लिए तैयार है।●

प्रशांत किशोर